अथमनोमतिखंडनप्रारंभः

SHRI AILAK

मंदिर
श्रीजिनेंद्र
पूजाविधान
पूजनसामग्री
पूजक
सभा

प्रस्तावना॰

सज्जन सम्यग् ज्ञानी जैनी दिगंबरी आमनायका भाइयोंसें लघुता पूर्वक कहताहूं कि पूर्व परंपरायसें केवलीके बचन अनुसार गणधरादिक आचार्य मुनिधर्म दोय प्रकार प्ररूपना करीहै तामे ग्रहस्तका धर्म दान पूजा मंदिर प्रतिष्ठादि आचार्यके हुकुम प्रमाण करना ऐसा उपदेश भोगी ग्रहस्तीकूं करना कह्याहै मुनीकूं सर्वथा प्रकार भोगादिक-करना बरज्याहै॰ भावार्थ जिसका जैसा दर्जा उसकूं वैसा करना जोगहै इस पंचमा काल मैं जैनी दिगंबरी आमनायमें केताक ग्रहस्ती भोगी पूर्वआचार्यका वचनाकूं नहीं मानकरके पूजन विधानादिक आपनी मनकल्पनासें यद्दा तद्दा कल्पित करेहै बहुरि कोई भद्रस्रावग पूर्व आचार्य के बचन अनुसार पूजाविधान दीप धूप कपूरादिक करैहै॰ तासें मनो मति वैर विरोध करैहै वाकी निवृत्ती इस पुस्तकके पढणें वाचणेसें होयगी॰ वास्ते इस पुस्तककूं वांचना पढना समजना समजावना उपदेस देना जोगहै इति ॥ ॥

ॐनमःसिद्धेभ्यः॥ ॥अथमनोमतिखंडनलिख्यते॥ ॥दो
हा॥ ॥वंदूंमैंअरिहंतपद नमूंसिद्धसिवराय॥ सूरीपाठकसा
धुके चरणनमूंसुखदाय॥१॥वंदूंश्रीजिनवानिकूं वंदूंश्रीजि
नधर्म॥जिनप्रतिमाजिनभुवनिकूं नमूंहरणवसुकर्म॥२॥मं
गलइहिविधिकरतही होतविघ्नसबनासि॥सुखसंपतिसहु
मिलनहै होतसुबुद्धिप्रकासि॥३॥ आगेप्रथमहीपूजाविधा
नकास्वरूपलिखेहैं॥ ॥गाथा॥ जिणसिद्धिसूरिपाठयसाहूणं
जंसुयस्सविहवेणकिरईविविधपूज्जणवियाणतपूजनविहाणं
॥ टीका ॥जिनसिद्धसूर्युपाध्यायसाधूनांयनश्रुतस्यविभवब
लेनक्रियतेविविधापूजासाविज्ञानिहितंपूजनाविधानं॥ अर्थ॥ १
जोअरहंतसिद्धआचार्यउपाध्यायसाधुकी बहुरिश्रुतकाहियेः

जिनागमकी अपना विभवका बलकरिके विविधा जो अष्टप्रकार तथा इकवीसप्रकार आदि नानाप्रकारकरि पूजा करैहै सो निश्चयनैं पूजाविधानकूं जानना ॥ इहां कोई पूंछे ॥ अष्टप्रकारकी पूजा तो प्रसिद्ध है अर इकवीसप्रकारकी आदि बहुप्रकारकी स्फनी नाहीं सो कैसै है ॥ ताका उत्तर ॥ श्रीउमास्वामीनै श्रावगाचारकिया है तामैं पूजाप्रकरण है तिहां लिखा है ॥ तदुक्तं ॥ काव्यम् ॥ स्नानैर्विलेपनविभूषितपुष्पवासदीपः प्रधूपफलतंदुलपत्रपूंगैः ॥ नैवेद्यवारिवसनैश्चमरातपत्रवादित्रगीतनृतस्वस्तिककोषदूर्वा ॥ ॥ १ ॥ इत्येकविंशतिविधैं जिनराजपूजा चान्यतप्रियंतदाहि भाववसेनयोज्यम् ॥ इहां ऐसे कह्या है श्रीजिनराजकी पूजाकी विधि इकवीसविधिनैं तथा इससिवाइ औरभी अपनाभावके वशिकरि

भलीपूजाकरनी सोकौनसीविधिहै जिनमूर्तिका एककलशआ
दिएकहजारआठकलशनिकै जलादिनैंस्नानकरावना सोस्नानना
मपूजाहै ॥१॥ भावार्थ ॥एककलशतथानवकलशनैंस्नानजि
नबिंबकानोंनित्यपूजाविषेकह्याहैं ॥ बहुरिजोजिनमूर्त्तिकानि
त्यप्रतिएककलशतैंभीस्नाननहींकरैहै तो ताकै नित्यप्रतिकल
हकाल औरकुलकाविनाश तथा पुरकानाशआदिजानना ऐसे
हींनितासदैवरहैहै सोजिनसंहिताकादशमापरिच्छेदविषेकह्या
है॥ तदुक्तं ॥श्रीजिनसंहितायांभगवदेकसंधिविरचित ॥ ॥
श्लोक॥ ॥ नित्यपूजाविधानेतुत्रिजगत्स्वामिनःप्रभोः॥कलशे
नैककेनापिस्नापनंनविगृह्यते॥१॥ विदध्याकलहंकालस्थिन-
स्छेदंसमाचरेत् ॥ कुलविनाशयेद्भिन्नःपुराणंनाशयेत्पुरम् ॥२

बहुरिऔरअधिककलशनितैंस्नानकावर्णननैमित्ततैंकरैहैतो
महापुण्यकाकारणभूतहै ॥ बहुरिजिनमूर्तिकेंचरणकमलऊप
रिचंदनकपूरअगरुकेसरआदिसुगंधद्रव्यकूंजलमिश्रितघ
सिकरिताकाविलेपनकरिशोभितकरैहै ॥ भावार्थ ॥ ताकेच
रणकमलकेंचंदनादिद्रव्यलगावैहै सोदूसरीलेपनपूजाहै ॥ इहां
कोईकहै ॥ यहअर्थकैसेलिखायतौकहिनानसंभवै ॥ बहुरिदो
डरमल्लकृतश्रावगाचारविषेंतौजिनबिंबकेकेसरचंदनादीकाल
गावनानिषेध्याहै ॥ बहुरिवणारसिदासकृत विलासविषें ऐसैकु
हिहै ॥ दोहा ॥ जिनप्रतिमाजिनसारसी कहीजिनागममांहिं ॥ जोको
हुदूषणलगैवंदनीकसोनाहिं ॥ १ ॥ औरकहैकिअब्रह्मनीभाडकेशरच
र्चितप्रतिमाकुंवंदपूजेमानाहिहै ॥ ताकीकेशरधोयकरिवंदैपूजैहै ॥ औ

रकेसरकेलगानेमैप्रतिमासरागीहोयजायहैं ॥ वीतरागताताकीमिट-
जायहैंअपूज्यहीहजायहै यातैकेसरचंदनलगावना कहांलिखाहै ॥ ता
काउत्तर ॥ प्रथमतौजिनबिंबकेचरणकमलकेकेसरचंदनादिलगावनेका
वर्णनपूर्वोक्तश्लोकविषैंहीश्रीउमास्वामिनेकह्याहै सोदोडरमलकेवच
नीकुंमानिकरिउमास्वामिकेवचनमिथ्याकह्योजायनहीं ॥ बहुरिइसी-
ग्रंथविषैंआगेविस्तारकरिश्रीवसुनंदीभीकहैगा तहांतैजानना बहुरिखु
मनैकहै बणारसीनेदोहाकह्यासोकेशरकेलगावनेतेदूषणकोनिमि
त्तकह्याहै ॥ जिनप्रतिमाजिनसारखी जिनागममेंकहीहै ॥ तोभीतामैंको
ईदूषणपडैतौवंदनीकनाहीहै ॥ सोयाकेदूषणआरहै केसरकालगाव
नेकानाहीहै तबकेसरकोइपूछिहमतोकेसरकादूषणजानैहैं ॥ तुम-
नेऔरकौनसेदूषणकह्यसोकहो ॥ ताकूंकहियेहै ॥ शिल्पशा

स्त्रविषे जिनप्रतिमाविषें दूषणलिखेहैं सोदूषणटालिप्रतिमा
करणी बहुरिजामैंकाएकभीदूषणलगैतोसो प्रतिमापूजनीक
नाहीहै॥ ऐसैकह्याहैं ॥ बहुरिशिल्पकूंनमानोगेतोजिन प्रति
ष्ठापाठविषेंभीजिनप्रतिमाकानिरूपणहै ताहांभीसदोषीकप्र
तिमाकूं पूजनवर्ज्याहै सोलिखियेहै॥ जोजिनबिंबशुभलक्षण
करिसंयुक्त अरदृष्टिकरिहीनहै तो नशोभैहै॥ यानेंदृष्टीप्रकाश
करनी॥ भावार्थ ॥ ताकीनेत्रोन्मीलनक्रिया प्रतिष्ठाशास्त्रोक्तवि
धितैंकरनी॥ बहुरिजामेंभीजाकानेत्रकीवांकीदृष्टीहोयतोपूजक
पुरुषकाअर्थनाशअरविरोध बहुरिभयइन कूंकरैहै॥ बहुरिजो
प्रतिमाकीनीचिदृष्टीहोयतोपूजकका पुत्रनाशकरैहै॥ बहुरिजिन
बिंबकी उर्ध्वदृष्टीहोयतोपूजककीस्त्रीकामरणकरैहै॥ अरताके

शोक उद्वेगसंतापकूं करै है ॥ अर ताका धनकूं सदा क्षय करै है ॥ ब
हुरि जाकी शांतदृष्टि होय सो प्रतिमा पूजककै सौभाग्यकै अर पु
त्रकै अर शांति वृद्धिके दानकै अर्थ है ॥ यातैं सदोषीक प्रतिमा नकू
रणी यातैं करै तो अशुभ ना होय है ॥ बहुरि जो जिनबिंबकूं रौद्ररूप करै है
ताके प्रभुताका नाश होय है ॥ अर जो जिनमूर्तिकूं कृशांगी जो दुर्बली करै
है पुष्ट नाहीं करै है ता पूजकका द्रव्य क्षय होय है ॥ बहुरि जो संक्षिप्तांगी
प्रतिमा पूजकका क्षय करै है ॥ बहुरि जो छिद्रयुक्त प्रतिमा पूजककूं दुष
दायनी होय है ॥ बहुरि नेत्र विना प्रतिमा नेत्रकी नाशक होय है ॥ इहां ऐसा वर
त्तनेत्र न जानना ॥ नेत्रका संपूर्ण चिन्ह विना प्रतिमाकूं पूजै ताकै
नेत्र फुटै है ॥ बहुरि मुखकरि हीण जिनमूर्तिकूं पूजै ताकूं अभोग
की प्राप्ति [illegible] है ॥ भावार्थ ॥ ताकै भोजनादिक भोगसामग्री श्रेष्ठक

दापिनमिलैहैं ॥ सदैवविभुक्षिलततारहैहैं ॥ बहुरिबिडापदकोप्र-
तिमाकूंपूजैताकूंरागव्याधिकरैहैं ॥ बहुरिजाकाल्हृदयस्थलकृश
होयऐसीप्रतिमापूजकपुरुषांकेल्हृद्रोगकूंकरैहैं ॥ सोल्हृद्रोगवैद्यक
शास्त्रमें लिखाहैं ॥ बहुरिअंगहीनप्रतिमापुत्रकूंहणैहै ॥ बहुरि-
दुर्बलीजंघाकीप्रतिमाराजपदकूंनाशैहै ॥ बहुरिपादहीनप्रतिमा
जनकहियेकुटुंबादिजनकू हणैहैं ॥ बहुरिकटिहीनप्रतिमाअश्वा
दिकवाहनकूं हणैहै ॥ ऐसेपूर्वोक्तप्रकारजिनमूर्तिकेविषेदूषण
कूंटालिकरिजिनप्रतिमापूजनी याते जिनप्रतिमाजिनसारखी-
जिनागममेंकहीहै तोभी पूर्वोक्तदूषणमैंसूंकोइदूषणलगे तोपू-
जनीकनाहींहैं ॥ यातेंदूषणवर्जितप्रतिमापूजनी ॥ ऐसेप्रतिष्ठापा
ठविषैलिखाहै ॥ तदुक्तंश्लोक ॥ लक्षणैरपिसंयुक्तंबिंबंदृष्टिवि-

वर्जितं ॥ नशोभतेयतस्तस्मात्कुर्यादृष्टिप्रकाशकं ॥ १ ॥ अर्थना
शंविरोधंचतिर्यग्दृष्टेभयंतदा ॥ अधस्तात्पुत्रनाशंचभार्यामरणं
मूर्द्धदृक् ॥ २ ॥ शोकमुद्वेगसंतापंसदाकुर्याधनक्षयम् ॥ शांतासौ
भाग्यपुत्रार्थेशांतिवृद्धिप्रदानकम् ॥ ३ ॥ सदोषानचकर्तव्यायः
तस्यादश्रभावहाः ॥ कुर्याद्रौद्रीप्रभोनाशंकृशांगीद्रव्यसंक्षयम्
॥ ४ ॥ संक्षिप्तांगीक्षयंकुर्यात्चिपिटीदुःखदायिनी ॥ विनेत्रानेत्र
विध्वंशीहीनवक्त्रात्वभोगिनी ॥ ५ ॥ व्याधिंमहोदरीकुर्याद्दृ
द्रोगंहृदयकृशा ॥ अंगहीनास्कंधंहन्याशुष्कजंघानरेंद्रहा ॥ ६
॥ पादहीनाजनंहन्यात्कटिहीनाचवाहनं ॥ ज्ञात्वेनंपूजयेज्जैनी
प्रतिमादोषवर्जितम् ॥ ७ ॥ बहुरि ऐसाहीवसुनंदिपाठविषै कह्या
हैं ॥ जोकेशरचर्चितप्रतिमासदोषीकहैं ग्रातैंहमवंदेपूजैनहीं

हैं॥ केसरकूंधोयकरिपूजनीककरीपूजेहैं ताकूंकहियेहै॥ जि
नमतमैंहद्दकरिनासोएकांतपक्षकादूषणआवैगा॥ बहुरिनवस
म्यक्तकानाशहोयगा॥ तबतुमाराश्रद्धानिपणाभीनरहैगा॥ या
तैंऐसेकोईमूलशास्त्रविषैनालिखानाहिहै॥ सोचंदनादिककेले
पकीप्रतिमाअपूज्यहै॥सोकहो॥ अपनेमनतैंहितोकहीनजा
य॥ बहुरितवफेरिबोला ॥ऐसेनहींतोकेंसरचंदनकालगायेंवि
नाप्रतिमाजीकूंपूजेवंदनैमैंतोदोषनाहीहै॥हमारेभावऐसाहि
हैं तुमारेभाववैसाहिहै॥ ताकूंकहियेहै ॥यहआज्ञानाहिहै॥
सोचंदनादीकेचरचेविनापूजाकरनी॥ प्रथमचदनप्रतिमाजिकें
चर्णनिकेस्नानपूर्वकलगायपीछेपूजाकरणी॥यहआचार्य्यनि
कीआज्ञाहै॥बहुरिआज्ञाकालोपवैसिवाइअन्यकहाबडादूषण

है।।यातैंआज्ञाकापालिनासोबडाविनयहै अरधर्महै।। नबफे-
रिबोला ॥चंदनलगायकरिपीछेंपूजाकरणीसोकंहाकहिहै ता
काउत्तर ॥श्रीउमास्वामिकृतश्रावगाचार्यमैंकहिहै॥ तदुक्तं ॥
प्रभातेघनसारस्यपूजाकुर्याज्जिनेशिनां॥ इतिवचनात् ॥श्रीजि
नभगवानकीप्रभातमैघनसारज्यौकर्पूरसूंपूजाकरणी॥ भावार्थ
चंदनादीकर्पूरघसिताकैलगावना॥ तथाच॥श्रीचंदनेनविनानैवपू
जाकुर्यात्कदाचनः॥ इतिवचनात् ॥चंदनकैलेपविनाकदाचित
भीपूजानकरणी ॥बहुरिइहांकर्पूरचंदनादीकूंजलधारावत् मा-
नोगेनोअरताकेपदकेविलेपनकाअर्थनहिंमानोगेतो! पूर्वोक्तविलेप
नपदकाअर्थकूंकेसेनहिंमानोगे॥यातैंविलेपनहीआवेगा॥बहु-
रिफेरिभीहइहैनो॥औरसुनौ ॥एकजिनसंहिताग्रंथहै तहां

लिखाहैकिजोकुंकुमादिसुगंधद्रव्यकेलेपकरिवर्जितजिनबिंबकेवर्णहै॥ ऐसीप्रतिमाकाजोदर्शनकरैहै सोज्ञानहीनपुरुषहै॥ बहुरिकुंकुमादिकेलेपकरिचर्चितजिनमूर्तिकेपदहैं ताकादर्शनकरैहैं॥ सोज्ञानीहै॥ बडाधर्मात्माहै तिससिवायअन्यनाहि ऐसा लिखाहै॥ तदुक्तं ॥ श्रीवसुनंदीजिनसंहितायां ॥श्लोक॥ अनर्चितपदद्वंद्वंकुंकुमादिविलेपनैः॥ बिंबंपश्यन्तिजैनेंद्रंज्ञानहीनंसउच्यते ॥१॥ पश्यतोजिनबिंबस्यचर्चितंकुंकुमादिभिः॥ पादपद्मद्वयंभव्यैतद्वयंनेवधार्मिकैः॥२॥ इतिवचनात् ॥सोइहांतोऐसा कह्याहैं॥बहुरिकेतेकिआज्ञानिकुंकुमादिचर्चितपदकीप्रतिमाकूंवंदिवैकात्यागकरैहै सोआज्ञाबाह्यहै॥ बहुरिसोजिनमूर्तिकाअरजिनशास्त्रकेवचनीकाअविनईहैं॥ तबफेरिकोईबोल्या ॥ ता-

कूं आज्ञाबाह्यअरअविनईकैसैंकहोहो ॥ वहतोनिराभरणकासेव
कहै ॥ बहुरिकेंसरकैलगिवैतैप्रतिमाविषैंसाभरणकादूषणप्रत्यक्ष
हीदीषैहै ॥ यातैंपूज्यपदनाहिहै ॥ केसरआदिगंधद्रव्यकूंधोये
हिपूज्यपदहै ॥ ताकूंकहियेहै ॥ श्रीगुरुकेवाक्यनमानिमनोकल्प-
लनकरनाभीतोआज्ञाभंगपनाभया ॥ बहुरिजिनमूर्तिकूंप्रत्यक्षदे
खिकरिताकूंनमस्कारभीनकरना ॥ तिससिवायअन्यकहाअविन
यहै ॥ बहुरिकेसरआदिगंधद्रव्यकूंधोयपूजना सोकेंसरकैलगिवै-
धोवैतैंप्रभुताजावैआवै तबयहतोबालककाखिलुनावतबातहै ॥
बहुरिजैसैंकुदेवका मठ मंदिरमैंकोहुतमाखू तथाजरदानीलकाव-
खलेजायतोदेवताकातेजभागिजायकेवल पत्थरकीमूर्तिरहिजा-
य यातैंयाकानामछोतकहैहै ॥ तथारंगास्वामिकेवैष्णव वैरागीसा

धुउडदनामाधान्यकूंदेखितहांपात्रादिककूंफोडिकरिभागिजा
य तहांउभैभीरहेनाहीं तैसैहीतुमाराकहनाभया ॥ सोकेसर
लगतेंहीप्रतिमाकीप्रभुताजातिरहे ॥ अरधोवतेंहीपीछीदोरि
आवे ॥ बहुरिकेसरआदिककेलगिवेतेंऐसाहिहोयतोप्रतिमाकी
हीएशक्तिभई ॥ अरकेसरकीअधिकशक्तिभई ॥ बहुरिऐसीहि
एपदकीप्रतिमातैंपापभीकटैनाहीं ॥ तौ तुमारा दर्शनपूजना
दिककावृथाहीश्रमभया ॥ बहुरिएकऔरभीसुनोप्रतिमातोज
डस्वरूपीहे ॥ अरप्रभुकानिजद्रव्यचैतन्यरूपीहे ॥ सोकेसरका-
चर्चिवैकरिप्रभूसरागीकैसेहोयहै ॥ जडकेकेसरलगेचैतन्यकूं
दूषणलगैऐसामाननाभीवृथाभ्रमरूपहें ॥ तदुक्तं ॥ वादिरा
जाक्तंएकीभावेमूल ॥ काव्यं वृत्तिर्वाचामपरसदृशीनत्वमन्येन

तुल्यस्तुल्युद्राशकककमिवनलेन्वस्यमीनः क्रमंतेमेवभुवंतदपिभ
गवन्नभक्तिपीयूषपुष्टा ॥ तेभव्यानामभिमनफलापारिजाताभ-
वंति ॥ १॥ अथवार्ताकीभाषा ॥ काव्यछंद ॥ वचनजालजडरू
पअापचिन्मूंरतजांहीं ॥ तातेस्तुतिआलापनाहिंपहुंचेतुमतां
हीं॥ यातेंजडरूपवस्तुचैतन्यकूंनपहुंचेहै वहुरिजोकेसरआदि
गंधद्रव्यकालगावनाहींनिषेधहै ॥ ऐसाकहोगेतोशिल्पकारकी
कीनीप्रतिमातोपूज्यहोयगा॥ अरप्रतिष्ठितप्रतिमा अपूज्यहो
यगा ॥ यातैंऐसाहैनाहि शास्त्रनिमैतोअप्रतिष्ठितप्रतिमापूज्य
हैनाहिं प्रतिष्ठाभयेंही पूज्यहैं॥ तदुक्तं ॥ प्रतिष्ठापाठे॥ श्लोकः
जिनेंद्राणांप्रतीमानापंचैकृत प्रतिष्ठयत् ॥ जिनभाषितमंत्रेणवं
दनीयातदाभवेत् ॥ १॥ यद्विंबंलक्षणैर्युक्तंशिल्पिशास्त्रानिवे-

दितम् ॥ सांगोपांगं यथा युक्त्या पूजनीयं प्रतिष्ठितम् ॥ २ ॥ यातैं प्रतिष्ठीप्रतिमा पूज्य है ॥ सो प्रतिष्ठा चंदन केसर आदि सुगंध द्रव्य कूं घसि करि जिन प्रतिमाकै लगाये विना कदापि होय नाहीं यह नियम है ॥ यातें जिसकै लगावनेतें जिनबिंबमैं पूज्य पद आवै तिसका निषेध कैसै करना ॥ अर जो करै है सो आज्ञावाह्य है ॥ बहुरि इहां कहोगे कै यह तो प्रतिष्ठाके समयकी रीति है ॥ पीछै ताधोय डारै है सदैव तो रहे नाहि है ॥ ताकूं कहिये है नित्यपूजा विषै तथा नैमित्त पूजा विषैं अभिषेक तथा महाभिषेक होय ताहां भी पंचामृतका अभिषेक विषैं अंतमैं जिन मूर्तिकै केसर आदि सुगंध द्रव्यका उवटणा होय है जाकै केसर लगानेमैं कहा दूषण है ॥ बहुरि सो भी धुपजाय ऐसा कै होगे तो एक अहि छत्रपुरका राजा वसुपाल नें अपने वचन करि अ-

पनाकराया ॥ श्रीपार्श्वनाथकासहस्त्रकूटनामामंदिरविषैंश्रीपा
र्श्वनाथजीकामूलबिंबकैलेपचढावनेकीआज्ञाकरी ॥ बहुरितब
चित्रकारराजाकीआज्ञानैंतिसजिनमूर्तिकैलेपकिया ॥ सोचित्र
कारमांसभक्षीहुताताते लेपरात्रीविषैंरह्यानाहीं ॥ तिसबिंबतैं
सीघ्रहीछूटीकरि पृथ्वीविषैंपडालगारह्यानाहीं तबफेरिदूसरे
दिनलेपचढाया फेरिरात्रीमैंगिरगया ॥ ऐसैकेतीकवार श्रीपार्श्व
नाथकीप्रतिमाकैचित्रकारनैंलेपकिया सोरात्रिमैछूटग्या ॥ तबरा
जाआदिसर्वखेदखिन्नभये ॥ बहुरितबएकचित्रकारनैंश्रीजिनेंद्र
कीदिव्यप्रतिमाकौंलेपचढानेकाकार्यकीसिद्धिनहोय तबलगमां
सादिकभक्षणकात्यागहैं ॥ ऐसालेपपीछैतिसप्रतिमाकैलेपकी
या सोठहिरगया तब वहराजातिसचित्रकारकूं वस्त्राभरणादि

कत्तैंपूजिकरिस्मनिहर्षितभया॥ ऐसैआराधनाकथा कोशशास्त्र विषैंकह्याहै॥ तदुक्तं॥ ॥श्लोक॥ ॥अहिछत्रपुरेराजा वसुपालो विचक्षणः॥ श्रीमज्जैनमतेभक्तोवसुमत्याभिधाप्रिया॥१॥ तेनश्री वसुपालेनकारितंभुवनोत्तमम्॥ लसत्सहस्रकूटश्रीजिनेंद्रभवनं शुभे॥२॥ श्रीमत्पार्श्वजिनेंद्रस्यप्रतिमापापनाशिनी॥ तत्रास्थैवै कदातस्याभूपतेर्वचनेनच॥३॥ दिनेलेपंदधत्युच्चैर्लेपकाराकला-न्विनाः॥ मांसादिसेवनास्तेतुनतोरात्रौसलेपकः॥४॥ पतत्यवहि-तौसीघ्रंकदर्थ्यांनारिवलाभृशम्॥ एवंचकर्तिविहारैःस्वदास्विन्नोनृ पादिके॥५॥ तदैकेनपरिज्ञात्वालेपकारेणधीमता॥ देवता ह्र ष्विता दिव्याजिनेंद्रमतिमाहिताम्॥६॥ कार्यसिद्धिर्भवेद्यावत्तावत्कालंस निश्चलम्॥ अवग्रहंसमादायमांसादिमुनिपार्श्वतः॥७॥ तस्यांले

पङ्कतस्तेनसलेपंसंस्थितंतदा ॥ कार्यसिद्धिर्भवेत्स्येवंप्राणिनांव्रत-
शालिनम् ॥८॥ तदासौवस्त्रकपालेन भूभुजापरयामुदा ॥ नानावस्त्रा
स्त्रवणाद्यैर्पूजितोलेपकारकः ॥९॥ इत्यादिकवर्णनहै सोइहांक
होकिंचित्केसरचंदनादिककेलगावनेकीकहावातनहैं ॥ बहुरिजिसमू
र्त्तिकैजलगंधपुष्पकास्पर्शभीनहोयतोवहमूर्त्तिअपूज्यरहीजान-
ना ॥ ताकूंपूज्यनहीजानना ॥ इहांफेरिकोईकहै ॥ श्रीजिनमूर्त्ति-
केलेपकल्याताश्वेतांबरआंगीरचैहै ताकानिषेधक्यूंकरंना यह-
भीतहूतनहीहै ॥यानैतुमभीनित्यआंगीरचवैकरो ॥ ताकाउत्तर ॥
श्वेतांबरोक्तकथनउनहीकैमतमैहै॥ यहतोश्रीदिगंबरोक्तकथनहै
॥सोउनकीसमानताकैसैहोय॥ तथासमानताकाभयकरिवचन-
बांधकीयेजायनाहीं ऐसैतोश्वेतांबरोक्तरीतिनतथा वैष्णवोक्तरी-

ति तथा शैवोक्तरीति मिलती दिगंबरमतमें भी ऋौर घनी होदीखै है ताकूं कैसे तजिये ॥ देवपूजा अभिषेक प्रायश्चित्त देवोपकरण तथा शास्त्र गुरुआदितीर्थयात्रा प्रतिष्ठा उपवीतिका तथा आदिपुराणोक्त एकसोंआठक्रिया आदिनाभांविधिके विधानमें घणीही रीतिअन्यमतसें मिलतहै ॥ सोकैसे निषेधहै ॥ यातें आचार्यनिके वचनप्रमाणकरि श्रद्धाज्ञानाचरणपालिना सोही सारहै ॥ बहुरि प्रतिमाकी प्रतिष्ठाभयेपीछे पूजनीकहोय ॥ सोसंघहितथाप्रतिष्ठाचार्य प्रतिमाके-फेरिचंदनादिसुगंधद्रव्यका प्रतिमाके ललाटविषैं तिलक करैतो चरणनकैकेसरकालगानेंकानिषेधकरणावृथाहै ॥ याकावर्णन आगेंविस्तारतैंहोयगा ॥ यातैंहठ्याहठकरणा एकांतपक्षकाकारणहै ॥ औरघणेहीशास्त्रमैं तथा पूजापाठमें जिनमूर्तिके चरणकमलकै चंदनादि

गंधद्रव्यकाविलेपनलगावनाकह्याहैं सोकिंचित् इहांलिखियेहैं॥
॥ तदुक्तं ॥श्रीवसुनंदीकृतप्रतिष्ठापाठे॥ ॥श्लोकः॥ ॥कर्पूरै-
लालवंगादिद्रव्यमिश्रितचंदनैः॥सौगंधवासिताशेषदिग्मुखैश्चर्च्च-
येज्जिनम्॥१॥इहांभीकपूरइलायचीलवंग बहुरिआदिशब्दतैंके
सरद्रव्यकरिमिश्रितज्योचंदनादिसुगंधद्रव्यताकीसुगंधकरिसमस्त
दसूंदिशासुगंधितहोय॥ऐसासुगंधद्रव्यकरिजिनमूर्तिकूंचर्चनी
॥चर्चयामिकाअर्थतोपूजाहिहैं॥लगावनानाहिहैं॥यातैंहमदूर
हितैंपूजैंहिहैं॥ ताकाउत्तर ॥ भोहढग्राहीहो विनाशास्त्रमना
कवचनबोलिनासोजैनीकीरीतिहैनाहीं॥यहतोशास्त्रबाह्यकीरी
तिहैं॥यातैंसर्वमतमैंशास्त्रकैवाक्यानुसाररीतिहै॥तुमनेचर्चयामि
काअर्थपूजाऐसाएकांतकरिकह्यासोजिनवचनतौस्याद्वादअनेकां

तात्मकहै॥ तदुक्तं ॥स्याद्वादनायकमनेतच्चतुष्टयाहं॥यातैंचर्चया
मिकेपूजागर्भितबहुधाअर्थहै॥सोकहियेहै॥ ॥श्लोक॥ ॥लेपेचर्चसे
वनेचादौचर्चयामिइतिवदेत्॥ऐसैचर्चयामिपदलेपमैं अरसेवामैं
वर्त्तेहै॥बहुरिहेमीनाममालामैंभीचंदनादिकैतिलकतथादिपि
कादितैपूजाकानामकह्याहै॥तहांचर्चयामिकाभीएकहीअर्थलि
खाहै॥ ॥तदुक्तं॥ ॥हेमकोषे॥ ॥चंदनादितिलकटिप्पिकादी
तैंपूजाकरैताकानाम चर्चिक्यंसमालभंचर्चिस्यात्॥यातेंचर्चातथा
चर्चयामिकाअर्थपूजाविषैंतिलकविलेपनआदिहीजानना॥बहु
रिपूजानामकातथाचर्चयामिका तथाअर्चयामिकाअर्थभीशोभा-
यमान तथाआभूषिततथासंयुक्तआदिअर्थहोयहै॥जाकूंजि
सद्रव्यकरिआभूषितकरना ताकानामपूजाहै॥औरअपनीबुद्धि

तैं अन्यरूपकहिनासो अयोग्य हैं ॥ बहुरि फेरि भी हद्द है नो और
रूनिहुं ॥ उक्तंच ॥ भावसंगाहनामग्रंथे ॥ गाथा ॥ चंदनसुगंध
लेऊ जिनवरचलणेसु कुणजो भविऊ ॥ लहइ तणु विकिरियं
सहायसुपधयं विमलं ॥ १ ॥ इहां ऐसा कह्या है जो भव्यजीव चंद
नका सुगंधलेप श्रीजिनचरणनिविषैं करै है ॥ सो विक्रिय ऋद्धियुक्त
निर्मलशरीर स्वर्गमैं पावै है ॥ इहां हम पूछै है ॥ सो तुम्ह या मिका
अर्थकुं युक्तिकरि तुमनें अन्यरूप किया तो इहां लेपशब्दका कहा
करोगे ॥ यातैं असत्यकी दोरियो रीही जाननां ॥ बहुरि पद्मनंदी स्वा·
मीनैं भी पद्मनंदीपच्चीसी विषें पूजाप्रकरणमैं ऐसैं ही कही है ॥ तदु
क्तंकाव्यं ॥ यद्दद्वचो जिनपते भवतापहारी नाहंसु शीतलमयी हृभ·
वामिनहृत्त ॥ कर्पूरचंदनमिली वमयार्पितंसत्[illegible]पादपंकजस

माश्रयणंकरोति ॥ यहुतोमूलहे ॥ बहुरियाकीटीकाऐसैहै ॥ नदुक्तं
॥टीकाबा०॥ जिनपनेवचः यहत यहशंभवतापहारीसकशीतलमपित
हत जिनवचनवत् अर्हन्भवामिइनिहेतोः मयार्पितंकर्पूरचंदनंस-
न् तस्यश्रीजिनस्यपादपंकजंचरणकमलसंसम्यक् आश्रयणंकरो
ति अनेनअनेनचंदनंप्रक्षिप्यतेदीपकांदीयते ॥१॥ इतिटीका ॥ इहां
भीचरणनिकैं टीपिकीहीदेना तयाछापनालिखाहे ॥ बहुरिफेरि
भीसकनो धर्मकीर्त्तिकृतनंदीश्वरस्यजिनबिंबकी पूजाविषैंभीजि
नमूर्त्तिकेचरणयुगलपैंगंधद्रव्यकालेपहीलगावनाकह्याहे ॥ नदुक्तं
काव्यं ॥ कर्पूरकुंकुमरसेनसकचंदनेनयेजैनपादयुगलंपरिलेपयंति
॥ तिष्ठंतितेभविजनाःसकसकगंधगंधा दिव्यांगनापरिवृतासततंवसं-
ति ॥१॥ इहांऐसेकह्याहैं ॥ जोभव्यजीवकर्पूरकेशरकारसकरिब-

हुरिभलावावनचंदनकारसकरिश्रीजैनबिंबजोप्रतिमाकेचरणयुग
लकैऊपरिवहुतंनृफलेपकरैहै सोसुगंधगंधकरियुक्तशरीरकोंधा
रिबहुरिदिव्यांगनाजोदेवांगनादीअप्सराकरिआवृतहोयदेवलोक
मैंसागरांननिरंतरवसैहै बहुरिमुक्तावलिपूजाविषैंभीगंधकाप्रभु
कैचरणनिकैंविलेपनहिंकह्याहैं॥ तदुक्तकाव्य ॥सद्गंधसारघन
सारविलेपनैश्चगंधागतालिकुलजाततरूप्रकांडे॥उद्यापनायजि
नपादसरोजयुग्मंमुक्तावलिव्रतपरस्ययजेतिभक्त्या॥ १॥ बहुरि
श्रीसिद्धचक्रकीपूजाकाविधानमैंश्रीसिद्धचक्रकाउहर्तनकेसरकर्पू
रअरसुगंधचंदलकारसतेंविलेपनलगावनाकह्याहैं॥ तदुक्तं श्री
पालचरित्रे॥ ॥श्लोक॥ ॥मिश्रकुंकुमकर्पूरसगंधीचंदनद्रवैः॥ हे

रोहो॥ उक्तंच काव्यं ॥ देवेंद्रनागेंद्रनरेंद्रवंद्यासंभिनपदान्शोभितसारवर्णान्॥दुग्धादिसंस्पर्द्धगुणैर्जलौधैर्जिनेंद्रसिद्धान्तपतीन्यजेहम्॥१॥ इत्यादिअष्टद्रव्यकापाठहै॥सोनरेंद्रसेनभट्टारककृतप्रतिष्ठापाठकीयहपूजाहै॥सोनिसहिपाठमें पूजा औरदूसरीकहिहैं॥ तामैभीगंधद्रव्यकोचढावनातोविलेपनकरिचढावनाकह्याहै॥ तदुक्तं काव्य ॥ कास्मीरपंकहरिचंदनसारसांद्रनिस्पंदनाभिरुचिनेनविलेपनेन॥ अव्याजिसौरभितनो प्रतिमाजिनस्यसंचर्च्चयामिभवदुःखविनाशनाय॥१॥ इहांभीकेसरआदिकालेपहीलगावनाकह्याहै॥वहुरिप्रभाकरसेनकृतप्रतिष्ठापाठमें ऐसाहिकह्याहै॥ तदुक्तं॥ यश्चंदनेननवकुंकुमयोर्जिनस्यकर्पूररेणासमतुलंपत्तिजेनदेहं॥ इत्यादि ॥इहांजिनदेहकैसर्वांगचंदनादिसुगंधद्रव्यकालेपनकरिना

कह्याहैं॥ बहुरिश्रीआशाधरकृतप्रतिष्ठापाठकीपूजावसरमैंभीले
पहीकह्याहैं॥ तदुक्तंकाव्यं॥ काश्मीरकृष्णागरुगंधसाराकर्पूर
योरस्त्यविलेपनेन॥ निस्सर्गसौरभ्यगुणोल्बणानांसंचर्चयाम्यंह्रि
युगंजनानां॥ इहांभीविलेपनहीलगावनाकह्याहै॥ बहुरिश्रीयोगीं
द्रदेवकृतश्रावगाचारकीपूजाप्रकर्णमैंभीगंधकाचर्चनाहीकह्या-
हैं॥ तदुक्तंप्राकृतदोधक॥ जोजिणचंदनचच्चइयेइतिच॥ बहुरि
पूजासारनामाजिनसंहिताविषैंभीपूजावसरमैंगंधपूजामैंविले
पनहीकरनाकह्याहैं॥ तदुक्तं॥ पूजासारे॥ काव्यछंद॥ क्षौद्रैः
कर्पूरमिश्रैर्बहलपरिमलाकृष्टभृंगांगनानामोदैःस्वर्गापवर्गफल-
ममलमतंचंदनक्ष्मारुहाणां॥ नैकल्पंनैतिशैत्यंप्रथयतुभनलेव्या-
मुग्धद्रिहिंगंनानांगांधैसंबंधनीयंत्रिजगदधिपतेपादमापादयामिं॥

इहांभीताकेचरणनिकैंहिलगावनाकह्याहैं॥ बहुरिदुतीय पूजा वि
धानमेंहिऐसेकह्याहैं॥ तदुक्तं ॥ पूजासारकाव्य ।समृद्धयभक्त्या
परयाविशुद्धयाकर्पूरसंमिश्रितचंदनेन॥ जिनस्यदेवासुरपूजितस्य
सत्लेपनंचारुकरोमियुक्त्यै॥१॥ उँह्रांन्हः सर्वकर्मनविलेपनरहितपवि
त्रायनमः॥उहत्तनं इहांभीमुक्तिकैअर्थपूजकपुरुषांनैंजिनप्रतिमाकै
चंदनादिकसुगंधद्रव्यकाविलेपनहीकह्याहै॥ बहुरिभगवदेक सं-
धिकृतजिनसंहिताविषैंभीगंधपूजाकाश्लोकमेंभीभगवानकेचरण
युग्मकेगंधकाविलेपनहीलगावनाकह्याहैं॥ तदुक्तं ॥ॐचंदनेनक
र्पूरमिश्रणसुगंधिनांव्यालिंपामोजिनस्यांन्हौंनीलपाधीश्वरार्चितौ॥१
॥बहुरित्रिवर्णाचारविषैं ऐसालिखाहै॥सोपूजकपुरुषजिनबिंबके
चरणनिकेगंधलगावैसोताकास्पर्शितगंधकाआपकेअंगकेतिलक

करिबहुरियज्ञोपवीतनिकाआदिसंयुक्तहोयकरिपीछैपूजाकरै सो
लेपकियेंविनास्पार्श्यितकेसरकैसैंहोय॥ तदुक्तं॥ ॥श्लोक॥ ॥जि
नांघ्रीचंदनैस्वस्यशरीरेलेपमाचरेत्॥यज्ञोपवीतसूत्रंचकटिमेखलया
युतम्॥१॥जिनांघ्रीस्पर्शितामालानिर्मलेकंठदेशके॥ ललाटेतिल
कंकार्यतेनैवचंदनेनच॥२॥ इहांकोईकहै ॥चर्णनिकैलगाइकेसर
माहिलीकेसरकातिलककरणासोतोनिर्माल्यहै यातैंयोग्यनाहिं॥
ताकाउत्तर ॥प्रभुकेचरणकीरजतोसदैवभक्तपुरुषांनै आपनेशीस
आदिकैविषैधारणकरणीयोग्यहै यातेंवाकैलगवैतै बडेपापकटे
हैं॥ तदुक्तं-पूजासारे॥ ॥श्लोक॥ ॥ब्रह्मघ्नोथवागोघ्नोवातस्करो
सर्वपापकृत्॥जिनांघ्रीगंधसंपर्कान्मुक्तोभवतितत्क्षणे॥१॥ इहांऐ
सालिखाहै जोब्रह्मघातीतथागोघातीतथातस्कर तथाऔर सर्व

पापकोकरिवेवालोपुरुषजिनेंद्रकेचर्णसूंमिल्योथकोगंधञ्चापकैल
गावैहैतोताके पूर्वोक्तसर्वपातककु तत्क्षणमेंछूटिजायहै ॥ यातैंपर
मपवित्रहैं ॥ थिनयसूंञ्चपणेमरुतकञ्चादिशरीरपैंधारणकरना
॥ बहुरियहवस्तुबडेपुन्यतैंमिलैहै ॥ ञ्चभाग्यपुरुषांकूं योग्यना
हिंहैं ॥ बहुरिइनिंहितैजीवनिकेनानाव्याधिभीमिटैहै ॥ सोहिञ्ची
मानतुंगाचार्यनेकहिहै ॥ तदुक्तं ॥ श्लोक ॥ उद्भूतभीषणजलो
धरभारभग्नाशोचांदशामुपगताश्च्युतजीविताशा ॥ त्वत्पादपंकज
रजोमृतदिग्धदेहा मृत्याभवंतिमकरध्वजतुल्यदेहा ॥ १ ॥ बहुरिगं
धोदककालगावनाञ्चादिकावर्णनठौर २ प्रसिद्धहै यातेंलिषियेहै
मदनसुंदरीसूंमहामुनिनैकही ॥ सिद्धचक्रकीपूजाकाचंदनञ्च
रगंधोदकञ्चरपुष्पमालादिन २ प्रतीत्तेरापतिकेरोगकीशांतिके-

अर्थभक्तिकरिलगायहु॥ तदुक्तं॥ श्लोक ॥ दिवसाष्टकपर्यंतं-
प्रपूजयनिरंतरम्॥ पूजाद्रव्यैर्जगत्सारैरष्टभेदैर्जलादिकै॥१॥न
चंदनसुगंध्यंबुस्नजोव्याधिहरास्फुटम्॥ प्रत्यहंत्वत्पतेर्भक्त्याप्र
यच्छरोगहानय॥२॥ बहुरिगंधोदकभीजिनपदकैपूर्वगंधचर्चै-
गानवैपीछैजलतैंस्नानकरावै॥जबवहजलप्रक्षाल्यकागंधोद
कनामपावैगा॥केवलप्रक्षाल्यकाजलकातौनामगंधोदकहैना
हिं॥स्नानोदककहा॥तथाअभिषेकसमयगंधयुक्तजलकैकल
शतैंस्नवनकियेंगंधोदकनामपावैहैं॥पूर्वकलशकेजलाभिषेक
कूंतौकह्याजायनाहिं॥यातैंअपनाकल्याणकेअर्थिपुरुषानैं-
तथासत्यवादिनैशास्त्रोक्तश्रद्धानकरिनाहृथ्याहिहहूनकरना॥
बहुरिजितनैजैनमतकेपूजाकेतथाप्रतिष्ठाकेशास्त्रहैं॥ तथामं

डलविधानहै तामेंसर्वमैंपूर्वोक्तप्रकारहीवर्णनहैंसोभीदेखिलेणा ॥ इहांफेरिकोईकहै ॥ इतनाइहांवादकाहैकुंकरना ॥ अपनाअपनाभावहोयसोकरो ॥ फलतोभावनिकैआधीनहै ॥ ताकाउत्तर ॥ तुमनैअपने२ भावकैआधीनकरनाकह्यासोइहांयहअर्थनहोय है ॥ करिनातोश्रीगुरुकीआज्ञाप्रमाणनैंहै ॥ अरभावअपनैंतैंहै ॥ बहुरिऐसैनहोयतौभावहीकाआधिक्यलारह्या ॥ श्रीगुरुकेवचनीकाप्रमाणकहांरह्या ॥ यातैंश्रीगुरुकेवचनकीआज्ञातैंभावलगायकरैसोफलदाताहै ॥ केवलभावतोस्वच्छंदवतहै ॥ बहुरिस्वच्छंदहैसोजिनसूत्रतैंबाह्यप्रवर्तनेवालामिथ्यादृष्टीहोयहै ॥ तदुक्तं ॥ श्रीकुंदकुंदाचार्येणकथितसूत्रप्राभृते ॥ गाथा ॥ उक्किठसिंहचरियबहुपरियम्मोयगुरुयभारोयजोविरहईसछंदंपावंगच्छोदिहोदि

मिच्छितं ॥ १ ॥ इहांऐसाहैसोमुनिहोयकरिउत्कृष्टसिंहवत्तनिर्भय
भयाआचरणकरैहैं ॥ अरबहुतपरिकर्मजोतपश्चरणादिक्रियाक·
रियुक्तहैं ॥ अरगुरुकाभावकरिबडापदरूपहैंसंघकास्वामिहै ॥ अ
साहोयफेरिभीजिनसूत्रतैंच्युतभयाचलैहै ॥ ते पापहिपावैहैं मि
थ्यात्वहीप्राप्तकरैहै यातैंशास्त्रकेवचननैंच्युतकरनासोस्वेच्छा·
चारीकीसीरीतिहै ॥ सोफलैनाहिहैं ॥ बहुरिभावकाफलभी बा·
ह्यद्रव्यकी विशुद्धिविनालगै नाहिहैं ॥ यातैंबाह्यद्रव्यकीविशु
द्धिभीआज्ञातैंहीहोयहै ॥ आज्ञाकालोपकरस्वच्छंदकैनाहिहोयहै ॥ ब
हुरिकेवलभावहिसौंकार्यहोयतौभर्तेश्वरनैंद्रव्यदीक्षालेनासंभवै
गानाहिं ॥ स्वेतांबरवनूकहिनाउपजेगा ॥ यातैबाह्यद्रव्यविशुद्धिहै
सोभावविशुद्धिकेअर्थिहै ॥ तिसतैंभावविशुद्धिकेअर्थबाह्यद्रव्य·

विशुद्धिआज्ञाप्रमाणकरना अरस्वच्छंदपनतैंयथाहिवादनकरना ॥
तबफेरिकोइकहैके ॥ इहांइतनालिखानोकोईकेसरचर्चैनाहिंनोया
कैविषेगुणनाहिंतोऔगुणभीनाहिहै चर्चोनथामतिचर्चो॥ ताका
उत्तर ॥ जोकेसरआदिगंधद्रव्यतैंचरणकमलनाहिचर्चेतिसप्रतिमा-
कादर्शनकरैसोअज्ञानीकह्याहै॥ तदुक्तं ॥ श्रीवसुनंदीजिनसंहि
तायां॥ श्लोक ॥ अनर्चितपदद्वंद्वंकुंकुमादिविलेपनैः॥ विंबं-
पश्यतिजैनेंद्रंज्ञानहीनोसउच्यते॥१॥ तथाकेशरचर्चितप्रतिमाकै
चरणसंयुक्तविंबकादर्शनकरैहैसोबडाधर्मात्माहै॥ तदुक्तं ॥ श्री-
वसुनंदीजिनसंहितायां॥ श्लोक ॥ पश्यिनोजिनविंबस्यचर्चितंकु
कुमादिभिः॥ पदपद्मद्वयंभव्यैतद्वयंनैवधार्मिकम्॥ १॥ इहांजिन
कैशरलगेचरणकीप्रतिमाकेदर्शनमैंअज्ञानपनाकह्या अरचर्चितके

दर्शनमैंज्ञानीतथाधर्मात्माकत्यानोपूजिनाकहांरत्या बहुरिव्रत कथाकोशविषैंऐसालिखाहैं॥सोज्यांपुरुषानैंअर्हंतकेचंदनकालेप कियानाहिंसोपुरुषजैसैकाहुकामहिलमंदिरविनाधोल्याकेवलचूना रहितईटकाहिहोयसोशोभैनाहि तैसैताकीशोभारहैहै॥कदापिउ ज्जलयशनाहिंपावैहै॥ अरपरघरमैंगोवरआदिकष्टसूंलायकरि लिपताफिरैहैं॥ भावार्थ ॥दास्यकर्मादिककूंकरैहै ऐसादोषहै ॥ तदुक्तं॥ श्लोक ॥नलिप्तश्चंदनेरर्हन्स्कधाद्योसच्चनस्यवै॥ अखवर्गोरै स्पंतैःपरेषांविलिपिष्यते॥१॥ बहुरिनिर्वाणकांडविषें श्रीगोमट्टस्वामिकुंवंदनाकरितिहांभीताकाविशेषणमैंकहिहैं जो गोमट्टस्वामिकूं मैंवंदामिकैसेहै जाकेऊपरिदेवताकेशरकुंकुमादि कीवृष्टीकरैहै॥ तदुक्तं॥ गाथा ॥गोमट्टदेवंवंदामिपंचसयंधणुहदेह

उच्चतंदेवाकुएंतिविठिकेसरकुंकुमाणिनस्सउवरम्मि ॥ २ ॥ या
तैंपूर्वोक्तप्रकारशास्त्रकूंदेखिकारिहहृछोरिशास्त्रोक्तश्रद्धानज्ञाना
चरणकरिना ॥ बहुरिफेरिकोईकहैं ॥ तुमनेकहिसोसत्यहै ॥ परं-
तुशास्त्रनिमैंतोजलपूजाविषेंतोगंगाकाजलअरअक्षपूजामैंमो
तीकेअक्षतअरपुष्पनिकीपूजामेकल्पवृक्षकेपुष्पअरदीपकपूजा
मैंरत्नकेदीपआदिलिखाहै सोयहभीकरनानहीकरेहैं तोआज्ञाभं
गहोयहै ॥ यातेंगंगाजलआदिपूर्वोक्तद्रव्यविनाओरसामान्यजल
तथाशालिकेतंदुलआदिकाहिकुंचहोढना ॥ शास्त्रोक्तहिमिलतव-
करना ॥ ताकाउत्तर ॥ हेभ्रातशास्त्रनिमैतोसर्वहिप्रकारकीवस्त
कहिहै ॥ यातेंजैसीजाकूंमिलैतैसीपवित्रसारवस्तुसूंपूजादिककर
ना ॥ अरश्रद्धानसर्वकाहीकरना ॥ ऐसैनाहि जोकरनाताकातोश्र-

ह्वानरारिवना ग्ररनव णिसके ताकाश्रद्धानछोरीदेना ॥ सोश्रद्धा-
नीकीरीतिनाहिंहै ॥ श्रद्धानीभाई तोश्रद्धानयुक्तहोयताकूंकहिना
सत्यहै ॥ जाकैश्रद्धाननाहीं सोश्रद्धानीकैसेकहिये ॥ यातैंश्रीउमा
स्वामिनैएक उत्कृष्टफलश्रद्धानवानकेंहीलिखाहैं ॥ आचरणकाफ
लमुख्यनलिखाहै ॥ तदुक्तंगाथा ॥ जंसकइतंकीरइ ॥ जंचणस
क्कइतंचसद्दहई ॥ सद्दहमाणोजीवोपावई अजरामरंठाणं ॥ १ ॥
यातैंअपणीशक्तिजितनीहोयसोतोआचरणकरना ॥ बहुरिजो-
अपणीशक्तिबाह्यआचरणकाश्रद्धानकरना ॥ यातैंश्रद्धानमानजी-
वहिअजरामरणस्थानजोमोक्षस्थानकूंपावैहै ॥ इहांविचारोमो
क्षगतिश्रद्धानवानकैंहिहोयहै ॥ आचरणवालातौजितनाकरैगा ति
तनाहिफललहैगा यातैंश्रद्धानहीसत्यपदार्थहै ॥ बहुरिश्रद्धानही १९

सम्यक्तकाकारणहैं॥ तदुक्तं ॥ तत्वार्थश्रद्धानंसम्यक्दर्शनमि
तिवचनात् ॥यातैंएकश्रद्धानहीकार्यकारीहै ॥ इहांहमपूंछैहैं ॥
पूर्वचतुर्थकालविषैंअनेकश्रावकश्रादिचतुर्संघभयेतामैंकोहूभी
जीवनैंकेशरजिनप्रतिमाकेलगायकरितथालताकादर्शनपूजनतैं-
नर्कश्रादिअधोगतिपाई ॥ऐसेंकिसीशास्त्रनिमैंलिखाहोयतोक
हो ॥तथयहबोल्याविनाकेसरलगानैवालातथाकेसरचर्चिवेका
निषेधनैवालाभीअधोगतिश्रादिकेदुःखपावैऐसालिखाहोय तो·
तुमहीकहो ॥ ताकूंकहियेहै ॥ भोभ्रातयहतुमनैभलीपूंछी याका
वर्णनतोपूर्वकरिहिआयेहै ॥श्रीवसुनंदीकृतजिनसंहिताकेदो·
यश्लोकनितैं चर्चिवेकाअरनाहिंचर्चिवेकातथाऔरभीकहियेहै
॥आराधनाकथाकोशशास्त्रमेंऐसालिखाहै ॥ सोश्रीमज्जिनेंद्रचं

द्रकीपूजाहैसोपापकीप्रणाशकहै ॥ अरस्वर्गमोक्षकीदातामत्य
क्षपरमागमविषेंकहीहै ॥ बहुरिऐसीपूजाकूंजोज्ञानीजनपवित्र-
होयभक्तिकरिधर्मकैहेतकरैहै ॥ सोहीएकसम्यक्दर्शनमैंविशुद्धहै ॥
भावार्थ ॥ सोहिनिर्मलसम्यक्तहै ॥ अरसोहीमहाभव्यजीवहै ॥ या
मैंसंसयनाहिहै ॥ बहुरिइसजिनपूजाजोजलगंधादिअष्टद्रव्यांतपू
जाकेनिंदकहै भावार्थ ॥ पूजाकूंनिषेदेहैं ॥ जोजलादिकास्नानमें-
आरंभहोयहैं ॥ यातैंअभिषेकनकरना ॥ अरगंधकाविलेपनलगाव-
नेमेंसरागीपणाकादूषणलगेहै ॥ यातेंगंधनलगावनाजलधारावत्
दूरितैंधाराहीदेणा ॥ इत्यादिताकानिषेधकरिताकीनिंदाकरैहैं ॥ सो
पापीहै ॥ अरनिश्चयकरिपृथ्वीविषेंनिंदकहैं ॥ बहुरिसोहीदुःखदा २०
रिद्ररोगादिकाअरदुर्गतिनिकहिये नरकआदिअधोगतिनिकाधारीहो

यहै॥ यातैंभव्यशिरोमणीजीवनिनैंजिनमूर्तिनिआदिकाजलादिकपं
चामृतवस्तुकरिअभिषेकअरअष्टप्रकारीपूजाअरताकास्तोत्रअर
नमोकारमंत्रआदिमंत्रकेजाप्यकूंप्रीतिकरिसदैवकरनाऐसैकह्या-
हैं॥ तदुक्तं॥आराधनाकथाकोशे॥ श्लोकः ॥श्रीमज्जिनेंद्रचंद्रा-
णांपूजापापप्रणाशिनी॥स्वर्गमोक्षप्रदाप्रोक्ताप्रत्यक्षंपरमागमे॥
१॥ यः करोतिसुधीर्भक्त्यापवित्रोधर्महेतवे॥सएकदर्शनेशुद्धोम
हांभव्योनसंशयः॥२॥ यस्तस्यानिंदकःपापीसनिंदोजगतिध्रुवं
॥दुःखदारिद्ररोगादिदुर्गतिंभाजनंभवेत्॥३॥स्नपनंपूजनंप्री
त्यास्तवनंजपनंतथा॥जिननामाकृतीनांचकुर्यात्भव्यमतल्लिका
॥४॥ यातैपूजाकानिषेधकअधोगतिजायहैं॥ इहांकोईकहै ॥
हमतोपूजानिंदैनाहिं पूजाकरैहै॥ ताकाउत्तर ॥पूजाविषैंपूर्वाचा

यैनैकही ॥ ताकूंनिषेधकरिविपरीतरूपकरनासोपूजाकहांहै ॥ य
हतोनिषेधाहिहैं ॥ पूजानाहिहैं ॥ बहुरिचंदनादिगंधकीधारादेणा
जलधारावत्सोपूजापाठआदिविषैंकहांलिखाहै सोभीतुमबतावो
लगावनातोपूर्वहमनैंकह्याहै ॥ बहुरिश्रीउमास्वामिनैंदशाध्याय-
सूत्रकियाहै ॥ जाकीसंस्कृतटीकाबहुतहै तामैश्रीअमृतचंदसूरिकृ
ततत्वार्थसारनामासंस्कृतटीकाहै तिहांविघ्नकरणमंतरायस्य इससू
त्रकीटीकामैंलिखिहै ॥ जोजिनपूजाकूंनिवारैहै ताकैअंतरायकर्मका
बंधहै ॥ भावार्थ ॥ जिनपूजाविषैंपुर्वरीतिकूंनिंदकरिताकालोप
करिताकानिवारणकरनासोअंतरायकर्मकाबंधहै ॥ तदुक्तं ॥ श्रीअ
मृतचंद्रिणासुक्ति ॥ श्लोक ॥ तपस्वीगुरुचैत्यानांपूजालोपप्रवर्त्तनं ॥
अनाथदीनकृपणाभिक्षारिप्रतिषेधनम् ॥ १ ॥ बंधबंधनिगंधैश्चना

सिकाछेदकीर्त्तनम् ॥ प्रमादोदेवतादत्तनैवेद्यग्रहणंतथा ॥ २ ॥ निरव
द्योपकरणंपरित्यागोवधोगिना ॥ दानभोगोपभोगादिप्रत्यूहकरणं
तथा ॥ ३ ॥ ज्ञानस्यप्रतिषेधश्चधर्मविघ्नकृतिस्तथा ॥ इत्येवमंतरा-
यस्यभवंत्यास्रवहेतवः ॥ ४ ॥ इत्यादिकवर्णनआयाहै ॥ यातेंजिना
गममेंतोऐसेकह्याहै ॥ अरतुह्मारापूर्वोक्तकहिनाहैसोविपर्ययरूप-
है ॥ सोकैसेहै ॥ बहुरिहमपूछै ॥ तुमविषैकेतेक साधर्मीदृढश्रद्धा
नीभाईकैऐसात्यागहै ॥ जोजिनमंदिरमेंकेसरआदिसंधकरिचर्चि-
तजिनमूर्त्तिविराजैतिसकादर्शनवंदनापूजाकरैहैंनाहीं ॥ धोयांपीछे
दर्शनादिसर्वकरैहै सोइहांपूछियहै ॥ यहवर्णनकिसीजिनशास्त्र-
निमैंलिखाहै ॥ जाकाश्लोकगाथाआदिकहो यातैहमकूंभीश्रद्धानहो-
य ॥ तथात्यागनातोमिथ्यात्वकाअरपंचपापकाकह्याहै ॥ कोईजिन

दर्शनआदिशुभोपयोगरूपीजिनधर्मकात्यागकरनातोहैनाहीं।।जो
दर्शनपूजनतीर्थयात्राआदिकात्यागकरना।।यहरीतितोदंडियाआ·
दिअन्यमतिकीहै।।यातैंमुनिभीतीर्थयात्राआदिशुभोपयोगचलाय
करिकरैहैं।।औरश्रावगभीपरिग्रहप्रमाणमैं।।तथादिग्व्रत देशव्रतमैं
तीर्थयात्रादर्शनपूजनआदिकात्यागनाहींकरैहै।।बहुरिमर्यादाशि·
वायक्षेत्रमैंभीजायहै।।धर्मकेअर्थत्यागकहींभीनाहींकह्याहैं।।बहु
रिजिह्वाअसत्यकात्यागकिया अरधर्मकार्यमैं तथापरोपकारमैंअ
सत्यभीबोलनाकह्याहै।।औरधर्मकेअर्थपूर्वत्यागकाभंगभीकरना।
बहुरिपीछैप्रायश्चित्तलेयशुद्धहोणा।।ऐसाभीकरनाकारणकैनिमि
त्ततैंविष्णुकुमारवतहै।।सोइहांहमपूछैहै।।पूर्वजोतुमारेयहप्रतिज्ञा
हुतीसोजिनदर्शनविनाहमारेभोजनकात्यागहै।।बहुरिकहींनमिलै

तोछहुरसमैंतैंशक्तिमाफिकरसकूंछोरिभोजनकरना वहुरिपीछै समुऊफेरिघणीआई॥ तबकेसरचर्चितप्रतिमाकादर्शनकात्यागकी या अरमस्तकचैत्यालयराखिवैमैंअविनयकाबडापापजाणिनराख्या ॥तबैइसीक्षेत्रमैंतथापरक्षेत्रमैंएकमंदिरहोयतिहांजिनमूर्तिमैंके सरकादूषणलगाया ताका दर्शनविनाहीनित्यकोईकरसकूंछोरीभो जनकरना सोइहांतुमारेत्यागभंगभयाकिनाहिंसोकहो॥ जोदर्शन करोगेतोपूर्वत्यागनोपाल्या॥ अरपीछैकाभंगभया ॥जोनहिंकरोगे तोपीछैकात्यागपालिकरिपूर्वत्यागकाभंगकीया॥यह ..अनोन भ ष्टपदभया॥यानैंजैसैसर्पछछूंदरीकूंपकरिकरिपछितावेहै तैसेका र्यहैं॥बहुरितुमकहोगे केसरचढीप्रतिमासरागीहोयजाय यातैंस म्यक्दृष्टिवंदेपूजेतोमिथ्यात्वकादूषणलगैहै॥ताकूंकहियेहै मि-

मिथ्यात्वकेपंचभेदहैं॥सोतुमाराहद्दहै सोहिएकांतमिथ्यात्वहैं॥
बहुरिसोहिक्कमतैंपांचूहिमिथ्यात्वमैंमिलैहै॥यानेस्याद्वादकाबाध
कहै॥नवंदिवैंमैंभीतोमिथ्यात्वनगया॥यानैंमिथ्यात्वतथाक्रोधमान
मायालोभसर्वहीजैसाहिरत्या॥तोसम्यक्तकहांरही॥बहुरिजोतुम-
कहोगे॥हमनेंपूर्वीविनसमझै अजाणपणामैंत्यागकरिदिये॥सोअ
बकैसैछोरेजाय त्यागभंगकामहापापहै॥यातैंहमारैजोपूर्वश्रद्धावे
ठिसोवैठि॥अबअन्यरूपहोनेकीयेहीश्रद्धाहमारैदृढहै॥कहिनैंवा-
लाकेतीहीकहोहमारैतोएकदृढहैसोहिहैं॥ ताकाउत्तर ॥भोश्रद्धा
नीजीवहो यहजिनधर्मकीरीतिनाहिहै॥यहकहिनातोमिथ्यादृष्टि
काहै॥तुमपक्षकरिअपनाअकल्याणबरजोरीतैंक्योंकरोहो॥जिन
धर्ममैंतोऐसें कहिहै॥जोकिसीजीवनैंश्रद्धाकैअर्थअनंतकाभीअ

पनीबुद्धिकीमंदतातै तथाआगमकावियोगतैं जिनभाषिततत्व-
रूपीश्रद्धानकीया ॥ भावार्थ ॥ कुतत्वकूं सुतत्वरूपश्रद्धीतोभी-
जिनदेवनेवाकूं सम्यक्दृष्टिहिकह्याहै ॥ भावार्थ ॥ आज्ञावानहै
यातै बहुरिसोहिजीवकेतै किकालपीछैबुद्धिबलकरि तथाआग-
मअरआगमकेबेत्ताकरि जाकेयथार्थ जाणपणाहोयजा-
य ॥ कुतत्वकुतो कुतत्वजाणे ॥ अर सुतत्वकुं सुतत्वजाणे
॥ पीछैभीजो पूर्वोक्त अयथार्थ श्रद्धानकूं नछोडैहै ॥ जाण
ताथकाभीतो ताकुं जिनभगवानने मिथ्यादृष्टिही कह्याहै
॥ भावार्थ ॥ विनाजाण्या खोटाश्रद्धानवालातोसम्यक्तीक
ह्या ॥ अरजाण्यापीछैताकुंनछोरै सोअपूठा मिथ्यादृष्टीक-
ह्याहैं ॥ यातैतुमकुंइहां विचार करिकहिना ॥ तुम कूं सम्यक्तिक

हिनाकिअौरकहिनासोकहो ॥ यहपूर्वोक्तकथनश्रीनेमिचंद्रा॰
चार्यसिद्धांतिनेंश्रीगोमठसारकेविषैलिखाहैं ॥ तदुक्तं ॥ द्वयेनाह
॥गाथा॥ सम्माइट्ठिजीवोउवइट्ठं॥पवयणंचसद्दहदहई ॥ सद्दहदि
असब्भावंअजाणमाणोहिगुरुणियोगा ॥ १ ॥ सत्तादोतंसम्मंद
रसिज्जंतंजदाणसद्दहदि ॥सोचेवहवदिमिच्छाइट्ठीजीवातदा
पहुदि ॥ २ ॥ इतिगाथाद्वये ॥ इसगाथाकूंपूर्वोक्तअर्थतैंमिला॰
लेणा ॥ यातैंपूर्वहद्दुछोरिकरित्रिलोकार्चितमहाभवसंकटकी
त्यारकस्वर्गमुक्तिकीसाधकअनेकजन्मकेपापकीविनाशकशांत
रूपजिनमूर्तिकादर्शन पूजन आदि विनयभक्तिसदैवकरना ॥या
कात्यागकदाचित्तभीनकरना ॥ बहुरिजोविनदर्शननैंभोजनकरै॰
है सोजिनागममैंनिःकेवलएकमिथ्यादृष्टिकह्याहै ॥ तदुक्तं गा

था॥ चेयालोजिहठाणेसावइ अदिठभोयणंकुणइ॥ सोशुद्धमि
थ्याईठीभणोजिणसोसणेसमये॥१॥ इहांऐसालिखाहै जोजि
हांजिनमंदिरहोय अरतिहांभीविनदर्शनकीयश्रावगभोजनकरै
तोवाकुंजिनशासनमेंशुद्धमिथ्यादृष्टिकह्याहै॥ यातेंभोश्रद्धानी
भाइहो॥इहांतुमविचारो अबतुमारीसम्यक्तकहांहै॥ इहांनाशु
द्धमिथ्यातिहिभये अरजिनशासनमेंभ्रष्टकहे॥ यातेंपूर्वेतुमाराह
द्धोरिशास्त्रोक्तचलनकाश्रद्धानयुक्तहै॥ बहुरिजोकहोगे पूर्वेहम
नैत्यागदिन्हिसोकैसेंअंगिकारकरै॥ ताकाउत्तर॥ पापकात्यागतो
कदाचित्भीफेरिअंगिकारनकरना अरकरेहैसोपापीहै॥ बहुरिअ
ज्ञातअवस्थामेंधर्मकार्यकूंपापरूपजाणिताकात्यागकिया॥ अ
रपीछेजाकेशुद्धजाणपणाभयाजदिभीधर्मकार्यकात्यागहिरावै

तोवाकीमंदबुद्धिकीप्रशंसाकहांतककरिये ॥ जैसैकाहूजीवनैपू
र्वअज्ञानअवस्थामैंढूंढियेकेकह्येतैंश्रीजिनबिंबकादर्शनपूजना
दिकाधिकैत्यागकीये पंचपरमेष्ठीकीसाखितैं ॥ बहुरिपीछैवाके
ज्ञानपणाभयातबवहजिनमंदिरजायकरिदर्शनपूजनादिकक
रैतोपूर्वत्यागकाभंगहोय ॥ अरनकरैतोज्ञानपणाकरि कछूभी
सिद्धिनाहिं ॥ यातैंवहकहाकरैसोकहोगा यातैंअन्यमततैंतोढूंढ
करनायोग्यहै ॥ परंतुधरमैंहीढूंढकरनासोबडाअनर्थहै ॥ बहुरि
जोतुमफेरिकहोगे ॥ हमलोयामैंसाभर्णकादूषणजाणजाणक
दापिनवदै ॥ ताकूंकहियेहै ॥ तुमनैनेकमात्रकेसरतोसाभरणक
हीअरश्रीपार्श्वनाथकीप्रतिमाप्रत्यक्षहीसिरपैंसर्पफणनैलीयाहै
॥ तथाचोवीसिजिनबिंबअधोर्द्धप्रत्यक्षदीषैहै ॥ तथाप्रतिमाकेच

हुनरफ इंद्रतथालक्ष्मीसरस्वनीतथायक्षयक्षीतथानवग्रहक्षेत्र पालआदिकीमूर्तिहोयहैं॥ औरवृषभआदिशार्दूलपर्यंतचिन्ह ताकेहोयहै॥ तथाताकेकर्णकांधैसेमिलितहोयताकादर्शनपू- जनप्रक्षाल्यादितुमकैसेकरोहो ॥यहतोबडाअद्भुतआश्चर्यरूपी चलनहै॥यातेंयहभीतुमहूं उचितनाही॥ बहुरिफोरिकहोगे हमतो हमारीआम्नायकीरीतीकरैंहैं तुह्मारा कत्याकैसेकरे॥ ताकूंकहिये हैं॥ भोभ्राताहो आम्नायतोश्रीमूलसंघविषेंश्रीकुंदकुंदाचार्यकीक हीहै तामैंसरस्वतीगच्छहैं॥ अरबलात्कारगणहै यहतोकहिहै॥ अ रइसमूलसंघकीआम्नायसिवायतुमारिनविनआम्नायऔरहैतो दूसरिभई सोदूसरिआम्नायकारिकहांसाध्यहै॥ दूसरिआम्नायमा ननासोमिथ्यात्वहिहै॥ तदुक्तं नीतिसारकाव्यछंद ॥तास्मिन्श्री

मूलसंघेमुनिजनविमलेसेननंदीचसंघोस्यातांसिंहाख्यसंघोभव-
दलमहिमादेवसंघश्चतुर्थः॥ १॥ चतुर्संघनरोयस्तुकुरुतेभेदभाव-
नाम्॥ सम्यक्‌दर्शनातीतसंसारेसंचरत्परम्॥ २॥ यातेंश्रीमूलसं
घकुंदकुंदाचार्यकीआम्नायसरस्वतीगच्छबलात्कारगणहिमानि
पूर्वोक्तश्रद्धानिकरिनायोग्यहै॥ इनिमैंभेदभावनकरनाइनिसिवाइ
गृहस्तनिकीकारिआम्नायकछूसिद्धिकारिनाहिंहै॥ बहुरिजोकहो
गे हमारिआम्नायविषैंआगेबडे२ विद्यावान्पंडितअध्यात्मीआ-
दिबुद्धिवानश्रावकभयेहै अरसामर्थ्यवानभयेहैं॥ जानेहमारिआ
म्नायबांधिहै॥ जिसकीप्रवर्त्तनाकीपरंपराय आम्नायमैंहमचलेहैं
ताकूंकहियेहै॥ तुमारेविषैंबडेबडेपंडित विद्यावानभयेतोकहाआ
श्चर्यवानभया दशमापूर्वकेपटिनेवालेद्रव्यलिंगीसाधुचतुर्थकाल

मे भी ऐसे भये हैं ॥ जाकी विद्या आगैं अन्य सामान्य मुनि भावलिंगी बाह्य लघु पद पावै ॥ अर जाका उपदेश तैं अन्य की मुक्ति होय ॥ अर जाकूं एक भी अक्षरोच्चारका ज्ञान नाहिं ऐसै भावलिंगी सी धू-भी मुनि भये सोइनि दोउनिमैं सिधि तो भावलिंगी अपां उतकी भई ॥ देखो अभव्यसेन बहुत पढ्या अर एक भी वचनका जाकै श्रद्धान भया तो बहुत जन करि निंदा पाया निंद्य गति पाई ॥ अर शिवभूति नामा मुनि एक भी अक्षर पढ्या नाहिं तो भी तुषमासभिन्न पद उपरि श्रद्धान करि ताकुं रट्या तो केवली होय मोक्ष गया ॥ यातै बहुत पढ्या अर ताका श्रद्धान न किया तो कहा भया ॥ तदुक्तं ॥ श्रीकुंदकुंदाचार्य प्रणित दर्शनप्राभृते ॥ गाथा ॥ सम्मत्तरयणभट्टा जाणंता बहुविहाइ सत्थाइं ॥ आराहणाविरहिया भमंति तत्थेव तत्थेव ॥ १ ॥ यातें एक हि अस

रकाश्रद्धायुक्तपढनासोहीकार्यकारीहै ॥ बहुरिफेरितुमकहोगे
पूर्वोक्तप्रकारशास्त्रतथा पूजा पाठकह्येसोवचनसर्वभेषिकैहै ॥
यातैहममानैनाहि ॥ ताकाउत्तर ॥ भेषीकीप्रतिष्ठा प्रतिमाकातो
पूजा नमन दर्शनआदिकरिमानना ॥ अरताकैवाक्यनमाननायह
भीबडीभोलपहैं॥ यातैनवीनप्रतिष्ठापाठनैनवीनप्रतिष्ठाकारिनवी-
नप्रतिमाथापिकारिपूजादिककरनायोग्यहै ॥ बहुरिशास्त्रकैवचन
पूर्वाचार्यप्रणीतनमानना तोतुमारोनवीनवचनगृहस्तनिकेकीयेभी
कौनमानैगे ॥ बहुरिजोकहोगेशास्त्रतोहममानेहै ॥ परंतुइनिमैंका
हुअन्यनैवीचि२मैंऔर२ आमिलितवचनधरदीये॥ यातेंप्रथमानुयो
गविषैबहुतआमिलितकथानहोयगया ॥ यातेंप्रमाणनवस्या द्वाद
नयनैंमिलैवचनिकूंहममानेहैं ॥ यहसर्वज्ञकामतहै ॥ आचार्यनि-

कैवचनमानेभीहै॥ अरुअमिलतकूं नैंभीमानैंहै॥ ताकूंकहियेहैं॥
शास्त्रनिमैकाहुनैअन्य २ मिथ्यावचनधरे ताकानिश्चयतुमकूं के
सैभया॥ हमनजानैं तुमसेप्रत्यक्षकेवलज्ञानीमिले॥ तथातुमकूं
हिकेवलज्ञानभया यातैंऐसैसत्यकहोहो॥ बहुरिप्रमाणनय-
स्याद्वादतैंमिलनैवचनकाभीनिश्चयसाक्षात्केवलीतथाश्रुतकेव
लीविना तथाआपकूंकेवलज्ञानउपजेविनातुमकूंकैसैभया सो
हमकूंभीनाकहो॥ बहुरिआचार्यकेवचनकैशास्त्रनैकहोगेनोउनि
केकियेशास्त्रभीप्रमाणकरिनैलगोगे॥ बहुरिअपनेमनतैंसिद्धि-
कीयाकहोगेनौतुमकूंकहांसर्वज्ञपदहै॥ अथवाआचार्यवत्कहो
ज्ञानहै॥ बहुरिप्रथमानुयोगकीकथापाठांतरतेहै॥ ताकूंकहिक
रनमानोगेतोएककहिशास्त्रप्रमाणहोयगा दोयकाश्रद्धानकरना-

नहोयगा ॥ तबदोयपुराणवांचनाकूननाभीनबनैगा ॥ याते वृथा
हठकरनाअकल्याणकाहिमूलहै ॥ तथाआगमतें प्रमाणनयादिक
कीसिद्धिभईकहोगेतोआगमभीआचार्यनिकेंहिकियेहै ॥ यानेइ-
हाभीतुमारानाजुबाबहै ॥ बहुरितुमकहोगेअकलंकनिकलंक दो
हुभाइप्रतिमाकेउपरिसूत्रकाडूकगोरिकरिताकूं उल्लंघ्यगये ॥ और
मुनिनैंभीपांवकेअंगुष्टकेजडिलगाई ॥ ताकूंप्रतिवंदनानकरि ॥ औ
रमुनिकीपूजामेभीकेसरताकैनलगावनाइत्यादिप्रसिद्धहै ॥ ताकेस
रचर्चिनाकैंसेमानेताकूंकहियेहैजैसेअकलंकनेनिकलंकने एकसूत्रडोरि
करिकार्यकीयातोइहातुमप्रतिमाकाप्रक्षाल्यसमयताऊपरिहं-
स्तविलस्तमात्रआदिवस्त्रडारोहो सोउससिसमयप्रतिमाकूंनवंदि
तैहोगे ॥ यातेंसोकहोकिंचित्सूत्रकेनिमित्ततेतोअपूजभईतोव

स्यकेडारिवेतैंनोअपूज्यप्रसिद्धहीहै याते तु भक्कुं वस्त्रडारिनासो भीवडाअनर्थकामूलहै॥ बहुरिमुनिनैंजडीलगाइसोतोउपजीकरि शरीरकेस्वके अर्थिलगाइसोमुनिकरिवंदिवेयोग्यनाहिं॥ बहुरिवे दरनैंपूर्ववैधकाभवकाजानिस्मरणतैंमुनिकाह्रदयविदारया॥ बहु रिनार्क शीतलादेषिताकेवनौषधिर्पासिकरिह्रदयविषैंलगाईनिर्वृ णकेअर्थसोकेनाकिदिनतांईताकेउपाद्विकालेपरत्या सोमुनिकैंसैन वंदिवेयोग्यहैं॥ वहकथाआराधनीकथाकोशमैंलिषीहैं॥ बहुरि मु निकीपूजामैंताकेचरणनिकेगंधलगावनामानियेतोनवधाभक्तिविषैं पादार्चनपदकाकहाअर्थकरोगे॥ तथाआठहैंभक्तिकाहिनाबनेगा॥ अरजोपूजाकहोगेतोपूजाकागंधकेश्लोकमैंतोचर्चिवेकाहिअर्थलि खाहै॥ तदुक्तं ॥श्रीखंडागरुकर्पूरमिश्रियागंधचर्चया॥पूजयामिसु

 रूभक्त्याइत्यादिकहै॥ यातेवृथाहठ्ठतेंअपनेकार्यकाविनाशहै॥ बहु-
रिजोतुमकहोगे समवशरणमेंसाक्षातीर्थंकरकेवलीविराजैहै ताके
भीकेशरआदिकाविलेपनलगावनानाहितोताकीप्रतिमाकेकैसेलगाव
नासंभवे॥ ताकूंकहियेहै॥ साक्षात्‌तीर्थंकरकीपूजाकिविधिविषेंअ
रताकीप्रतिमाकीपूजाकीविधिविषैनानाप्रकारकाभेदअन्यरूपहै॥
यातेंदोहुकीपूजाकिसमानता सर्वदेशीनाहिहै॥ याकाउद्धारलिखिये
है॥ प्रथमतोसाक्षात्केवलीकीपूजाकरे सोतिहांकेवलीकाआभिषे-
कनाहिं॥ बहुरिताकेगंधविलेपनभीनाहिं॥ बहुरिइंद्रादिकपदवीधर
भीताकूंस्पर्शैंनाहिं॥ बहुरिदूरिहितेंपूजे॥ बहुरिगंगाजलआदि
क्षीरोदधिकाजलरत्नजटितभृंगाराथितकरिताकीनालितेंजल-
धारादेयबहुरिदेवोपुनीतगंधअरमुक्ताफलोपमअखंडअक्षत॥ बहु

रिकल्पतरुकेदेवोपुनीतआदिपुष्प॥ बहुरि क्षीरामृतरूपीचरु पिंडरत्ननिकेदीपदिव्यामोदिकधूपकल्पवृक्षकेफलइत्यादिकनें इंद्रादिकपूजेहैं॥बहुरिकल्पतरुकेपुष्पनिकानिक्षेपणइत्यादिक होयहैसोरीतिजिनबिंबमेंसर्वकहां यातेंजिनप्रतिमाकीपूजाभी पूर्वप्रतिष्ठाहोयपीछेअभिषेकपूर्वकपूजाहोयहैं॥ बहुरिगंधकाल गावनातोपीछेहै॥प्रथमजिनमूर्तिकास्नानहोयहै सोकेवलीकी पूजाविनस्नानतेंहै तोयाकूंकैसेंस्नाननित्यकरावना॥ अष्टाविंश तिमूलगुणनिमेंस्नानकात्यागहै॥बहुरिवस्त्रकात्यागहै॥तथाज लपानकेवलीकेहैनाहिं॥सोतुमभीप्रक्षाल्यसमयताकेशरीरकेज लवस्त्रलगावोहो नयातांकेमुखकेछिद्रमेंजलजायहै तिहांभीतु मकूंऐसाकोरनाकैसेंहै॥ सोगंधविलेपनमेंतोसरागीहोयअरस्ना

नमैं अरवस्त्रकैलगावनैंमै तथाताकेमुखमैंजलप्रवेशकरै तामैं
मूलगुणघटैनाहिं ऐसामानिनाभीवडाअंधेरहै॥ बहुरिसाक्षात्
केवलीकीरीतिप्रतिमामैंकैसेहोय वहतोअंतरिक्षहै॥ अरअन्य
करिअस्पर्श्यहै॥स्नानविलेपनरहितहै॥ अरचैतन्यहै॥ बहुरिचौ
तीसअतिशयकरिमंडित अरअष्टप्रातिहार्य अनंतचतुष्टयक-
रिसंयुक्तबहुरिविहारकरियुक्तहै॥सोजिनमूर्तिविषैंएकभीन-
पाईये॥ बहुरिकेवलीपरस्परमिलैनाहिं॥ अरताकीप्रतिमाएक
आदिचोवीसीतोअधोन्हैहै॥ अरसैकड्यांतथाहज्जारांप्रतिमा
एकत्रविराजैहैं॥ बहुरि ताकूं सर्वकूं एकहिजलकेपात्रस्थलतैंस्ना
नकरावैहैं॥ अरएकहिवस्त्रतैंताकाजलसूकावैहै॥सोदोहुकी
एकरीतिहैनाहिं॥ बहुरिकोईकीतोमूर्तियवमात्रहै कोईकीएका

गुलग्न्रादिवडीहै॥ बहुरिपूजाविषैंभी ताकीपूजाजुदी २ नहोय है॥ बहुरिसाक्षात्केवलज्ञानीकेमस्तकऊपरिसर्पफणानाहिं॥ अरश्रीपार्श्वनाथकेसर्प्पफणाहै॥ इत्यादिकअनेकफरकहै या तेंसाक्षात्केवलीकीपूजामेंंअरताकीपूजामेंबहुत फरकजानना। तिसतेंपूर्वाचार्यकेवचनीकाश्रद्धानकरिनायोग्यहै॥ बहुरिएकश्रो रकहिहु॥ साक्षात्केवलीसमवशरणमैंविराजे तिहांइंद्रादिकता- कीपूजातोपूर्वोक्तहीकरेहैं॥ अरतिहांकेमानस्तंभसंबधिजिनप्र तिमाहै ताकीपूजाअभिषेकहीकरैहै॥ इहांभीकेवलीकीअरप्र- तिमाकीपूजाविषै फरकहै समोसरणविषैंसाक्षात्विद्यमानके वलीकेहोतेंभीपूजाअन्यरूपहैं॥ तोप्रतिमाकितोअन्यरूपहै हि सोहिश्रीजिनसेनाचार्यनेआदिपुराणमैंकहिहै॥ तदुक्तं॥ श्लोक

हिरण्मयीजिनेंद्रार्चास्तेषांबुधप्रतिष्ठिताः॥ देवेंद्राप्रूजयंतस्मे॰
क्षीरोदांभोभिषेचनैः॥ १॥ ऐसैजानीपूर्वोक्तश्रद्धानकरना॥ बहु॰
रिफेरिकोईकहै ॥पूर्वचतुर्थाकालमें प्रतिमाकेगंधविलेपनकोन
नैकीयासोकहो॥ ताकूंकहियेहै ॥षट्कर्मोपदेशरत्नमालाग्रंथ॰
मेंऐसालिखाहै मदनावलिनेंजिनबिंबकेगंधविलेपनकिया॥ब
हुरितिसफलतैंताकाशरीरकीदुर्गंधगई अरमरिकरिताकाफलक
रिपंचमस्वर्गमेंगई॥ तदुक्तं॥ षट्कर्मोपदेशरत्नमालायां॥ श्लो॰
क॥ इतीमंनिश्चयंकृत्वादिनानांसप्तकंसनी॥ श्रीजिनप्रतिबिंबा
नांस्नपनंसमकारयेत्॥ चंदनागरुकर्पूरैस्सुगंधेश्चविलेपनं॥सा
राज्ञीविदधेप्रीत्याजिनेंद्राणांत्रिसंध्यकम्॥ १॥ इत्यादिकबहुत॰
शास्त्रनिमेंबर्णनहै॥यातेमनोक्तश्रद्धाननकरना॥ बहुरिएतेपूर्वो

क्षमाकारकथनउपरिभीश्रद्धानकुंनोनकरनात्र्मरक्रोधकरना॥१
बहुरिदुर्वचनबोलना॥१॥बहुरिहठनछारना॥१॥बहुरिअपनी
टेककेअर्थिहठहोयवादकरना॥१॥अरशास्त्रोक्तादिपरवचन-
कुंनमानना॥१॥यहपंचचिन्हकारिसदैवप्रवर्त्तनासोमूर्खपनाहै
॥ भावार्थ ॥यहमूर्खकेपंचचिन्हहै सोयाकारिमूर्खकीपिछा-
निपरैहै॥ तदुक्तं ॥ श्लोक ॥मूर्खस्यपंचचिन्हानिक्रोधोदुर्वच
नीतथा॥हठीचहठवादीचपरोक्तंनैवमन्यते॥१॥बहुरिमूर्खके
स्वभावकीऊषधीभीनाहिहै॥ भावार्थ ॥ औरर स्वभावकीतो
दैवनेऊषधिरचीहै॥परंतुमूरखकीनरचीहै॥ तदुक्तं ॥ काव्य-
छंद ॥शक्यावारयितुंजलेनहुतभुकछत्रेणसूर्यातपं॥नागेंद्रं
निशितांकुशेनसमदंदंडेनगोगर्दभौ॥व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्चवि

विधैमंत्रप्रयोगैर्विषसर्वस्योषधमस्तिशास्त्रविहितंमूर्खस्यना·
स्त्यौषधं ॥१॥ इत्यादिकवर्णनहै ॥ यातैंविलेपनहीलगावनाजा·
नना ॥ बहुरिरक्तवासकेपुष्पताकेचरणनिऊपरिधरियेसोपुष्पपूजा
है ॥ इहांकोईकहै ॥ आगैधरियेसोतोयोग्यहै ॥ अरताकेचरण·
नउपरिधरनाकहांलिखाहै ॥ यहतोअयोग्यहै ॥ ताकाउत्तर ॥
अष्टप्रकारीपूजाविषैंऐसैंलिखाहै ॥ पादारविंदद्वयमर्चयामि ॥
यातैंचरणनिकेंहीचहोडणासंभवैहै ॥ बहुरित्रिवर्णाचारमैंभीऐसै
हीलिखाहै ॥ जोजिनकेचरणनकीस्पर्शितमालाआपकेकंठमेंधा
रनकरनी सोउपरिधरैविनाकैसैंस्पर्शितहोय ॥ तदुक्तं ॥ श्लोक
जिनांघ्रिस्पर्शितांमालांनिर्मलेकंठदेशके इत्यादि ॥ बहुरिप्रतिष्ठा
पाठमैंभीऐसैंहीकरनालिखाहै ॥ जोजिनपदस्पर्शितपुष्पमाला

तीनलोकऊपरिअनुग्रहकरिवैयोग्यहोय॥ अरयामालास्वर्गलो-
ककीलक्ष्मीकीप्रासिकरिवेकूंदूतीहै॥ यातैऐसीजिनपदस्पर्शित
पुष्पकीश्रेष्ठमालाकुंआशिकाकेअर्थिअपनेसिरपैधारनी॥ सोजि
नपदकास्पर्शिवातौताकेऊपरिधरैहीहोयहै॥ दूरिधरैतोहोयना
हिहै॥ अरगुणभीजामैजबहीआवैहै॥ दूरिधरैतौमालाआसि
कायोग्यनाहिहै॥ तदुक्तं॥ प्रतिष्ठापाठे॥ श्लोक॥ जिनांघ्रिस्प-
र्शमात्रेणत्रैलोक्यानुग्रहक्षमा॥ इमास्वर्गरमादूतीधारयामिवर
स्त्रजं॥१॥ बहुरिश्रीआदिपुराणमैभीभगवज्जिनसेनाचार्यनेऐ
सैहीकहीहै॥ जेजगमैंकुलकेउपजेपुत्रहै॥ भावार्थ॥उत्तमकु
लकेमनुष्यहैताकूंजैसेगुरुजनकीमाल्यअपनाशिरपैधरैहै॥ तै
सैहीजानेजिनपदस्पर्शितपुष्पकीमालाअपनेशिरउपरिधरिवे

योग्यहैं।।सोजिनपदउपरिधरैविनापुष्पमालाताकीस्पर्शितहो-
यनाहिं।।यातैंउपरिहिधरनासिद्धभया।। तदुक्तं।।श्रीआदिपुरा
णे।। श्लोक ।। यथाहिकुलपुत्राणां माल्यंगुरुशिरोधृतं ।। मान्य
मिवजिनेंद्रांघ्रिस्पर्श्यात्माल्याग्रभूषितं ।।१।। बहुरिआराधनाक-
थाकोषविषैं।। करकंडूकाचरित्रमें गुवालअरसेठअरराजा ।।ती-
नुंहिनेंमिलिकरिहजारदलकाकमलकाएकपुष्पमुनिकेकहेतें
श्रीजिनमंदिरमेंजायजिनबिंबकेआगेताकीस्तुतिकरि।।पीछेगुवा
लनैंश्रीभगवानकुंसर्वोत्कृष्टपदकेधारिजाणिताकेचरणकेउपरि
कमलकापुष्पधराऐसैलिखाहैं।। तदुक्तं।। आराधनाकथाकोषक
रकंडूचरित्रे।। श्लोक ।। तदागोपालकःसोपिस्थित्वाश्रीमज्जिनाग्रतः
।।भोसर्वोत्कृष्टतेपद्मंगृहाणेदमितिस्फुटं।।१।।उक्त्वाजिनेंद्रपादा

कोपरिक्षिप्तास्रुपंकजं ॥ गतोमुग्धजनानांच भवेत्सत्कर्मशर्मदं ॥
२॥ ऐसैंइहांभीचरनउपरिधरनालिख्याहै ॥ बहुरिदेवनाभीपुष्पवृ
ष्टिउपरिहिकरैहै ॥ बहुरिदेवपूजाविषैंऐसैंप्रथमप्रतिज्ञाकैंअर्थतो
जिनप्रतिमाग्रेपरिपुष्पांजलीक्षिपतुहै ॥ अरताकैंआगैंजिनप्रति
माकेंउपरिपुष्पांजलिक्षेपणाकह्याहै ॥ तदुक्तं ॥ ॐविधियज्ञप्र-
तिज्ञायजिनप्रतिमोपरिपुष्पांजलीक्षिपेत् ॥ बहुरिश्रीगोमदृस्वा
मीकीप्रतिमाकैंउपरिदेवताकेंशरकुसमनिकीवृष्टीकरैहै ॥ सोनि
र्वाणकांडविषैंकहीहै ॥ तदुक्तं ॥ गाथा ॥ गोमदृदेववंदामिपंचश
यधणुहदेहउच्चतं ॥ देवाकुणंतिवीठीकेशरकुसमाणितस्सउवर-
म्मि ॥ १॥ बहुरिजिनयज्ञकल्पविधानविषैंकहीहै ॥ जोजिनमूर्तिकी
पूजाकेसमयताकीचरननकीस्पर्शितपुष्पमालामहाभिषेककेंअ-

म०भ वसानसमयबहुमोलदेयकरिभव्यजीवानैंअपनाकंठमेंपहिरनी
३५ सोमालाचरननिकैस्पर्श्योविनाकैसैंगुणयुक्तहोयहै॥केवलदूरिही
तैंतोअतिशययुक्तनहोयहै॥ ॥तदुक्तम्॥ ॥श्रीजिनय
ज्ञकल्पप्रतिष्ठाशास्त्रे॥ ॥संस्कृतधारा॥ ॥श्रीजिनेश्वर
चरणस्पर्शादनर्घ्यापूजाजातासामालामहाभिषेकावसान
बहुधनेनग्राह्याभव्यश्रावकेनेति॥इहांभव्यश्रावकनिकुं
उपदेशहै॥अभव्यकुंअरमिथ्यातीकुंधारणाकरनानकह्याहै॥बहु
रिव्रतकथाकोषविषैं॥मुकुटसप्तमीकैव्रतकीविधिविषैं॥सेठकीपुत्री
नैंआर्यकाजीकेवचननितैं श्रावणशुक्लसप्तमीकाउपवासकैदिनअ
भिषेकपूजाकरिपीछें पुष्पमालानोजिनमूर्तिकेकंठमैंपहिराई॥अ ३५
रपुष्पकामुकटप्रभूकेशिरधरा॥पीछैंऔरविधिहै॥सोअयोगहै

तासोकैसेकरती ॥ तदुक्तं ॥ व्रतकथाकोषे ॥ श्लोक ॥ तत्प्रश्नाच्छ्रे
ष्ठिपुत्रीतिमाहभद्रेशृणुत्रुवे ॥ व्रतंतेदुर्लभंयेनेहापूत्रप्राप्यतेस्फुरवं
॥१॥ शुक्लश्रावणमासस्यसप्तमीदिवसेर्हतां ॥ स्नापनंपूजनंकृ
त्वा भक्त्याष्टविधमूर्ज्जितम् ॥२॥ मध्यंतेमुकुटंमूर्ध्निरचितंकुसुमोत्क
रैः॥ कंठेश्रीवृषभेशस्य पुष्पमालाचधीयते ॥३॥ ऐसैसेठपुत्रीनै मा
लीकीपुत्रीनैकही सोयाकाविशेषवर्णनकथासहितव्रतकथाकोषमै
है तिहांतैंजानना ॥ बहुरिमदनसुंदरीनैअष्टान्हिकीपूजाविषैंसि
द्धचक्रकीपूजाकास्पर्शितगंधअरपुष्पतयागंधोदकश्रीपालकोटीभ
टकैशरीरमैंलगाया ॥ औरसातसैसुभटकैंशेच्यातातैंकुष्टव्याधीग
ई ॥ सोगंधपुष्पताकैलगावनाहीसत्यहैं ॥ तदुक्तं ॥ श्रीपालचरित्रे ॥
श्लोक ॥ तत्रनंदीश्वराष्टम्यांसिद्धचक्रस्यपूजनं ॥ चक्रेसाविधिनादि

च्येजलैकर्पूरचंदनैः ॥१॥ अक्षतैश्चंपकाद्यैश्च पक्वान्नैवरदीपकैः॥ धू
पैः सुगंधिभिर्भव्यानारिकेलादिसत्फलैः ॥२॥ तद्विलेपनगंधांबुपु
ष्पाणिसादददौमुदा॥ श्रीपालयांगरक्षेभ्यः पाणिभ्यांरुग्विहानये॥
३॥ औरसिद्धचक्रके मंत्रकेजाप्यकेसमय भी पुष्पयंत्रउपरिही
धरनाकह्याहैं॥ तदुक्तं॥श्रीपालचरित्रे॥ श्लोक ॥ यत्रस्योपरिदा
तव्याअष्टोत्तरशतप्रमा॥ जाप्याएकाग्रचित्तेनजातिपुष्पैणघांघनैः
॥१॥ औरदेवपूजनकीआशिकाभीतीनहीवस्तुकीकहीहै॥ सोभी
जिनमूर्तिकीअगकीस्पर्शितलेणहैं॥ अन्यलेणनाहीहैं॥ वहुरिजो
गंधगंधोदकअरपुष्पमाल्ययाविनाअन्यवस्तुपूजाकीअंगीकारक
रै॥ ताकोरत्नत्रयक्षयहोयहैं॥ तदुक्तं ॥काव्यछंदः॥ नाडीपश्यतिह
स्तमामयपरिक्षार्थंगृहीत्वाभिषक्स्पृष्ट्वाराजपतिंतकुचयुगंस्ट

ष्टुकिंभिच्छत्यहो ॥ देवस्यार्चनसारवस्तुनिचयान् गंधांबुपुष्पत्रयं-
ग्राह्यंशेषमशेषवस्त्वनुचितंग्राह्योनिरर्त्तस्त्वयं ॥ १ ॥ याते प्रभुकेचर
ननिकास्पर्शितगंधगंधोदकअरपुष्पमाल्यादिकअंगीकारकरना ॥
सोहीमदनसुंदरीनैंश्रीसिद्धचक्रकीपूजाकागंधोदकअरपुष्पअ
रुचंदनअंगरक्षककूंदयातिसतैंताकाशरीरनिरामयकीया ॥ सोय
ह गुणजलचंदनपुष्पमेंताहैनाहिं ॥ प्रभुकेचरणकमलमैंहैं ॥ तदु
क्तंश्रीपालचरित्रे ॥ श्लोक ॥ इतिवृद्धक्रमेणैषासिद्धान्प्रपूज्य
भक्तितः ॥ ददौभक्त्यंगरक्षेभ्यः तत्पुष्पोदकचंदनात् ॥ १ ॥ यातैप्रभु
कैचरननकैगंधलगावना ॥ अरताकेचरननकेऊपरिपुष्पधरनाद्र
ढभया ॥ बहुरिअजितनाथ तीर्थंकरकीमाताजयसेनाकुमारअव
स्थामेंअष्टान्हिकीपूजाकूंकरि श्रीजिनप्रतिमाकेचरनकीस्पर्शि

तभई जो पूजाकी पुष्पमालाकुं पूजाकिये पीछे लेय अपना पिताकुं पापकी हानिकै अर्थ सभाविषैं दीनी ॥ तब पिताने अतिविनयकरि अपने हस्ततें लीनी ॥ अर पुत्रीकूं उपवासका परिश्रमकरि खिन्न देखि पारणाकै अर्थ ताका विसर्जन कीया ॥ तदुक्तं ॥ श्रीअजितनाथपुराणे ॥ श्लोक ॥ जयसेनापि सद्धर्मं तत्रादौ एकदा मुदः ॥ पर्वोपवासपरिम्लानं तनुरभ्यर्च्य साहर्तः ॥ १ ॥ तत्पादपंकजाश्लेषा पवित्रां पापहानय ॥ पित्रापित्रे ददौ ताभ्यां हस्ताभ्यां विनयेन च ॥ २ ॥ तामादाय सहीनाथो भक्त्या पश्यजयाभिधां ॥ उपवासपरिश्रांता पारयंती विसर्जितं ॥ ३ ॥ इहां भी पुष्पमाला प्रभुकै चरनकै ही चढ़ोई कहीहै बहुरि स्फलोच्चनानै ऐसे ही गंधोदक अर पुष्पमाला अपने पिता अकंपननामा राजाकुं दीन्ही सो कथन श्रीआदिपुराणमैं लिखे है ॥

इत्यादिक घनेही जैनके पुराण तथा पूजाआदि विषै पुष्पचरननी केही धरना कह्या है॥ बहुरि भय्या भगवतीदासकृत ब्रह्मविलास विषैभी नाना पुष्पचढावना कह्या है॥ तदुक्तं ॥ कवित्त ॥ जगतके जीवनिन्हे जीतिकें गुमानि भयो ऐसो कामदेव एक जोधा यौ कहायो है॥ ताके सरजानीयन फूलनिके वृंद बहु केतकी कमल कुंदके वरा सुहायो है॥ मालती महा सुगंध वेलकी अनेक जाति चंपक गुलाब जिनचरनन चढायो है॥ तेरीही सरन जिन जोर न वसाय याको सुमन सुं पूजौ तोहि मोहि ऐसो भायो है॥ इत्यादिक कही है सो यातें अतियोग्य है॥ बहुरि अयोग्य नाहि है॥ बहुरि पुष्प तो पीछे चढदे है॥ अरजाका शरीर है सो सर्वांग स्नान समय जलादिकतें भग्न करिये है॥ तो पुष्पके धरिवे मैं कहा अयोग्य है॥ बहुरि जो तुम कहोगे पुष्प जाति तो च-

दावणाहीपापकारीहैं ॥यामैंबडीहिंसाहोयहैं ॥ अरधर्मअहिं सारूपीहै यातैंअभिषकविषैंअरपुष्पआदिकेचढावनेविषैंघ नासावद्यआरंभहोयहै यातैंहमनकरहैं॥ ताकाउत्तर ॥श्रीजि नाभिषेकविषैंअरपुष्पादितैंजिनपूजाकरैतार्कैविषैं तथाऔरती र्थयात्राजिनबिंब तथा प्रतिष्ठा आदिकार्य्यकेविषैंजोआरंभक हैहैं अरसावद्ययोगकहैहैं ॥ बहुरिहिंसारंभभएहैं ॥ सोमिथ्या दृष्टिहैं ॥ दर्शनभ्रष्टहै ॥ बहुरिपापीहै ॥ अरसम्यक्दर्शनकाघाती कहैं ॥ बहुरिश्रीजिनधर्म्मकाद्रोहीहै ॥ ऐसेजिनागममैंपूर्वाचार्य्य मुनिनेकह्याहै ॥ तदुक्तं ॥श्रीयोगींद्रदेवेनश्रावगाचारेप्राकृतदो धक ॥ आरंभजिणण्हावियए जोसावज्जभणंति ॥दंसणतेणजि मइमलियो॥ इच्छुणकांइउभंति ॥१॥ बहुरितदुक्तं ॥सारसंग्रहे ॥

काव्य ॥ जिनाभिषेके जिनवैप्रतिष्ठा जिनालये जैनघुयात्रयायां ॥
सावद्यलेसो वदने सपापी सनिंदको दर्शनघातकस्य ॥१॥ बहुरि
तदुक्तं ॥ आराधनाकथाकोशे ॥ श्लोक ॥ श्रीमज्जिनेंद्रचंद्राणां
पूजापापप्रणाशिनीम् ॥ स्वर्गमोक्षप्रदां प्रोक्ता प्रत्यक्षं परमागमे ॥
१॥ यः करोति सुधीर्भक्त्या पवित्रो धर्म्महेतवे ॥ स एकदर्शनेशुद्धो म-
हाभव्यो न संशयः ॥२॥ यस्तस्यानिंदकः पापी स निंदो जगति ध्रुवम्
॥ दुःखदारिद्र्यरोगादि दुर्गतिं भाजनं भवेत् ॥३॥ इत्यादिक घने ही
जिनागममैं लिखा है ॥ यातैं निषेधनेवाला दर्शनका घातक तथा-
सम्यक्दर्शनतैं भ्रष्ट कह्या है ॥ अरसो पापी दुर्गतिका धारी होय है
॥ यातैं जिनाभिषेक अरजिनप्रतिष्ठा और जिनमंदिर जिनयात्रा आ
दि पूजाके विषैं हिंसारंभ पापकुं कहि करिताका निषेधन करना ॥

अरजोकरैहैंसोपूर्वोक्तप्रकारकाजीवहैं॥ बहुरिदर्शनभ्रष्टपुरुष
अनेकप्रकारकेजपतपव्रतनियमयमतथास्वाध्यायतीर्थयात्रा
पूजाआदितथानानाप्रकारकीक्रियाकूंसाधैहैंसोभीताकेविफ
लहैं॥ताकुंमोक्षनमिलैहै॥ संसारकाहीवीजहै॥ बहुरिएकस·
म्यक्दर्शनविशुद्धपुरुषहैसोमोक्षकापात्रहै॥ दर्शनभ्रष्टकूंनि
र्वाणपदनाहिंहै॥ अरचारित्रभ्रष्टकुंतोमोक्षहै॥ तदुक्तं ॥श्रीकुं
दकुंदाचार्यप्रणीतदर्शनप्राभृते॥ गाथा ॥दंसणभट्ठाभट्ठादंस
णभट्ठाणात्थिणिव्वाणं॥ सिज्झंतिचरियभट्ठा दंसणभट्ठाणसिज्झं
ति ॥१॥ यातैंजिनागमोक्तश्रद्धानकरिकर्तव्यताकरनीयुक्तहै॥अ
रपुण्यनिकरिजानैंजिनराजकीपूजाकरीहै॥ ताकाफलस्वर्गलोक ३८
आदिक्रमतैंमोक्षपदपायेहैं॥ताकीकथायुक्तपुण्याश्रवतथा·

व्रतकथाकोश तथा आराधनाकथाकोश तथा षट्कर्मोपदेशरत्न
माला तथा अन्य जैनकै सर्वागममैं विस्तारकरि वर्णन कीया है तिहां
तैं जानि लेना ॥ यातैं हठ छोरि पूर्वोक्त श्रद्धान करना युक्त है ॥ बहुरि
फेरि कोई कहै ॥ पूर्वोक्त वर्णन शास्त्रनिकी साखि देयकरि कह्या सो
सत्य है तौभी हम तौ न करें आचार्यनिकी जुदी २ नय है ॥ कहा जा
नै कौनसी नयतैं कह्या है ॥ श्रीजिनमतमैं अनेक नय हैं ॥ यातैं हम
न मानैं घना ही कह्या है तौ कहा करै ॥ ताका उत्तर ॥ भो अज्ञानी
भाई हो ऐसा कहिना तौ अज्ञानीका नाहिं है ॥ यह तौ अन्यमतीका
कहिना है ॥ जैसैं स्वेतांबरी तौ अछेडाका नाम लेयकरि मौन ग्रहै है ॥
अर वैष्णव परमेश्वरकी अपार माया कहै है ॥ तैसैं ही तुमारा कहिना
है ॥ सो आचार्यनिकी जुदी २ नय है ॥ अर श्रीजिनमतमैं अनेक न-

यहैं ऐसा कहि करि मौन पकडि रहि ना सो श्रीजिनमतमैं अनेकन
यहैं सो वस्तुकै स्वरूपका साधनकै निमित्त है॥ अरता का स्वरूप कूं
नाना द्रव्य गुण पर्याय करि स्वचतुष्टय परचतुष्टय आदि करि साधित
का स्वरूप ग्रहण कीया है॥ यातैं नय निक्षेपा स्वरूप कै ग्रहणकै अ
र्थ कह्या है॥ त्यागवैकै अर्थ तो नाहिं कह्या है॥ सो तुम अनेकनय कुं
कहि करि उलटा वस्तुका स्वरूप तज्या सो विपरीतता है॥ यातैं शा-
स्त्रोक्त श्रद्धान करना योग्य है॥ मनोक्त करना योग्य नाहि है॥ ऐसे पु
ष्पपूजाका स्वरूप कह्या॥ बहुरि यामैं हिंसा ही मानिये तो एक जल
की बूंद विषै असंख्याते जीव सर्वज्ञनै श्रीजिनागममैं कह्या है॥ ताक
रि जिनबिंबका अभिषेक तथा प्रक्षाल्यका भी करनैमैं पाप होयगा·
सो भी लखनेगा॥ यातैं शास्त्रकै वचनका श्रद्धानकी आज्ञा ही मानना- ३९

योग्यहै॥ बहुरिआज्ञालोपकरिअपनेमनोक्त भावनितैंसिवाय भीधर्म्मपालिनासोधर्म्मनाहिहै॥ उलटाअधर्महीहै॥ जैसैएक-
साहुकारकेदोयगुमास्तनेदेशांतरजायतानैंसेठकेअर्थिविणज कीया सोएकनेतो सेठकाहुकुममाफिक वस्तुलीनी वावेचीता मैं दैवयोगकरिद्रव्यटूटा अरबहुधननमिला॥ अरदूसरेनैसेठ-
कीआज्ञालोपकरिवस्तुकाक्रियाविक्रयअपनेमनोक्तविधितैंस-
मयदेखिकरिकीया तामैंबहुधनकीवृद्धिभई॥ बहुरितवदोहुका
हिसाबदेखिसेठनैविचारीसोहुकुममाननेवालाकुंअपनेघरिरा
ख्या॥ अरविनाआज्ञावालाकुंबहुतधनसहितछोरिदीया॥ भा
वार्थ॥ आज्ञाबाह्यकुंलोभकरिराखैतोकिसीदिनसेठकाघरिकुं-
खोयदेयहै॥ यानैंजिनागमकीआज्ञायुक्तकार्यमैंकिंचित्‌हिंसास

हितधर्मकापालिनातोप्रमाणमैंहैं ॥ अरताकीआज्ञाबाह्यआहैं
साधर्मपालिनाअप्रमाणमैंहैं इंद्रियामनवत् ॥ यातैंआज्ञाबाह्य
कैंसर्वक्रियाचरणअधर्म्महीहै ॥ धर्मतोजवकहिये ॥ आज्ञाविचे
यधर्मध्यानकापहिलाभेदकुंपालेनवधर्म्महै ॥ अन्यथाअधर्म्म
हीहै ॥ बहुरिपूजाकैसमयस्नानादिककरिनथाअष्टद्रव्यकीशुद्धि
जलादिकनैंधोवनैंकरिनथाजलादिकगंधपुष्पाक्षतनैवेद्यदीपधूप
फलादिवस्तुसचेतअचेतकरिजोकिंचित्हिंसारंभहोयनाकापाप
जाणिनासुंअरुचिकरनासोयहअज्ञाननातेंद्रव्यादिकनैंमिलतहैं ॥
जैनीकानाहिंहै ॥ बहुरिपूजातैंपूजाकाआरंभकाहीपापनकहैतोघनै
जन्मकेपापपूजाकरनैवालेककैसैंकटैं ॥ अरनकटैतोपूजाविषैंबहुत ५०
धनलगायउलटापापकिसअर्थबांधना ॥ यहभीवडीभूलहै ॥ यातैं

श्रीजिनकीपूजाअनेकजन्मकेपापकूं हरैहैं ॥ ताएकजन्मकातथा पूजाकेआरंभकापापतोसहजहीहरैहै ॥ येहीनिःसंदेहहै ॥ तदुक्तं ॥ एसोपंचणमोकारो सवपापपणासणो ॥ बहुरिजाकेयामैंसंदेहहै सोजैनीनाहिंहै ॥ द्रव्यलिंगीसाधसमान द्रव्यलिंगीश्रावकहै बहुरितेपूजाभीकरैहैं ॥ सोलोकविषैंअपनीप्रसंसाकेअर्थकरैहै ॥ परमार्थतोहैनाहिं ॥ ॥ आगेपांचमाभेदकहैहै ॥ ॥ प्रभूकेआगेघृतकपूरादिकादीपकसंजोयकरिधरना सोदीपनामापूजाहै ॥ इहांकोईकहै ॥ दीपककेजोवनैमैंतामाछरपतंगादिजीवनिकानिपातनप्रत्यक्षहोतदीखैहै यातैंइनिकेअभावऊपरिहमकेशरचचितनारेलकीगिरिचढ़ाडनाकरैहै ॥ ताकाउत्तर ॥ दीपकमैंहिंसाहैतोरात्रीकेविषैंभीशास्त्रनिकेवांचिनेमें तथाप्रभुकेदर्शनकार्य्यमैं

तथाअपनेगृहस्थनिकेगृहआदिविषैभीकेशरचर्चितगिरीधरीक
रिपूर्वोक्तकार्यकरनायुक्तहै॥ केवलपूजाहीतेंधर्म्महोयतोयहभी
सत्यहै॥धर्म्मकैअंगतोबहुतहै॥ बहुरिदीपककाजोवनेमेंपापहै
तोमंदिरआदिप्रभुकेनिकटभीदीपकनकरना॥ बहुरिजोपापही
है ऐसादृढश्रद्धानमानिकरिशास्त्रोक्तनमानना॥ तोशास्त्रनिमैंतो
दीपकसंजोवनाकह्याहै सोकैसेमिथ्याकह्येजाय॥बहुरिशास्त्र
निमैंतोऐसालिखाहैं॥जोश्रीजिनेंद्रकूंदीपकसंयोजनकरैहै ताकै
रोहिणीनामाव्रतकाउपवासकाफलहोयहै॥ सोरोहिणीव्रतकास्व
रूपपूर्ववर्णनकीयाहैतिहांतैंजानना॥ तदुक्तं॥श्रीयोगींद्रदेवेन
श्रावगाचारेप्राकृतः॥ दोधकछंद॥दिवंदइदिणइजिणवरहं मोह
हंहोइणठाइ॥अहउववासरोहिणीहि मोहविपलयहंजाइ॥१॥

यातैंदीपकजोयकरिचहोडनैवालाका मोहकर्मभीनष्टहोयहै।। ब
हुरिश्रीपद्मनंदिश्राचार्यनेपद्मनंदिपच्चीसीविषैंदीपकनिकीश्रेणी
जोयकरिप्रभुकीश्रारतीउतारनीकहिहै ॥ भावार्थ ॥घणेदीपक
निकुंसंजोयकरिश्रारतीकरनी ॥ तदुक्तं ॥काव्य ॥श्रारार्तिकंत्तरल
वन्हिसिखाविभातिस्वच्छेजिनस्यवपुषिप्रतिबिंबितंयत् ॥ध्यानान-
लोमृगयनइवावसिष्टंदग्धुपरिभ्रमातिकर्म्मचयप्रचंडं ॥१॥ बहुरि
देवपूजाविषैंभीऐसाहीबहुदीपककीवर्तिनिकीजालकुंजोयकरि
श्रारतीकरनीकहीहै॥ तदुक्तं ॥ॐलोकानामर्हंतां भूर्भुवःस्व-
र्लोकानेकिंकुर्वताज्ञानधाम्नादीपैर्व्रातेप्रज्वलत्किलजालेपादां
भोजद्वंद्वमुद्योतयामि ॥१॥ बहुरिगुरुपूजामैंभीकर्पूरश्रादिवर्तिनिका
तथाघृतकादीपकजोयकरिचहोढनालिखाहै॥ तदुक्तं ॥श्लोक ॥

दीपैर्कर्पूरनिर्वातैर्धृतकाग्रविनिर्घृतैः ॥ पूज्ययामिगुरुभक्त्यागोतमं
गणनायकम् ॥ १ ॥ बहुरिजिनसंहिताविषैंकार्तिकमासमेंकृत्तिका
नक्षत्रकेदिनकीसंध्यासमयविषैंकार्तिकोत्सवश्रीजिनमंदिरमैंकर
नालिखाहैं ॥ तिहांविधात्कृत्याभिषेकपूजनविषैं प्रचुरनानाप्रकारकी
बहुतनैवेद्यजिनाग्रेधरनी ॥ बहुरिपूजाकीठौरआदिकेतीकजाय·
गातोघृतपूरितकर्पूरकीवृत्तिकादिकैंदीपकजोवना ॥ अशेषजिन·
मंदिरकेसर्वप्रदेशजामंडपमैंगोपुरद्वारपरिवारगृहप्राकारतटतोर
णआदिअधोर्द्धआदिविषैंतैलादिपूरितदीपकजोयधरनाऐसालि·
खाहैं ॥ तदुक्तं ॥ भगवद्देकसंधिकृतजिनसंहितायांश्लोकचतुर्दश
मपरिच्छेदे ॥ श्रेणिकाग्रेगौतमस्वाम्युवाच ॥ श्लोक ॥ अथपार्थिववं
क्ष्यामि दीपार्च्चांकार्तिकीं शृणु ॥ ययास्यात्पृथिवीनाथप्रकाशःसर्व

भूमिषु ॥ १ ॥ कार्तिकेमासिनक्षत्रेकृत्तिकाख्येनिशामुखे ॥ प्रदीप-
जगतामेकंदीपावलिभिरर्चयेत् ॥ २ ॥ प्रभूनचरुकेणार्चपूजयेच्चिज
गद्गुरुं ॥ स्थापयेत्स्तूपिकाग्रेपिदीपंदीपितदिग्मुखं ॥ ३ ॥ मंडपेगोपुर
द्वारेपरिवारगृहेष्वपि ॥ प्राकारतदेशेपिदीपमालांनिधापयेत् ॥ ४
जिनेंद्रार्चाविधौदीपाःसर्पिषामोदशालिना ॥ कर्पूररसंयुताभिश्च-
वर्तिभिःकल्पिताःशुभाः ॥ ५ ॥ एवमास्कुनिशास्कुजिनेंद्रंयःसमर्चय
तितीडितदीपैःस्यात्सनम्रनरेश्वरचूडारत्नसमर्चितपादः ॥ ६ ॥ इहां
सैंकडेहजारेदीपकरात्रीमेजोवनाकह्यातोएकदीयआदिदीपकका
जोवनापूजाआदिविषैकैसेनिषेध्यहैं ॥ बहुरितिसफलकरिचक्रव
र्त्तिआदिकरिपूजितचरणजाकाऐसातीर्थंकरपदपावैहै ॥ यातेयहउ
त्तमकार्यहै ॥ बहुरिविदेहक्षेत्रस्थितसीमंधरादिकीपूजाविषैभीदी-

पकजोयकरिपूजालिखीहैं ॥ तदुक्तं ॥ काव्य ॥ दीपेप्रदीपितजग-
च्चयरश्मितेजेदूरीकरोतितममोहविनाशनाय ॥ तीर्थंकरायजिनवि
शवहीरमानं ॥ इत्यादिकहे ॥ बहुरित्रीकालपूजाविषैंजोअष्टद्र-
व्यस्तूपूजाकरे ताकेसंध्यासमयपूजाविषैंएकदोयघडिकारात्री
अवश्यआवैहै ॥ तबदीपकविनापूजाकैसेहोय ॥ यानेंदोयकाल-
तोपूजाकहिनाहिहै ॥ बहुरिचांदनषष्ठीव्रत दुग्धद्वादशी आकाश-
पंचमी अनंतचतुर्दशी आदिघणेहीव्रतनिकीपूजारात्रीविषैंहोय
हैं ॥ भावार्थ ॥ रात्रीविषैहीकरनीकहीहै तोदीपककीकहावातहै
॥ तबकोईकहै ॥ रात्रीपूजाकहांकहांकहीहै ॥ ताकाउत्तर ॥ सर्वत्र
तकथाकोषमेंकहीहै ॥ तहांजुदी २ कथामेंदेषिलएणा ॥ बहुरिवज्र
संघश्रीमतीनेंविवाहकेपीछैरात्रीविषैंश्रीभर्त्तारदीपकनिकैउद्योत-

पूर्वकजिनमंदिरमैंजायतिसीसमयरात्रीमैंजिनदेवकीपूजाक-
रिसोभगवज्जिनसेनाचार्यनैंमहापुराणमैंकहीहैं॥ तदुक्तं॥श्लोक
॥अथापरेद्युरुद्यावमुद्योतयितुमुद्यमी॥प्रदोषेदीपकोद्योतैर्महा
पूतंययौवरः॥१॥प्रयानमनुजातिस्मश्रीमतीतंमहाद्युतिं॥भास्व
न्तमिवरुद्धाधनमसभास्वराप्रभा॥२॥ पूजाविभूतिमहतीं पुरस्कृ
त्यंजिनालयम्॥प्रापदुत्तुंगकूटाग्रमस्कमेरुमिवोच्छ्रित॥३॥
सतंप्रदक्षिणीकुर्वन्सनानिविबभोन्नृपः॥मेरुःसर्कद्रवःश्रीमान्
महादीप्तपरिस्कृतः॥४॥कृतेर्याशुद्धिरुद्धिर्हिप्रविश्यजिनमं-
दिरम्॥तत्रापश्यद्दृषीन्दीप्ततपसःकृतवंदनः॥५॥ततोगंध-
कुटीमध्येजिनेंद्रार्चांहिरण्मयीं॥पूजयामासगंधाद्यैरभिषेक
पुरःसरं॥६॥कृतार्च्चनस्ततस्तोतुंप्रारेभेसोमहामती॥ इत्यादि

बहुरि अर्हद्दास श्रेष्ठीनै ॥ अष्टान्हिकाकी कार्तिक शुक्ल पूर्णवासी की रात्री विषैं अपनै मस्तक जिन मंदिर विषैं आठ ही स्त्रीजन सहित श्रीजिनबिंबकी पूजा करि पीछै सम्यक्तकी उत्पत्तिकी जुदी २ कथा करी है ॥ तदुक्तं ॥ सम्यक्तकौमुद्यां ॥ श्लोक ॥ इति तासां वचः श्रुत्वा श्रेष्ठि चैत्यालये गमत् ॥ मंगलद्रव्यसंयुक्तो वसुपूजो विचक्षण ॥ १ ॥ तत्र गत्वा तु पुष्पाद्यैः धवलानां गायनेपर ॥ परमेश्वरस्याविधिवत् वसुपूजा कृतानदा ॥ २ ॥ इनि मै भी रात्रीका ही प्रसंग आया है ॥ ऐसै पूजाकै विषै दीपक जाय चढावणा आदि रात्रीपूजाका वर्णन ठौर २ लिख्या है ॥ बहुरि जिनसंहिता विषैं जिनप्रतिमाकै विराजवेका सिंहासनकै आगै दीपकानिका प्रद्योतन पूजक पुरुषनैं किया लिख्या है ॥ तदुक्तं ॥ श्लोक ॥ ॐ कैवल्यावबोधार्कौ द्योतयत्यखिलं जगत् ॥ यस्यनन्तपादपी

गाग्नेदीपान्प्रद्योतयाम्यहम् ॥१॥ बहुरिपूजासारग्रंथविषैंभीदी
पपूजाविषैंयहश्लोकहैं ॥ तथाअन्यभीलिखाहै ॥ तदुक्तं ॥ पूजा-
सारे ॥ काव्य ॥ कनकरजतपात्रेस्थापितंहारिसारंहविरमृतमिवाच्चै
रक्षियामोजिनाय ॥ मसृणधवलदीर्घैस्थूलकर्पूरयारिज्वालितविम-
लदीप्तिर्व्योमदीपैःप्रदीपैः ॥ इत्यादिजानना ॥ बहुरिषट्कर्मोपदेश
रत्नमालाविषैंदीपकहीजोवनालिखाहै ॥ तदुक्तं ॥ दशमपरिच्छेदे
॥ श्लोक ॥ त्रिकालंवरकर्पूरघृतरत्नादिसंभवं ॥ प्रदीपैः पूजयन्भव्यो
भवेद्भाभारभाजनं ॥१॥ बहुरिध्यानतरायकृतपूजाविषैभीदीपकी
जोतिभीलिखीहै ॥ तदुक्तं ॥ दीपकजोतितिमरक्षयकार ॥ इत्यादि ॥
तथाच ॥ वानकर्पूरस्फधारदीपकजोतिसुहावनी ॥ भवातापनिवार
दशलाक्षिनपूजोसदा ॥ तथैवोक्तं ॥ तमहरउज्जलजोतिजगाय ॥ त

थैवोक्तं ॥ दीपककीजोतिप्रकाश ॥ बहुरि भैय्याभगवतिदासकृत·
ब्रह्मविलासविषैंभीदीपकतैंपूजिवेकाफलजुदा२वर्णायकरिक·
वित्तमैंकह्याहै ॥ तदुक्तं ॥ ब्रह्मविलासकेषु ॥ कवित्तभाषाछंद ॥
दीपकअनायेचहुंगतिमैंनआवैकहुं वर्तिकैवनायैकर्मवर्तिनवनतु
हैं ॥ आरनिउतारतहीआरतनसबटरजाय धायदिंगधरैपापपंकनि
हरतुहैं ॥ बीतरागदेवजुकीकीजेदीपकसौंचित्तलायदीपनप्रतापाशि
वगाभीयौंभनतुहैं ॥ १ ॥ ऐसैंजुदाजुदाफलकह्याहै ॥ बहुरिऔर
घनीहीपूजाविषैंघृतकर्पूरादिकेदीपकजोवनाकह्याहै ॥ सोकिंचि
तलिखियेहैं ॥ तदुक्तं ॥ श्रीपार्श्वनाथपूजायां ॥ छंद ॥ दीपोज्वलज्वा
लज्योतिरसालकर्पूरादिकजोयधरं ॥ इतिच ॥ तथैवोक्तं ॥ षोडश·
कारणपूजायां ॥ प्रस्फुरतध्वांतहरैरुदारैर्दीपैलसत्केवललब्धिहेतोः

॥१॥ तथैवोक्तं ॥ दशलक्षिणीकपूजायां ॥ दीपैर्विनाशिततमोत्-
कररुद्धनासैः कर्पूरवर्तिज्वलितोज्वलभाजनस्थैः ॥१॥ तथैवोक्तं ॥
अनंतव्रतपूजायां ॥ छंद ॥ दीपोज्वलजालंरत्नविसालं घृतकर्पूर
उद्योतकरं ॥१॥ इतिच ॥ तथाचोक्तं ॥ देवपूजायां ॥ काव्य ॥ ध्वस्तो
द्यमांधीकृतविश्वविभ्रमोहांधकारंप्रतिघातदीपान् ॥ दीपैःकनत्कां-
चनपात्रसंस्थैर्जिनेंद्रसिद्धांतियतीनयजेहं ॥१॥ इत्यादिकअनेकठौ
रिदीपकजोवनेकावर्णनहै सोकैसनिषेद्धकरना ॥ बहुरिदयामेंहिं-
सादिकदोषकुंदेखिगिरिरंगकारिचहोडनासोकहीभीशास्त्रनिमें
कहींनाहिहै ॥ यहमनोक्तरीतिहै ॥ सोपूर्वाचार्यनिकेवचनिकुंउत्था-
पिकरिअपनीनवीनपद्धतीकीप्रवर्तनाकेअर्थहै ॥ सोयहचलनआज्ञा
बाह्यहै ॥ बहुरिलोकनिकुंरत्नकेहीदीपकवतावनासोभीकरतेदीखै

नाहिहैं॥ देखोकहांतोअमोलिकरत्नअरकहांकाचखंडसमानगि-
रिकादूकडायातैंपूर्वंहइछोरियत्नपूर्वकदीपककैढकणैआदियत्न
कीरदीपकहीजोवनायोग्यहैं॥ बहुरिइहांकोईकहे ॥ केशरकाल्गा
वनापुष्पतथापुष्पमाल्यकाचढ़ोडिनाअरदीपककाजोवनाशास्त्र-
निमैं नथापूजापाठमैंलिखाहै सोतोहमभीजानैहैं वाचांचैहैंवापढे
हैं परंतुकरनानाहिं॥ शास्त्रकीबानऔरअरहमारीबानऔर॥ शा
स्त्रनिमैंलिखीसोतोशास्त्रनिमैंहैं॥ हमारेकरिवेकीहमममैंहै॥ नाका
उत्तर॥ भोबडेबडेअडानीहो यहतुमाराकाहिनाअभव्यसेनवत्तहै॥
सोउपदेशनोशास्त्रोंकदेना॥ अरचलनविरुद्धीरूपचलना देखोजिन
गममैएकवूंदजलकीमैंअसंख्यातजीवकह्ये सोऐसीजाननाभी-
अभव्यसेननेक्षुल्लककृतमायामयीतलावमैंजायकरितिसजलतैं

गुदाधोई ॥ अरहरितदूर्वादिककुंघुंदीसोकाहिनाकरनाअौर रूप
भया ॥ बहुरिवैष्णवभीकहैहैसोकथाकैथैगणतोकहिनेकैहै अर-
स्वानेकेअन्यहै ॥ ऐसानुमाराकहिनाहैं ॥ यानैंरेवतीरानीवत्वचनिकी
दृढतारारिविजिनशास्त्रोक्तविधिकरियथाशक्तिआचरणकरनायोग्यहैं
॥ मनोक्तकरिवेमैंअपनाअकल्यानहैं ॥ भावार्थ ॥ धर्म्मविषैविघ्न-
करनासोअकल्याणहीहै ॥ बहुरिसम्यक्दर्शनभीश्रीजिनवचनकेश्र
द्धानतैंहीहोयहैं ॥ अरसम्यक्ज्ञानभीताकाजाणपणातैंहोयहै अ
रसम्यक्चारित्रभीताकाआचरणतैंहोयहै ॥ यामैंशंकाकीये ॥ तीनु
हीकानाशहोयहैं ॥ बहुरिनाशभयेमिथ्यात्वहीकासद्भावहोयहैं ॥ या-
तैंश्रीजिनागमकथितवचनकीश्रद्धाहीयोग्यपरमार्थरूपीहै ॥ श्रद्धा
नविनाघनापढिवेतैंनथासहलीतैंकहासाध्यहैं ॥ अोरपूजाविषैंपाप

मानितासैंअरुचिकरनातोग्रहस्तकैपापरूपीषट्कर्म्मजनितपाप
देवपूजादिकषट्कर्मविनाकैसैंमिटै॥यातैंअरुचिनकरना॥बहुरि
याकाआरंभविषैंछहकायकेजीवनिकीहिंसाकादोषमानियेतोन
वीनमंदिरकाकरावनातथाप्रतिमांकावणावना॥प्रतिष्ठाकरावना
संघकुंभोजनदेनातीर्थयात्राकरनारथयात्राकरनामहाभिषेकादि
पूजाकाकरनाआदिसर्वकार्यनिविषैंकहांहिंसाकाआरंभनहोयहै
यातैंयामैंदोषमानियेतोकरनाभीयोग्यनाहिहै॥ढूंढ्यामतिहीहो
नायोग्यहै॥तथाकाहुग्रहस्तआदिकीययाविभवआमारतिमोलिले
यतामैहीप्रभुकीविनाप्रतिष्ठितशिल्पिकारतैंमूर्तिमोललेयताकुंपथ
रावनाभलाहै तामैंसर्वारंभमिटैहै॥बहुरिश्रीजिनमतएकांतपक्षिहै
नाहिं अनेकांतपक्षीहै॥यातैंग्रहस्तकाधर्म्मएकोदेशीअणुव्रतरू

पीहै ॥ सोऋणूनामसूक्ष्मकाहै तथाथोराकाहै सोथोराव्रतकाधर्मतौ किंचित्
हिंसाकाहीत्यागतैंहोयहै ॥ अरमहाव्रतीकाधर्म्मसर्वारंभकेत्यागतैंहोयहै ॥
तिसतेगृहस्तकैधर्मकार्यमैंकिंचितृहींसाभीहोयताकापापहै सोपुन्यकेही
कारणहै ॥ जैसेपुष्पहै सोफलकेकारणहै बहुरिसोपुन्यहै सो पापका-
हरिवेवालाहै ॥ बहुरिफलहै सोपुष्पकेविनाशकहै ॥ तैसैंहीपुन्य
काकारणपापहै बहुरिसोपुन्यहैसोधर्म्मकाकारणहै ॥ अरधर्म
हैसोपुन्यकाविघानकहै ॥ बहुरिसोधर्म्महै सोमोक्षकाकारणहै
अरमोक्षकासाधकहै ॥ ऐसेपरस्परकारणहै यातैंकोइकपापका
फलपुन्यफलरूपीलगैहै ॥ सोहीइसग्रंथमेंपूर्वअहिंसानुव्रतके
वर्णनमेंपुरुषार्थसिद्ध्युपायग्रंथोक्तआर्यातैंकह्याहैसोविचार
लेना ॥ ऐसेपूर्वोक्तपरस्परकारणकानिरूपणश्लोकनितैंलिखाहै

तदुक्तं॥ श्लोक॥ फलस्यकारणंपुष्पंफलंपुष्पविनाशकः॥ पुण्य
स्यकारणंपापंपुण्यंपापविनाशकः॥१॥ धर्म्मस्यकारणंपुन्यंधः
र्म्मंपुण्यविनाशकः॥ मोक्षस्यकारणंधर्म्मंधर्म्मंमोक्षस्यसाधनं॥
२॥ ऐसैंअनुक्रमतैंमोक्षकाकारणजानिपूर्वोक्तकथनकाश्रद्धा-
नकरना बहुरिदीपकजोवनाहींनिषेधहैं ताश्रीवर्द्धमानस्वामी-
कीजिसदिनमुक्तिभई तिसदिनकीरात्रिमैंपावापुरीमैंआदरतैं
सबलोकांनैंभक्तिकरिघरि २ दीपकजोयकरिउत्सवमहोत्सवकी
यासोधर्म्मकार्यकाउत्सवविषैंऔररीतिनथी॥ यातैंदीपोत्सवकी
या बहुरितिसदिनतैंहीप्रतिवर्षनीर्वाणपूजापूर्वकदीपमालि-
काभरतमैंप्रगटीसोअद्यापिलोककरैंहैं॥ ऐसैंश्रीजिनसेनाचार्य
प्रणितबृहद्धरिवंशमैंलिखाहै॥ तदुक्तं॥ काव्य॥चतुर्थकालेर्द्ध

चतुर्थमासकर्विहीनतां विश्वतुरष्टशेकरे ॥ सकार्तिके स्वातिषु कृष्ण
भूतस्कप्रभातसंध्यासमये स्वभावतः ॥ १ ॥ अघातकर्म्माणि निरु-
द्धयोगको विधूयघातिंधनवद्विबंधनः ॥ विबंधनस्थानमवाप संक
रौनिरंतरायोरुस्करवानुबंधनं ॥ २ ॥ सपंचकल्याणमहामहेश्वर प्र
सिद्धनिर्वाणमहेचतुर्विधैः ॥ शरीरपूजाविधिनाविधानतः सुरैः स-
मस्तार्च्यतसिद्धशासनं ॥ ३ ॥ ज्वलत्प्रदीपालिकयाप्रवृद्धया सुरासु
रैर्दीपितयाप्रदीप्तया ॥ तदास्मपावनगरीसमंततः प्रदीपनाकाशत
लाप्रकाशते ॥ ४ ॥ ततोस्तुथश्रेणिकपूर्वभूभुजप्रकृत्यकल्याणम-
हंसमप्रजा ॥ प्रजग्मुरिन्द्राश्च सुरैर्यथायथं प्रयाचमानाजिनबोधम-
र्थिणः ॥ ५ ॥ ततस्तुलोकः प्रतिवर्षमादरात्प्रसिद्धदीपालिकयात्र
भारते ॥ समुद्यतंपूजयितुंजिनेश्वरंजिनेंद्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभा

कु ॥ ६॥ याभांतिपूर्वोक्तवर्णनिकुंजानिकरिदीपकजोयप्रभुकी
आरतिसन्मुखउतारिकरिताकेदक्षांगधरना ॥ अरप्रभुकेवामांग
कीउरधूपदानधरना॥ तदुक्तं ॥श्रीउमास्वामीविरचितश्रावगाचा०
रे ॥ श्लोक॥ मध्यान्हेकुशमैपूजासंध्यायांदीपधूपयुक्॥वामांगे०
धूपदाहस्यदीपंकुर्याचसन्मुखी ॥१॥ अर्हंतादाक्षिणेभागेदीपस्य:
चनिवेशनं ॥ इतिवचनात् ॥ बहुरिएतेपूर्वोक्तप्रकारकथनकुंस्रणिक
रिकोईकऐसैभीकहैहैं॥जोतुमनैएतापरिश्रमकरिकहाकीया॥ह
मतोइसीपूर्वोक्तकथनमैंनाएकभीनमानैं२ हमारैभावहोयगासो०
करैंगे ताकुंकहियेरेभोलेतुमनमानैसोहमनैतेरैमनावनेऊपरिए०
तापरिश्रमनकीयाहैं॥हमनैतोआज्ञाप्रधानपुरुषकेसमुझिवेके०
अर्थिकीयाहैं॥अरतूंआपकेअर्थिसमझासोतेरेस्वभावकास्वरूप

कीमेटनैवालीऔषधिपूर्वविधनोनैंभीरचीनाहिहैं तोह मतैं कहामानेगा ॥ तदुक्तं ॥ मूर्खस्यनास्त्यौषधं ॥ बहुरिआचार्यकै वचनहीन माननातोआचार्यकी भी मान्यन भई ॥ बहुरिमान्यकै अभावकरिबडाअविनयभया ॥ यातैंअन्यसिद्धांतकैविषैंएसालिखाहै ॥ जोश्रीजिनवानीकापाठकअवारपंचमकालमैंआचार्यहै सोसाक्षात्केवलीकातोअवारअभावहै ॥ यातैंअवारपंचमकालमैं जोजिनवचनकेअध्यापककुंपूजेहै सोतानैसाक्षात्केवलीज्ञानीहीकुंपूजेजानना ॥ तदुक्तं ॥ पद्मनंदीपंचविंशतिकायांमूल ॥ काव्यछंद ॥ संप्रत्यस्तिनकेवलीकिलकलौत्रैलोक्यचूडामणिस्तद्वाचःपरमासतेत्रभरतक्षेत्रेजगद्योतिकाः ॥ सद्रत्नत्रयधारिणोयतिवरास्तासांसमालंबनंतत्पूजाजिनवाचिपूजनमतःसाक्षाज्जिनःपूजितः ॥

५०

१॥ यातैंजानैंआचार्यकाअविनयकीया॥ सोसाक्षात्केवलीकाअ
विनयकीया॥ कांहितैंजाकेश्रीजिनवानीकाअध्ययनहुतासोजिसतैं
जिसकाअविनयभया॥ बहुरिजोजिनकूंआचार्य्यकरिकल्यानमानैं
हैंसोअन्यशास्त्रनिमैंपापीऐसाकह्याहैं॥ताकाविशेषऐसैंजोजिन
वचनकाएकअक्षरकुं तथाचारअक्षरकुंअथवाअर्धाक्षरकाएकपद
कुं अपनैंगुरुजनतैंलेयकरिताकाउपकारकुंनमानैं ताकागुणकुंभू
लिजाय॥ तिसपापीकुंफोरिधर्म्मोपदेशदेनाकिसकेअर्थिहैं॥ भावा
र्थ॥ नदेना॥तदुक्तं॥ बृहद्धरिवंशे॥श्लोक॥अक्षरस्यापिचैकस्य
पदार्थस्यपदस्यवा॥दातारंविस्मरेत्पापीकिंपुनर्धर्म्मदेशनं॥१॥ उ
क्तंच॥ एकाक्षरप्रदातारंयोगुरुंनैवमन्यते॥स्वामीयोनिशतंगत्वा
श्वांडालसोपिजायते॥१॥ यातैंजाकेशास्त्रकेअक्षरकाहीगुणन० ५०

माननातोनाकूं बहुरिकहाधर्म्मोपदेशदेना ।। यातैंभोभ्रातहमकहा कहैहैं ।। इहांतुमकूं हिसमझनायोग्यहै ।। ऐसैंभ्रौरभीजिनागममैंठा र २ गंधविलेपनपुष्पदीपआदिकावर्णनपूर्वोक्तप्रकारकीयाहै सोथो- रीबुद्धिवालाकहांतकलिखै ।। विवेकीतौथोराहीमैंघणीजाणलेयहै ।। स्थालीस्तंदुलन्यायेन ।। बहुरिप्रभुकेवामांगधूपखेवनासोधूप- पूजाहैं ।। इहांधूपकूंथायकारिपूजाकीयालभ्रादिमंडपपैंगेरनानाहि कह्याहै धूपकूंतौअग्निविषैंहीडारनायोग्यहैं ।। बहुरिजोनडारैंहै सो धूपपूजाकुंनपावैहै ।। यातैंनानाप्रकारकेबावनचंदनादिसुगंधद्रव्य- काचूर्णकीधूपखेवनासोधूपपूजाहैं ।। तदुक्तं ।। काव्य ।। श्रीखंडादि द्रव्यसंद्रव्यगर्भैरुद्यद्धूमामोदितस्वर्गवर्गैः ।। धूपैपापव्यापद्युच्छेदहस्ता नार्ह्न्हिनर्हत्स्वामिनाधूपयामि ।। १ ।। तथैवोक्तं ।। वणारसिदासेन ।। दो

हा ॥ पावकदहैसुगंधकुं धूपकहावतसोय ॥ खेवनधूपजिनेशकुं अ
ष्टकर्म्मक्षयहोय ॥ १ ॥ तथाचोक्तं ॥ देवशुनगुरुसमुच्चयपूजायां ॥ का
व्य ॥ दुष्टाष्टकर्म्मेंधनपुष्टजालसंधूपनेभासुरधूमकेतून ॥ धूपैर्विधू
तानिसुगंधगंधैर्जिनेंद्रसिद्धांनियतीन्यजेहं ॥ २ ॥ इत्यादिकसर्वत्र
रधूपकुंअग्निविषैखेवणाइलिखाहैसोहीकरना ॥ अरमंडपआदि
विषैंधायकरिक्षेपणानाहिं ॥ बहुरिऐसैनकरिये ॥ अरपूजाहीमैंधो
यकरिचढाइयेतोखेवणाकाहियकूंबोलिये ॥ तथासुगंधदशमीआ·
दिकैदिनभीअग्निविषैंनडारिये ॥ उहांभीधोयकरिआगेधरिये ॥ या
नैंआम्नायपूर्वककर्तव्यताहीफलिनहोयहैं ॥ बहुरिनानाप्रकारकैसु
स्वादिष्टसुगंधितमनोज्ञफलकुंप्रभुकेआगेधरियेसोफलपूजाहै ॥ ५१
तदुक्तं ॥ भैय्याभगवतिदासकृतब्रह्मविलासकेकवितछंदनफलपू

जावसरे ॥ भाषा ॥ श्रीफलरूपारीशेवदारिमविदामभेवसी-
नाफलसंगनरासरूधसदाफलहैं ॥ विहोनासपतिऔविजो
राआमृअमृतसेनारंगीजंभीरकर्णफलजेकमलहैं ॥ ऐसेफल
शुद्धआनिपूजियेजिनेंद्रजानितिहुंलोकमांहिजेमहाशकुन
कोयलहैं ॥ फलसेंनिपूजेशुद्धमोक्षफलप्राप्तिहोइ ॥ द्रव्यभाव
पूजैसुरवसंपत्तिअचलहैं ॥ १ ॥ बहुरिप्रभुकेआगेअक्षतका-
पुंजकरियेसोअक्षतपूजाहैं ॥ बहुरिप्रभुकेआगेनागवल्लिकेप
त्रधरियेसोपत्रपूजाहैं ॥ याकीचर्चाभीपुष्पवत्जाननी ॥ बहुरि-
प्रभुकेआगेपूगीफलजोकेवलरूपारीधरिये सोपूगीफलपूजा
हैं ॥ बहुरिप्रभुकेआगेयथाविभवनानाभांतिकेपक्वान्नआदि-
दालिभातबहुरिव्यंजनादिरूरसरूस्वादुमहातृप्तिकारीभोज-

नादिचरुधरियेसोनैवेद्यपूजाहैं ।। याकाविशेषवर्णनषट्कर्म्मोपदे
शरत्नमालादिकजिनशास्त्रनितैंजानना ।। बहुरिजिनेंद्रकैआगेभृं
गारनालोद्भवजलकीतीनधारादीजिये सोजलपूजाहैं ।। तदुक्तं ।।
काव्य ।। धारात्रियंददतुजन्मजरायुहानी ।। बहुरिप्रभुकेध्वजाचं
द्रोपकआदिकार्यविषैं तथाताकाशरीरकेपूंछिवेविषैंनानाप्रका
रकेवस्त्रदीजियेसोवस्त्रपूजाहैं ।। बहुरिउज्जलरूपेतचमरीकेच
मरप्रभुकेउपरिढुलावैसोचामरपूजाहैं ।। बहुरिप्रभुकेशिरऊपरि
स्वेतछत्रधरिये सोछत्रपूजाहैं ।। बहुरिप्रभुकेआगेनानाप्रकारके
वंशुरीतालमृदंगभेरीढोलदमामावीणआदिवादित्रनिकुंबजाइये
अथवाजिनमंदिरमैंवणायकरिधरियेसोवादित्रपूजाहैं ।। बहुरिप्र
भुकेआगेताकेगुणानिकावर्णनरागोच्चारनैगायकरिकरियेसोगी

ननामापूजाहैं॥ बहुरिप्रभुकेआगेनिर्विकारभावनितेंनृत्यकरिये
सोनृत्यपूजाहै॥ बहुरिप्रभुकेआगेताकेपंचकल्याणआदिनानाप्रका
रकेमंडलकीरचनामांडिकरिताकीपूजाकरियेसोस्वस्तिकनामापू
जाहै॥ बहुरिप्रभुकेभंडारविषैयथाशक्तिद्रव्यधरियेसोकोषपूजा
है बहुरिप्रभुकेआगेगहीरतदोबधरियेसोदोबपूजाहै याकीभीचर्चाफूलवत्जा
ननी ऐसेंइकवीसभेदकरितथाइनिशिवायअपनीभावनिकेआधीनअन्यभे
दनकरिश्रीजिनराजकीपूजाकीविधिकरनी। ऐसेंश्रीउमास्वामिनेंकहीहै इहां
सुरहगऊनिकेपूंछिकेबालकेचमरनकेकोईसदेहकरै ॥ ताकूंकहियेहै ॥
याकीअस्थिदूरकरिकेवलवालनिकुंधोयगूंथिकरिचमरकरनानिर्दो
षहै॥ बहुरिजोवालनिकाभीदोषमानियेतौजैनमतविषैदूसराका
ष्टसंघभयाहैं॥ ताकौगोपूंछिकीपीछिकाकानिरूपणकीयाहै॥ सो

कैसैंकीयाहै॥बहुरियहभीनमानियेतो श्रीमूलसंघविषैंभीम
यूरपीछिकामुनिजनअपनेहस्तविषैराखैहैं॥सोभीकैसैंहीहैं॥
ताकुंश्रीजिनमंदिरविषैवंदनासमयप्रतिलेखनानिमित्तलेयजाय
है॥ताकेहस्तवारुंवारलगैहै सोभीवारुंवारधोवैनाहिहैंतोअले
नकैसैंहै॥बहुरिरेसमकेवस्त्रादिकेशास्त्रनिकेबंधनाआदिहो
यहैं॥अरजिनमूर्तिकेनिकटचंद्रोपकपडदाआदिहोयहै॥तथा-
पूजाकेविषै सरस्वतीकीपूजाविषैंचहोडनालिखाहै॥बहुरिता
कीमालाएमोंकारजपनेकैअर्थिकहीहै॥तोचमरकहाअलीनहै
बहुरिचामरपदकाअर्थभीचमरीगायनिकेकेशकाहीहोयहै॥अर
जहिंतहिंशास्त्रनिमैंस्वेतहीचमरकह्याहैं॥कोईवस्त्रकेलालआदि
रंगकैंचमरस्कैनेनाहिंहै॥यानैंपूर्वोक्तहीयोग्यहै॥इहांफेरिकोईकं

है॥ वस्त्रनिकैचमरनस्कनैनतोगायनीकैभीतोनालिखेहै॥ ताकुंकहि-
येहै॥ भगवज्जिनसेनाचार्यनैश्रीआदिपुराणविषेलिखेहै॥ तदु
क्तं॥ श्लोक॥ विद्युज्योतिगणैर्नवराजकैर्नविराजनम्॥ स्वकीर्त्तिनि
र्मलैर्वज्जमानंचरिमजन्मभिः॥१॥ तथाऔरभीशास्त्रनिमेलिखा
हैं॥ यातैंशास्त्रोक्तहीश्रद्धानकरनायोग्यहै॥ बहुरिएहीपूर्वोक्तइ कई
सभेदपूजाकेकह्येसोहीयामतकैर्नोकेपाठांनरकारिपुन्यापार्जनके
कारणजिनमंदिरमेंभव्यजीवनिकेपुन्यकाकारणश्रीपद्मनंदीस्वा-
मिनेभीपद्मनंदीपंचविंशतिकाविषेकह्याहै॥ तदुक्तंकाव्य॥ यात्रा
भिःस्नपनैर्महोत्सवशतैःपूजाभिरुल्लोचकैः नैवेद्यैर्वलिभिर्ध्वजैश्चक-
लशैस्तूर्यत्रिकैर्जागरैः॥ घंटाचामरदर्पणादिभिरपिप्रस्तार्यशोभां
परांभव्याःपुण्यमुपार्जयंतिसततंसत्यत्रचैत्यालये॥१॥ ऐसेंपूजन

विधानकास्वरूपजानना॥ ॥इतिपूजनविधानम्॥ ॥आगेषट्
ट्प्रकारकापूजाकास्वरूपकहैहै॥ गाथा॥ णामट्ठवणादव्वेखि
त्तेकालेवियाणभावेय॥ छव्विहपूयाभणियासमासउजिणवरि
देहिं॥१॥टीका॥नामस्थापनाद्रव्यक्षेत्रकालज्ञायतेभावपूजाष-
ट्प्रकारपूजाभणितासंक्षेपतः॥जिनवरेंद्रैःकथिता॥२॥ अर्थ॥
नामपूजा१स्थापनापूजा१द्रव्यपूजा१क्षेत्रपूजा१कालपूजा१
भावपूजा१ ऐसेंश्रीजिनवरेंद्रकरिकैकथितपूजासंक्षेपतेंकहीहै
॥सोछहप्रकारकीजानना॥ आगेयाकापृथक्२स्वरूपकहितसं
तेनामपूजाकूंकहैहैं॥ गाथा॥उच्चारिऊणणामंअरुहाइणंविसु
द्धदेसम्मि पुप्फाणिजंखिविज्जंतिविणियाणामपूयासा॥१॥ टी-
का॥उच्चारंक्रीयतेयत्नामानंअर्हतादीनांविशुद्धक्षेत्रेपवित्रस्थाने

पुष्पाणियत्क्षेपयंतिसावर्णितानामपूजा ॥२॥ अर्थ ॥ जोश्रीअर्हं
तादिकेनामोच्चारकुंकरिनिर्म्मलक्षेत्रविषैंपुष्पनकुंक्षेपनकरैहैंसोना
मपूजाकहिहैं॥ भावार्थ ॥निर्मलभूमिविषैं श्रीअर्हंत तथाआदिश
ब्दतें सिद्ध १ आचार्य १ उपाध्याय १ सर्वसाधु १ तथासरस्वती १ आ
दिकानामलेयकरिपुष्पांजलिक्षेपणकरैसोनामपूजाकहीहैं ॥जा-
कानामलेयपुष्पचढ़ावै ताकीनामपूजाहैं॥ इतिनामपूजा ॥ आगें
स्थापनपूजाकादोयप्रकारकास्वरूपकहैहैं ॥ गाथा ॥सब्भावास-
ब्भावादुविहाइवणाजिणेहिंपणतासायारवंतवत्थुम्मिजंगुणारोव
णपढमा ॥२॥ टीका ॥ सद्भावासद्भावाद्द्विविधास्थापनाजिनेनभ
णितासाकारवत्तिपदार्थेस्थापणीदोयत्गुणारोपणंसाप्रथमासद्भा
वा ॥२॥ अर्थ ॥ सद्भाव १ बहुरिअसद्भाव १ ऐसैदोयविधिस्थापना

श्रीजिनेंद्रकारिकहिहैं॥ सोतामेसाकारवंतपदार्थजोस्वर्णआदि·
विषैंजाकैगुणनिकाआरोपणकरियेसोसद्भावनामाप्रथमस्थाप
नाहैं॥ भावार्थ॥ स्थापनाकेदोयभेदश्रीजिनेंद्रकीरकत्याहैसो·
ताकैविषैजोअर्हंतादिककेगुणनिकाआरोपणस्वर्णआदिपदा
र्थजोस्वर्णरौप्यरत्नपाषाणतथापैनलआदिधातुविषैंकरिता
कीमूर्तिकरियेसोप्रथमसद्भावनामास्थापनाहैं॥ याहीकानामसा
कारहै तथानदाकारहै॥ आगेअसद्भावनामादूसरीस्थापनाका·
स्वरूपकहेहैं॥ गाथा॥ अक्खयवराडऊवा अमुगोएसत्तिणिय
बुद्धिए॥ संकप्पिउणवयणं॥ एसाविणेयाअसद्भावा॥१॥ टीका॥
अक्षतत्वावराटकाएषसएवइतिनिजबुद्ध्यासंकल्पित्वावचनमुच्चा
र्यते॥ एषावर्ण्णिताअसद्भावाःद्वितीया॥२॥ अर्थ॥ अक्षतअरवरा

टकाकहियेकमलकेफलनिकुंअपनीबुद्धितेसंकल्पकरिताका-
वचनतैंनामकाउच्चारकरै ॥ जोयहफलानातीर्थंकरआदिदेवन-
थाशास्त्रवागुरुहै ॥ ऐसानामलेयअक्षतादिकुंउच्चस्थानपरिस्था
पिकरिपूजे सोदूसरीअसद्भावनामास्थापनाकहीहै ॥ भावार्थ
॥ अक्षततथाकमलगटे अथवापुष्पआदिकुंमंत्रपूर्वकतीर्थं-
करादिदेवतानिकानामलेयताकुंउच्चास्थापिकरिताकुंपूजनासो
असद्भावनामास्थापनाकहीहै ॥ याकानामनिराकार तथाअत-
दाकारभीहै ॥ बहुरिकेतेकिसद्भावअरअसद्भावकुंऐसेकहेहै ॥
जोसाक्षात्तीर्थंकरकेवलीसमोसरणमैतिष्ठैहै सोतोतदाकारहै
॥ अरताकीप्रतिमाअतदाकारहै अरताकीपूजाभीतदाकारअ-
तदाकारहै ॥ यातैंजैसेश्रीऋषभनाथकीदेहकीउच्चतातोपंचसैध-

नुष्यकीहैं॥ अरसंतमरकतवर्णसमानरंगहैं॥ अरनाकीप्रतिमाकहिं
नोएकांगुलकीहैं॥ अरस्यामवर्णकीतथास्वेतअरक्तपीतहरितआ
दिरंगकीहैं॥ अरकहींहस्तविलासितआदिनानाप्रकारकीउच्चताते-
लीयांविराजैहैं॥ औरजाकेकर्णस्कंधकेसंमिलितआदिअन्यरूप
दीखैहैं॥ तथाऐसैंहीअन्यतीर्थंकरादिकीमूर्तिसाक्षात्तीर्थंकरके
आकारतैंनिकसतीरूपदीखैहैं॥ तिसतैंजिनमूर्तिअतदाकारहैं॥ अर
साक्षात्जिनतदाकारहैं॥ ऐसैंअपनेमनहीतैंपूर्वोक्तमानैहैं॥ सोए
सामाननामिथ्याहैं॥ शास्त्रविरुद्धहैं॥ यातैंमन्यमान्यभावछोरिशा
स्त्रोक्तमाननाभलाहैं॥ ऐसैंदोयप्रकारकीस्थापनाकास्वरूपश्रीजि
नेंद्रकरिकह्याहैं॥ वहुरिइहांकोईपूछै॥ वराटकपदकानामतौक
पर्द्दीकाकहियेकौडीकानामहैं॥ अरउपरिवेगरटकनामकाअर्थकम

लकेफलकालिखासोकैसेहै॥ ताकाउत्तर ॥वराटकशब्दकाअर्थकौडी
कातोप्रसिद्धहीहैं॥सोइहांपूजनमेंसंभवैनाहिं॥अयोग्यहै॥स्प-
र्शयोग्यभीनाहिहै॥यहतोद्वीयइंद्रीजीवकाकलेवरकाहाडहै॥सो
इहांयहअर्थवनेनाहिं इहांतोकेवलबीजकाहीअर्थवनेहै॥सोही
कोषनिमेंलिखाहै॥ तदुक्तं ॥हेमिनाममालायां ॥ कमलकीकीर-
एकानाम वीजकोषोवराटकः॥ तथाचोक्तं॥ अमरकोशेप्रथमकां-
डांतकेश्लोकपूर्वोक्तहीहै ॥यातैंवराटकशब्दकाइहांकमलकेफल
हीकाग्रहणकरना कौडीनलेना ऐसेंअसद्भावस्थापनाकास्वरूप
कह्या ॥आगेइसअसद्भावस्थापनाकाकरनाअवारवर्जैहै॥ गा-
था ॥हुंडावसप्पिणीएविइयाठावणाणहोइकायव्वो॥लोएकुलिं
गमयमोहियंजदाहोयसंदेहो॥ टीका ॥हुंडावसर्प्पिणीकालवि

भ·म· तीयास्थापनानभवतिकर्तव्यताकस्माल्लोकेकुलिंगेमतमोहिता खंड·
५७ यदाभवंतितस्मान्निःसंदेहो॥१॥ अर्थ॥ अवारइसहुंडावसर्पि
णीकालमेंयहपूर्वोक्तप्रकारकीअसद्भावनामादूसरीस्थापनानहो
यहै॥यातैंनकरनीकिसनैंनकरनीसोकहहै॥अवारलोकमेंकुलिं
गीविषैंजोमुनिमोहितहोयजायतातैंनकरनी यहनिःसंदेहहै॥
भावार्थ ॥अन्यमतविषैंभीअसद्भावस्थापनाकरैहैं॥सोउनिकीसी
एकरीतिदीखनैलगिजाय॥लोकनिमेंभ्रमरूपप्रवर्तनाहोयजाय
॥यातैंसद्भावस्थापनाहीकरनी॥अरअसद्भावस्थापनानकरनी॥
यहआचार्यनिकीआज्ञाहै॥ आगेपूर्वकथितजोपहिलीसद्भावस्था
पनातोकास्वरूपकूंविशेषकरिकहैहै॥ गाथा ॥कारावणिंदपडिमा ५७
पइट्ठलक्खणविहिफलंचेवणएपंचअहियाराणायव्वापढमठवणाए

॥ टीका ॥ कारापकेंद्रप्रतिमाप्रतिष्ठालक्षणविधिफलंचएवएतेपंचा
धिकाराः॥ज्ञातव्याप्रथमस्थापनायाः॥१॥ अर्थ ॥ कारापककहिये
प्रतिमाकाकरावनेंवालापुरुष १ इंद्रकहिये प्रतिष्ठाकाकरावनेवाला
१ प्रतिमाकहियेऋषभादिमहावीरपर्यंतचतुर्विंशतितीर्थंकरआदि
कीप्रतिमा १ अरप्रतिष्ठाकालक्षिणिकीविधि १ बहुरिताकाफल १
ऐसेसद्भावनामापहिलीस्थापनाकेंयहपंचभेदजानना ॥ इहांकोईक
है ॥ श्रीतीर्थंकरकीप्रतिमातोप्रसिद्धहीहै ॥परंतुओरइनिसिवाईकें
नकीहैयातेंतीर्थंकरआदिकीप्रतिमाकही॥ ताकाउत्तर ॥बाहुबलीआदिअन्य
केवलीकीभीहोयहैं॥ सोबाहुबलीकीप्रतिमालोकनादिकदेशाविषेंप्रसि
द्धविराजेहैं॥ ताकुंगोमट्टस्वामिकहेंहै॥ बहुरिअन्यजिनमंदिरविषेंभीहो
यहैं॥ औरसंजयनस्वामीकीप्रतिमाधरणेइकीआज्ञातेंविद्याधरो

नवणायनाकीपूजाकरी ॥ अरमृगध्वजकेवलीकीमूर्तिवणायका
मदेवसेठनेपूजी ॥ ऐसावर्णनबृहद्‌हरिवंशमेंलिखाहै ॥ औरश्रीपंच
परमेष्ठीकीप्रतिमाकुंभीश्रीगोमट्टसारकेजीवकांडकेआदिविषेसं॰
स्कृतटीकाकारनेनमस्कारकीयाहैं॥ तदुक्तं ॥ तत्रनाममंगलाईंन्
सिद्धाचार्योपाध्यायसाधूनांनामस्थापनामंगलंकृतिमाकृतिमांजि
नादीनांप्रतिबिंबं इत्यादिवर्णनहै ॥ यानेंश्रीजिनलिंगसर्वत्रपूजेहै
॥ आगेपूर्वोक्तकारापकादिपंचभेदनिकेपृथक् २ भेदनिकुंकहिते
संतेप्रथमकारापककास्वरूपकहेहैं॥ गाथा ॥ भाग्गवस्थलपहा
वणा खमासच्चमद्दवोवेदा जिणसासणगुरुभत्तो ॥ सुतेकारावउ
भणिउं ॥ १॥ टीका ॥ भाग्यवंतोवात्सल्यप्रभावनाक्षमाशक्तिमार्द॰
वोपेतः ॥ जिनशासनगुरुभक्तोभवतिशास्त्रेकारापकः इदृशोभणि

त्तः॥१॥ अर्थ ॥श्रीजिनबिंबकाकरावनेवालाप्रथमतोभाग्यवंतहो
य॥१॥ बहुरिवात्सल्यअंगकाधारीहोय १ अरप्रभावनागुणकाधा
रीहोय १ बहुरिक्षमावानहोय १ अरशक्तिवान्होय १ तथादूस
रेपाठमेंसत्यवनीकाभीपदआयाहैं॥सोसत्यवादीहोयहे १ बहु
रिमार्दवनामागुणकरिमंडितहोय १ बहुरिश्रीजिनशासनकाअर
गुरुकाभक्तिवंतहोय॥१॥ऐसेंगुणनिकरिसंयुक्तपुरुषशास्त्रविषें
कारापककह्याहैं॥ भावार्थ ॥यहपूर्वोक्तकारापककेलक्षणकहे
सोयाविनाकारापकनशोभेहैं॥यातैंभाग्यवंतविनाकहाकरिशके॥
बहुरिवात्सल्यांगनहोयतोजिनमूर्तिकाकरावनाहीनवणेसदेवक्रू
रभावरहे॥बहुरिप्रभावनाभावनहोयतोयामेंप्रभावनाकैसेकरे॥
बहुरिक्षमावाननहोयतोक्रोधकेवशिहोयतिसकार्यविषेजन२सूं

कलहकरवैकैरै तवक्रोधहोवैनैंकार्य्यकाविनाशहोय ॥ बहुरिश-
क्तिवान्नहोयतोयहमाहानकार्य्यद्रव्यविनाकैसेकरै ॥ तथासत्यवा-
दीनहोयतोफूटैकूंयहकार्य्यशोभैहीनहीं ॥ अरुवणैभीनाहीं ॥ ब-
हुरिमार्दवगुणजोकोमलभावनहोयतोअभिमानीकठोरभावकीये
यहकार्य्यवणैहीनाहिं ॥ यातैपूर्वोक्तगुणनिकरियुक्तहीकारापक-
कहिये जिनबिंबकाकरावनेवालाश्रेष्ठहै ॥ ऐसेकारापककावर्ननकी-
या ॥ इतिकारापकलक्षणम् ॥ आगेंइद्रकहियेप्रतिष्ठाचार्यका
लक्षणकहैहैं ॥ गाथा ॥ देसकुलजायसुद्धाणिरूवमांगोविसुद्धस
मतोपढमाणिऊसकुसलोपयद्वलक्कणविहिंविदाण ॥ १ ॥ सावय
गुणाववेहोउववासयऊयणसत्यथिरबुद्धीएवगुणोपइट्ठाइंरिऊजि
णसासणेभणिउ ॥ २ ॥ टीका ॥ देशकुलजात्यादिकेनशुद्धः ॥ नि

रूपमागोविशुद्धसम्यक्तप्रथमानुयोगः कुशलः पुनः प्रतिष्ठालक्ष
णविधिंवेत्ता ॥३॥ श्रावकगुणैः उपेतः उपाशकाध्ययनांगशास्त्रेस्थि
रबुद्धीः अमुनाप्रकारेण प्रतिष्ठाचार्योजिनशासनेकथितः ॥४॥ युग्मा
र्थ ॥ इहांकहियेप्रतिष्ठाचार्यकेलक्षणकहेहैं ॥ प्रतिष्ठाकरनेवालाआ
चार्यप्रथमतोदेशकारिकुलकारिआदिशब्दतैंकीयाचरणकरिशुद्धहो
य ॥ बहुरिउपमारहितरूपवानशरीरकरिसंयुक्तहोय ॥ बहुरिविशु
द्धसम्यक्तकहियेनिरतिचारसम्यक्तकरिसंयुक्तहोय ॥ बहुरिप्रथमा
नुयोगकहिये त्रीषष्ठीसलाकेपुरुषोंद्धवतथाएकशतकगुणहेनरपुरु
षोद्धवजोपौराणग्रंथकाजाणवैमैकुशलहोय ॥ बहुरिजिनप्रतिमादि
ककीप्रतिष्ठाकीविधिकेशास्त्रताकरिउक्तजोविधिकावेत्ताहोय ॥
॥ बहुरिश्रावककेगुणनिकरिसहितहोय ॥ बहुरिसातमाउपाशकाध्य

 यन नामा आंगजा मैं एक निःकेवल श्रावगधर्म का वर्णन है ॥ ताके वि
षैं तथा ताकै अनुसार श्रावगाचार शास्त्र वर्णै है तामैं थिर बुद्धी होय
॥ ऐसै पूर्वोक्त प्रकार गुणनि करि मंडित पुरुष है सो जिनशासन विषै
प्रतिष्ठाचार्य कह्या है ॥ भावार्थ ॥ यह पूर्वोक्त लक्षण करि युक्त पुरु
ष ही प्रतिष्ठाचार्य जिनशासन मैं कह्या है ॥ इनि विना अन्य न कह्या है
॥ यातैं जाका अनार्य देश का लथा होय एकुलका ॥ बहुरि शूद्र जातिका
जन्म होय सो प्रतिष्ठा करिवै योग्य नाहिं है ॥ बहुरि आर्य्य देश उत्तम
कुल त्रिवर्ण की जातिका उपज्या होय अरु क्रीया चरण करि शुद्ध न होय
तो वह भी योग्य नाहिं है ॥ बहुरि जाका शरीर कुरूपी होय सो भी इस
महान कार्य विषैं न शोभे ॥ यातैं ऐसा विडरूपी न होय ॥ बहुरि जाकै
निरतीचार सम्यक्त न होय तो मिथ्यादृष्टी पुरुषनि करि प्रतिष्ठा होय

नाहिंहैं॥ बहुरि प्रथमानुयोगशास्त्रका वेत्ता न होय तो प्रतिष्ठादिनिके
जानपना विना कैसे करै॥ बहुरि जिनबिंबके प्रतिष्ठाके शास्त्रकी विधि
का यथोक्त वेत्ता न होय ताकी विधिकी कर्तव्यता — ताकुं यादि न हो
य तो प्रतिष्ठा कैसे करै॥ बहुरि श्रावगके गुण न होय तो अन्य कुधर्मवा
ला तो इहां योग्य है ही नाहिं॥ बहुरि उपासकाध्ययनागादि श्रावगाचा
र विषै थिर बुद्धि न होय तो इहां अन्य मनके नानाशास्त्रनिके पढिवे तैं
कहा प्रयोजन सधै है॥ यातै पूर्वोक्त गुणनिकरि मंडित पुरुषही प्रतिष्ठा
के करिवे विषै योग्य है॥ अन्य योग्य नाहि है॥ इति इंद्रलक्षणम्॥ ॥
आगै प्रतिमाका लक्षण कहै है॥ ॥गाथा॥ मणिकणयरयणरुप्पयपि
त्तलमुत्ताहलोवलाइहिं॥ पडिमालक्खणविहिणा जिणाइपडिमं घ
डाविज्जा॥ १॥ टीका॥ मणिकांचनरौप्यमयपैतलमुक्ताफलोपलादि

पाषाणैः॥प्रतिमालक्षणविधिनाजिनादिकाराप्यते॥१॥ अर्थ ॥
मणिकहियेहीराआदिनवरत्नकी॥बहुरिकांचनकहिये सुवर्णकी
बहुरिरूपाकी बहुरिपीतलकी बहुरिमोतीकी बहुरिअन्यश्रेष्ठपा
षाणकी तथाआदिशब्दतैलोहआदिधातुकी तथाचित्रलेपादिक
कीप्रतिमाकैलक्षणकी विधियुक्तजिनादिकहिये श्रीतीर्थंकरआ
दिजिनलिंगकीप्रतिमाकरावणी॥ भावार्थ ॥जोशिल्पिशास्त्रोक्त
प्रतिमाकेलक्षणहै ताकरिसंयुक्त तथाप्रतिष्ठापाठोक्तप्रतिमापू
र्वोक्तप्रकारकीहीराआदिकहिये वज्रमाणिक इंद्रनीलमणी गोमे
द लहसणिया पुष्पराज मुंगा मोतीआदिरत्ननिकी तथासोनारू
पाकी तथापेतलतथा लोह ताम्रआदिधातूकी अरपाषाणकीप्र
तिमातीर्थंकरादिकीकरनी सोप्रतिमाकेलक्षणहैं॥इहांप्रतिमा

करदेदी।।क।।किंचिन् वर्णनकैं श्लोक अन्यशास्त्रनितैं लिखियेहैं।। उ
क्तंच ।। श्लोक ।। सुमुहूर्त्तेसुनक्षत्रेवाद्यवैभवसंयुतः ।।प्रसिद्धपुण्यदे
शेषुनदीनगवनेषुच ।।१।। स्निग्धांकठिनांसीतांस्वादांसुस्वरां
शिलां ।।समानीयजिनेंद्रस्यबिंबंकार्य्यंसुशिल्पिभिः।।२।। कृषादिरो
महीनांगश्मश्रुरेषाविवर्ज्जितम् ।।स्थितंप्रलंबितहस्तंश्रीवत्साद्यंदि
गंबरं ।। ३।। पल्यंकासनवाकुर्याच्छिल्पिशास्त्रानुसारतः।।निरायुधं
चनिःस्त्रीकंभ्रूक्षेपादिविवर्ज्जितं।। ४।। निराभरणकंचैवप्रफुल्लव
दनाक्षिकं।। सौवर्णंराजतंवापिपैतलंकांस्यजंतथा ।।५।। प्रवालंमौ
क्तिकंचैववैडूर्यादिसुरत्नजं।। चित्रजंचतथालेप्यंक्वचिच्चंदनजंमतं
।।६।। प्रातिहार्याष्टकोपेतंसंपूर्णावयवंशुभं।। भावरूपानुविद्धांगं
कारयेद्बिंबमर्हतं।। ७।। प्रातिहार्य्यैर्विनाशुद्धंसिद्धबिंबमपीदृशं।।

सूरीणांपाठकानांचसाधूनांचयथागमं ॥ ८ ॥ वामेचयक्षींबिभ्राणं
दक्षिणेयक्षमुत्तमं ॥ नवग्रहानधोभागेमध्यचक्षेत्रपालकं ॥ ९ ॥
यक्षाणांदेवतानांचसर्वालंकारभूषिता ॥ स्ववाहनाफलोपेतंकुर्या
त्सर्वांगसुंदरं ॥ १० ॥ इत्यादिकवर्णनकरिसंयुक्तप्रतिमाकरनी ॥
बहुरिइनितैंभीविशेषवर्णन प्रतिष्ठापाठ तथाशिल्पशास्त्रनिमें
हैंतिहांतेंजानना ॥ इहांकोईकहै ॥ लोहकीप्रतिमाऊपरलिखी
सोकहांकहिहै ॥ ताकाउत्तर ॥ प्रबोधसारग्रंथमेंकहीहै ॥ तदुक्तं
॥ श्लोक ॥ तन्नामस्थापनाद्रव्यभावादितिविभेदतः ॥ रत्नधातु
शिलालोहलेपाद्यौन्यासंसंभवः ॥ १ ॥ इतिप्रतिमालक्षणं ॥ ॥
आगेप्रतिष्ठालक्षणविधिकहैहैं ॥ गाथा ॥ बारहअंगगिज्जा॰
दंसणतिलयाचरित्तवत्थहराचोदहपूव्वाहरणाइंठवेयव्वायस्स॰

यदेवी ॥ २ ॥ अहवाजिणागमपुत्थएसुसम्मलिहाविऊणतऊसु
हतिहिलग्गमुहुत्ते ॥ आरंभोहोयकायव्वो ॥ २ ॥ टीका ॥ द्वादशान्यं
गानियेषामंगायसांगदर्शनरेवतिलक चारित्रएववस्त्रधराचतुर्दश
पूर्वाभरणायस्यामेनादृशाश्रुतदेवीप्रतिष्ठास्थाप्यते ॥ ३ ॥ टीका ॥
अथवाजिनागमपुस्तकेषुसम्यक्‌प्रकारेणलिखापयित्वाशुभतिथि
लग्नशुभमुहूर्त्तेआरंभोभवतिकर्त्तव्यतां ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ प्रथमप्रति
ष्ठाकाआरंभकेविषें द्वादशांगरूपहैं ॥ अंगकहियेशरीरजाकाअ
रसम्यक्‌दर्शनरूपहैतिलकजाकै बहुरिचारित्ररूपीहिहैं वस्त्रका
धारणजाकै ॥ बहुरिचतुर्दशपूर्वकाहैआभरणजाकै ऐसीश्रुतदे
वीकहिये सरस्वतीताकूंप्रथमप्रतिष्ठाविषैबडाविभवकहिये ॥ उत्स
वतैस्थापनकरनी ॥ ॥ अथवापूर्वोक्तप्रकारसरस्वतीकीमूर्त्तिन·

होयतो ताकै अभावऊपरि जिनागमकुं पुस्तकविषैं लिखायकरिशु
भतिथिशुभलग्नशुभमुहूर्तमें आरंभहोय सोकरना ॥ भावार्थ
॥ श्रुतदेवीकीमूर्तिकै अभावऊपरि श्रीजिनागम कहिये जिनसि-
द्धांतादिकशास्त्रकुं हीशुभतिथिआदिविषैं पूज्यमस्थापिकरिप्र-
तिष्ठाकोआरंभकरनो ॥ गाथा ॥ अट्ठदसहत्थमत्तं भूमिसंसो-
हिऊणजइणागतस्सुवरिमंडउपुणकायव्वोतप्पमाणेण ॥ १ ॥
टीका ॥ अष्टादशहस्तमात्रे भूमिसंशोधियित्वायत्नात् ॥ तस्योप
रिमंडपोकर्त्तव्यः पुनकर्त्तव्यतत्प्रमाणेन ॥ अर्थ ॥ अष्टादशक
हियेअठारहहाथप्रमाणभूमिकासम्यक्प्रकारयत्नाचरणथकीसो
धिकरि बहुरितिसभूमिकाऊपरिमंडपकरना ॥ बहुरितिसभूमि ६३
काप्रमाणकरि औररचना तिहांकरनीसोगाथाकरिकहैहै ॥ गाथा

चउतोरणचउदारो वसोहिउविविहवत्थकयभूसोधुवंतधयवडाउ-
णाणापुप्फोवहारड्ढो ॥ १॥ टीका ॥ चतुःतोरणचतुर्द्वारेणपशो-
भितः विविधवस्त्रेणकृतभूषाधुवंतध्वजपताकास्फुरिताध्वजानाना
प्रकारेणपुष्पानांसमूहानापूर्णा ॥ १॥ अर्थ ॥ तिसमंडपकीभूमि
काचतुर्तोरणकरिशोभितचतुर्द्वारकरिशोभायमानहैजिहां ॥ बहु-
रिनानाप्रकारकेवस्त्रकरिशृंगारितफुरकैहैध्वजातथापताकानिहां
बहुरिनानाप्रकारकेपुष्पांकेसमूहकरिपूर्णहैशोभाजिहां ॥ बहुरि
गाथा ॥ लंबंतकुसुमदामोवंदणमालाहिभूसियदुवारोदारुवरि
उयकोणेसुपुण्णकलसेहिरमणीउ ॥ १॥ टीका ॥ लंबितपुष्पमाला
पुनः वंदनमालाभिः भूषितः द्वारोयस्यांभूम्यांद्वारोपरिउभयकोणेसं
पूर्णकलसैःरमणीकः ॥ १॥ अर्थ ॥ बहुरिलंबायमानहैपुष्पनि-

कीमालाजिहां बहुरिवंदनमालाकरिशोभायमानहैजाकेद्वारकी-
भूमिकाजिहां॥ बहुरितिसद्वारकेऊपरिदोऊकोणमैसंपूर्णकलश
हैरमणीकजिहां॥ गाथा ॥ तस्सबहुमझदेसेपइट्ठसत्थाम्मिवुत्त
माणेण॥समचउरंसंपीढ्ठसवत्थसमंचकाउण॥१॥ टीका ॥ तस्य
मंडपस्यमध्यदेशेप्रतिष्ठाशास्त्रोक्तमानेन समचतुरस्त्रंसमपीठस
वेत्रसमंचकृत्वातंपीठं॥२॥ अर्थ ॥तिसमंडपकेविचलेप्रदेशविषैं
प्रतिष्ठाशास्त्रोक्तप्रमाणकरिकेसमचतुरस्त्रकहिये समचतुष्कचोंतरा-
कैआकारवेदिकाचोकूंठीकरनी॥गाथा ॥चउसुविदिसासुतोर
णमालोववेददाराणि॥छन्नावत्ताणितहांदिट्ठाणिरईउणकोणेसु
॥१॥टीका॥चतुर्षुविदिशासुतोरणपंक्तौपेतद्वाराणि॥तथाछ-
न्नावर्तागाणिमनोज्ञानिरचियित्वाकोणेषु॥२॥ अर्थ ॥बहुरितिस

वेदिकाकी चतुर्विदिशाके विषैं तोरणकी पंक्तिकरि मंडित है द्वारजा-
कै बहुरि छत्रसमान गोलाकार करि मनोज्ञ कुणा विषैं रचि करि ॥ गाथा
॥ पडिवीणणेत्तपट्टावरहिं वत्थेहिं बहुविहेहिं तहा ॥ उल्लोविऊणउव
रिं चंदोवयमाणिविहाहिं ॥ १ ॥ टीका ॥ मनोज्ञपट्टांबरादिवस्त्रैः बहु
विधं तथा क्षुद्रघंटकेन ऊर्द्ध्वोपरि चंद्रोपकं मणिमाणिकादि जटितैः ॥
२ ॥ अर्थ ॥ भलै मनोहर पट्टांबर कहिये रेसमी वस्त्र आदि भले वस्त्र
करि बहुरि बहुविधि क्षुद्रघंटिका करि कैना कै ऊपरि मणि माणिकादि
नैं जटित चंद्रोपक कुं बांधि करि ॥ बहुरि गाथा ॥ संभूसीउणचंदउ
पयेणवरासलाइहिं मुत्तादामेहिं तहा किंकिणीजालेहिं विविणहिं ॥
१ ॥ टीका ॥ संभूषितेन चंद्रोपकेन अभ्रेषासरला मुक्ताफलदामादिभिः
तथा क्षुद्रघंटिकापंक्तिभिः नानाप्रकारैः ॥ १ ॥ अर्थ ॥ भलैप्रकारक

रिशोभितजोपूर्वोक्तचंद्रोपककरिकैंश्रेष्ठसरलजोलंवायमानमो-
तीनकीमालाकरिबहुरितथाक्षुद्रघंटिकाकीपंक्तिनानाप्रकारकी-
तिनिकरि॥ गाथा ॥छत्तेहियेचमरेहिये दप्पणभंगारतालवट्टेहिंक
लसेहीपुहप्पवडीलिय रूवइहियदीवणिवहेहिं॥१॥ टीका ॥छ
त्रैचामरैःचदर्प्पणभृंगारतालस्यविजनैः॥कलशैःपुष्पवर्त्तिलितसु
प्रतिकस्तुदीपकविविधैहि॥२॥ अर्थ ॥बहुरिछत्रकरि १ चामर
करि १ दर्प्पनकरि १ भृंगारकहियेझारीकरि १ तालवृक्षकेपत्रोद्भव
विजनकरि १ कलशकरि १ पुष्पमालकरि १ स्वस्तिककरि १ बहु
रिभिन्नभिन्नदीपानिकीपंक्तिकरि ॥ गाथा ॥ एवंरयणकाऊणतऊ
अब्भंतरम्मिरइऊणा विविहिंबहुभंडेहिंवेइयंचऊरूकोणेरू ॥ १॥ ६५
टीका ॥ एवंरचनांकृत्वाततोभ्यंतरेपरिरचनांकृत्वाबहुविधैःपुनः भा-

डैः वेदिकाच्चतुर्षुकोणेषु ॥२॥ अर्थ ॥ ऐसैपूर्वोक्तप्रकारकीरचनाकुं करि बहुरिताकेपीछैअभ्यंतरकहियेताकेभीतरनानाप्रकारकेमृत्तिकाकेबासणकीवेदिकाकीचतुकोणविषैरचनाकुंकरि ॥ गाथा ॥ इदोनहदायारोपासुयसलिलेणधारणादियहं परकालिऊण देहिपच्छाभोत्तूणमहुरएणं ॥ २॥ टीका ॥ इंद्रः तथादातारप्रासुकजलेनधारणादिवसे प्रक्षाल्यशरीरं पश्चात् भुक्त्वामधुरान्नं ॥ २॥ अर्थ ॥ इंद्रकहियेप्रतिष्ठाचार्य ॥ बहुरितथाही दातारकहिये प्रतिष्ठाकारापक ॥ यहदोहुहिउपवासकेपहिले दिवसजोधारणाकोदिनविषैप्राशुकजलकरिअपनाशरीरकुं प्रक्षाल्यकहियेस्नानकुंकरिपीछैमधुरान्नकाभोजनकरि ॥ गाथा ॥ उववासपुणपोसहविहिणा गहिउणगुरुसयासम्मि ॥ णवधनलवत्थभूसोसिरिखंडविलितसव

 गो ॥ १ ॥ टीका ॥ उपवासेनसहितं पुनः प्रोसधं विधिनागृहीत्वागुरु
 समीपे ॥ नूतनधवलांबरेण भूषितश्रीखंडेनविलिप्तसर्वांगो ॥ २ ॥
अर्थ ॥ उपवासकरिकैसहित बहुरिप्रोषधकी विधिकुंग्रहणकरि
गुरुकैनिकटनवीनपवित्रस्वेतअतिउज्जलवस्त्रकरिमंडितहोय ॥ ब
हुरिश्रीखंडकहियेचंदनकरिअपनासर्वांगकुंलिप्तकरि ॥ गाथा ॥
आहरणवासियाहिभूसियगोसंगबुद्धीएसक्कोहमवियप्पयेहिवि
सेज्जजागावणिंददो ॥ १ ॥ टीका ॥ आभरणवासितस्रुगंधादिभिः
भूषितांगोपुनः उत्साहयुक्तेनबुद्धिशक्रोहमितिविकल्पबुद्धैः प्र-
विशेत्याज्ञावनौसइंद्रैवसन् ॥ २ ॥ अर्थ ॥ बहुरिभूषणकरिअर
स्रुगंधद्रव्यकरिआभूषितअपनाअंगकुंकरि बहुरिउत्साहयुक्त
करिकैअपनीबुद्धिकरिआपकुंइंद्रसमानविकल्पबुद्धीकरिमानय

ताकीभूमिकाकेविषैंप्रवेशकरैत्र्यापकूंपूर्वोक्तप्रकारईद्रागतऊस
नोथकोप्रतिष्ठाकेमंडपमैंजावै ॥ भावार्थ ॥ प्रतिष्ठाचार्यप्रवेश
करै ॥ गाथा ॥ पुद्धुत्तवेइयमझेलिहज्जचुण्णेणपंचवण्णेणपिहुक
ण्णियपईठाकलावविहिणाम्कंदुद्धं ॥ १ ॥ टीका ॥ पूर्वोक्तवेदि
कामध्येलिखित्वाचूर्णेनपंचवर्णेनपृथुविस्तीर्णकार्णकाप्रकी
र्णिकावाप्रतिष्ठाकल्पशास्त्रोक्तविधिनास्कंदभजास्थितमंड
लमध्ये ॥ २ ॥ अर्थ ॥ पूर्वोक्तप्रकारजोप्रतिष्ठाकीवेदिकाकेम
ध्यविषैंपंचवर्णकाचूर्णकरिकैप्रतिष्ठापाठनामाशास्त्रोक्तकी
विधिकरिमंडलकुंविस्तारै बहुरिताकेमध्यकार्णिकातथाप्रकी
र्णिकाकाविस्तारसंयुक्ततिहांकमलकीस्थितिकरै ॥ भावार्थ ॥
मंडलकेमध्यआठदलकीकार्णिकातथाताकेबाह्यषोडशद-

लक्ष्म्यादिकेत्तैंकिदलकीप्रतिकीर्णिकायुक्तकमलकूंमांडै इहां प्रतिष्ठाशास्त्रोक्तविधानकरिमंडलमांडनातोकीजोरीतिहोय तिसमाफिकमांडना ॥ गाथा ॥ रंगावलिंचमज्झठविज्जासियवत्थपरिउडपीठंउच्चदेसतहपइट्ठोवयरणदव्वचट्ठाएस ॥ १ ॥ टीका ॥ रंगावल्लिंचमध्यास्थियत्तेसितवस्त्रेनआच्छादितंपीठं ॥ तथाचउदेशेस्थानेप्रतिष्ठोपकरणादिद्रव्यंयथायोग्यस्थानंस्थाप्यते ॥ २ ॥ अर्थ ॥ बहुरितिसरंगावलीकेमध्यतिहांस्वेतवस्त्रकरिकैंआच्छादितचौंतरास्थापिकरि बहुरितिसचौंतराकेयथोचितउच्चस्थानमैंप्रतिष्ठाकेउपकरणआदिद्रव्यकुंयथायोग्यस्थापै ॥ गाथा ॥ एवंकाऊणतउईसाणदिसाएवेइयं ॥ दिव्वंरइउणएहवणपीठंतस्सयमज्झम्मिठावेज्जा ॥ १ ॥ टीका ॥ एवंकृ ६७

त्वाततः ईशानदिशायांवेदिकायांदिव्यंरचयित्वास्न्हपनपीठंत-
स्यमध्येस्थाप्यते ॥१॥ अर्थ ॥ ऐसैपूर्वोक्तप्रकारमंडपवेदिकामं
डलआदिकीरचनाकरि ॥ बहुरिपीछैतिसवेदिकाकीईशानदि-
शाविषैदिव्यस्नानपीठकुंरचिबहुरितिसस्नानकासिंहासनकै
मध्यस्थापियेसोकहैहैं ॥ गाथा ॥ अरुहाइएांपडिमंविहिणासं
ठाविऊणतस्सुवरिं ॥ धूलीकलसाहिसइय करावएसूत्तहारेण
॥१॥ टीका ॥ अरिहंतादीनांप्रतिमाविधिनास्थापयित्वातस्यो
परिधूलिकलशाभिषेकंकराप्यतेप्रतिष्ठाचार्येन ॥२॥ अर्थ ॥ तिस
पूर्वोक्तस्नानपीठकेविषैं अर्हंतआदिकीप्रतिमाकुंविधानतैंस्था-
पिकरिबहुरिताकेप्रथमहीप्रतिमाकुंघडनेवालाकास्नानकराव
ना ॥ गाथा ॥ वत्थादियसम्माएं कायव्वंहोइतस्ससत्तीए परव-

एणविहिंचमंगलवेएणकुज्जातऊकम्मासो ॥१॥ टीका ॥ वस्त्रादि केनसन्मानंकर्त्तव्यंभवतितस्यशक्त्यानुसारेणनृत्यविधिंपेष एणविधिनाचमंगलशब्देनकुर्यात्तदाक्रमसः ॥२॥ अर्थ ॥ ब हुरितिसूत्रधारकूंवस्त्रादिकजोवस्त्रआदिआभर्णद्रव्यक रिकेंअपनीशक्तिहोयजिसमाफकताकोसन्मानकुंकरना ॥ ब हुरिसंगीतशास्त्रोक्तक्रमसुंनित्यकीविधिकुंमंगलशब्दकुंकरि केंकरना ॥ गाथा ॥ तप्पाउग्गुवयरणं ॥ अप्पसमीवणिवेसऊण तऊआगारा॥ सुद्धिंकुज्जापइट्ठसत्थुत्तमग्गेण ॥१॥ टीका ॥ त तःप्रतिष्ठाउचितोपकरणमात्मानंसमीपंनिवेश्यततः ॥ स्थानक शुद्धिंकुर्यात्प्रतिष्ठाशास्त्रोक्तमार्गेण ॥२॥ बहुरिताकेपीछेप्रति ष्ठाकेयोग्यउपकरणानिकुंअपनेनिकटधरिकेंरपीछेप्रतिष्ठापा॰

क्तमार्गकरिकेस्थापनशक्तिकुंकरनी। सोस्थापनशक्तिकास्वरूपप्रतिष्ठापाठविषैंकह्याहै तिहातैंजानिलेना ॥ गाथा ॥ एवंकाऊणरऊखुहियसमुद्दोवगज्जमाणेहिं॥ वरभेरिकरडकाहल ॥ जयघंटासंखणिवेहेहि॥ १॥ टीका ॥ अमुनाप्रकारेणकृत्वाशब्दंकीदृशंशब्दाक्षुभितसमुद्रोपगर्ज्जमानोयेनश्रेष्ठभेरीझल्लरिनफरीजयघंटाशंखवादिवादित्रसमूहे ॥ १॥ अर्थ ॥ ऐसेपूर्वोक्तप्रकारशब्दकरि बहुरिकैसाकिशब्दहै॥ क्षोभकुंप्राप्तिभयाजोसमुद्रताकिउपमाकरिकेजोश्रेष्ठ॥ भेरी १ झालरि १ झांझ १ मंजीरे १ करड १ काहल १ जयघंटा १ शंखआदिवादित्रनिकेसमूहकेशब्दकरि ॥ गाथा ॥ गुलुगुलंतितिविलेहिं कंसतालेहिंझमझमंतेहिंधुमंतफडहमद्दलहुडकमुखेहिंविविहेहिं॥ १॥ टीका ॥

गुलगुलेतिशब्दं ॥ तवलवादित्राणांकंशतालानांझमझमेतिश-
ब्दं घुमंतपटहमद्दलादिमुखेर्विविधवादित्रे ॥ १ ॥ अर्थ ॥ गु-
लगुलशब्दहोयहै ॥ तिहांतवलजातिकेवादित्रनिका ॥ अरकं-
शतालकाहोयहै ॥ झमझमशब्दऐसाबहुरिपटहककहियेढोल
अरमद्दलकहियेमृदंगताकेमुखकरिवाजैहै ॥ बहुरिऔरभीना-
नाप्रकारकेबाजेबाजेहै ॥ गाथा ॥ गज्जंतिसंधिबंधाइएहिं ॥ गेए-
हिंबहुपयारेहिं ॥ वीणावंसेहिंआणयसद्देहिंरम्मेहिं ॥ १ ॥ टीका
॥ गर्जंतिसंधिबंधादिके मृदंगसंबंधिभिरंगे ॥ बहुप्रकारेः वीणा-
वांसुरीतथानकशब्दैः रमणीयकै ॥ २ ॥ अर्थ ॥ गज्जैहैतिहांमृदं-
गसंबंधिकैसंबंधिबंधादिकः ॥ बहुरिबहुतप्रकारकरिवीणवांसु-
रीतथाआनककहियेढोलकैहोयहै रमनीकशब्दतिनकरि ॥ गाथा

॥ बहुहावभावविब्भमि ॥ विलासकरचरणनणुवियारेहिं ।णिंच्चि
नणवरसभिणणाडएहिंचविविहेहिं ॥ १॥ टीका ।।बहुहावभाव
विभ्रमविलाशकरचरणनन्तुविकारैः नृत्यंनवरसाः भिन्ननाट्य
कैः विविधःप्रकारैः॥१॥ अर्थ॥ बहुनहावकाहियेधनीमुखकीप्रस
न्नताकरिभ्रूभावकहियेचित्तकीप्रसन्नताकरि॥ बहुरिविभ्रमक
हिये हर्षपूर्वकभ्रूकाक्षेपकरि विलासकहियेनेत्रनिकाप्रफुल्लता ब
हुरिअपने हस्तपादअरशरीरकानवरसकेविकारकरिविविधिप्रका
रकीनृत्यकीनाचैहै जुदीजुदीतिहां ॥गाथा ॥ थोत्तेहिमंगलेहिय
उच्चारसएहिंमहुरवयणस्स धम्माणुरायरत्तस्स॥ चाउवणरस
संघस्सः ॥२॥ टीका ॥ स्तोत्रैःपुनःमंगलशब्दैः उच्चारशतेनमधु
रवचनस्यधर्म्मानुरागरक्तस्य चतुर्वर्णसंघस्य ॥२॥ अर्थ ॥स्तो

अकरि बहुरि मंगलशब्दकैसैंकडांशब्दकै मधुरवचनकैशब्दकरि
धर्म्मानुरागरतचतुर्वर्णजोचतुर्संध ॥ गाथा ॥ भत्तिएपिछमाण-
स्स तउउच्चाइऊणजिणपडिमं उसियसियायवत्तंसियचामरधु-
वमाणसव्वंगो ॥१॥ टीका ॥ भक्त्याप्रेक्षमाणस्यततः उत्तिष्ठाप्य
जिनप्रतिमायामुपरिप्रसारितसितातपत्रं सितचामरदोलिमा-
नसर्वांगं ॥२॥ अर्थ ॥ सोभक्तिकरिदेखैहैं प्रतिष्ठाकाउत्सव ए-
सैंविक्षमाणपूर्वक श्रीजिनबिंबकुं उठायकरि कैसी। किहै प्रतिमा
फिरैहै रूपेतछत्र ताकेउपरिबहुरि दुलैहै स्वेतचमर ताकै सर्वांगउ-
परि ऐसीशोभाकरियुक्त श्रीजिनप्रतिमाकुं उठायकरि ॥ गाथा ॥ आ-
रोविउणसीसे काऊणययाहिणंजिणगेहस्स विहुणाठविज्जपु-
व्वुत्तवेइमऊपीठम्मि ॥१॥ टीका ॥ प्रतिमामारोप्यशीर्षेकृत्वाप्रद-

क्षिणांजिनगृहस्यविधिनास्थाप्यतेपूर्वोक्तवेदिकायांमध्यपीठ
स्थाने ॥२॥ अर्थ ॥ बहुरितिसप्रतिमाकुं अपने मस्तकऊपरिआ
रोपणकरि पींछेश्रीजिनमंदिरकीप्रदक्षिणादेय बहुरिपूर्वोक्त
वेदीकैमध्यसिंहासनकेविषैविधानकरितिसमूर्तिकुंस्थापनक
रै ॥ गाथा ॥ चिठ्ठुज्जजिणगुणारोवणं कुणंताजिणंदपडिबिंबे इ
ट्ठविलग्गस्कदणइ चंदणतिलयंतउदिज्जइ ॥१॥ टीका ॥ प्रवर्त्तनु
सन्जिनेंद्रस्यगुणारोपणंकुर्वन्सन्जिनेंद्रप्रतिबिंबेइष्टोपिलग्नो
दयोसतिचंदनतिलकंननःदीयते ॥२॥ अर्थ ॥ अरश्रीजिनेंद्रकागु
णकाआरोपणकरतासंताप्रवर्त्तै श्रीजिनेंद्रकीप्रतिमामें बहुरिइष्ट
लग्नकाउदयविषैंजिनप्रतिमाकैचंदनकातिलकदेवै ॥ भावार्थ ॥ श्री
जिनेंद्रकागुणजिनप्रतिमामेंआरोपणकरि भलामुहूर्त्तमें तिसप्र

त्तिमाकैविषैचंदनकातिलककरै॥ गाथा ॥सव्वावयवेसु पुणोमं
तरणासं कुणउज्जपडिमाए विविहंचणंचकुज्जाकुसुमेहिंवहुपया
रेहिं॥१॥टीका॥सर्वांगअवयवेषु पुनः मंत्रन्यासंकुर्यात् प्रतिमा
यांततः विविधार्चनंकुर्यात् कुसुमैः बहुप्रकारैः॥२॥ अर्थ॥बहु
रिश्रीजिनप्रतिमाकैसर्वअंगकैविषैं मंत्रन्यास कहिये मंत्रनिकी·
स्थापनाकरै बहुरिपीछै बहुप्रकारकैपुष्पनिकरिनानाप्रकारकरिपू
जाकरनी ॥ भावार्थ ॥ प्रथमगाथामैंतिलककह्योसोचंदनआदिक
द्रव्यकुंजिनप्रतिमाकैसर्वांगशरीरमैंविलेपकरिपीछैप्रतिष्ठाशास्त्रो
क्तमंत्रकेअक्षरनिकुंडांभआदिनैयथायोग्यस्थानमैंलिखै बहुरि·
पीछैनानाप्रकारकहियेअनेकजातिकेपुष्पजोचमेलीआदिअति·
मनोज्ञसुगंधिमईसुंदरशोभायमानकरिनानाप्रकारकरितिसजिन

बिंबकीपूजाकरनी ॥ गाथा ॥ दाऊणमुहपडंधवलवत्थजुयलेण
मयणफलसहियं अरकयचरुदीवाधूवेहिंफलेहिंविविहेही ॥ २
टीका ॥ दत्वामुखपटंधवलवस्त्रयुगलेन मदनफलसहितंअक्ष
तनैवेद्यदीपादिकैः धूपैः फलैः विविधप्रकारैः ॥ २ ॥ अर्थ ॥ अपणा
मुखकुंवस्त्राच्छादनकरिधवलजोउज्वलयुग्मकहियेधोवतीदुप्पटा
कुंसधारणकरिमयणफलकहियेमींडलासहितअक्षतनैवेद्यदीप
कतथाआदिशब्दकरिजलचंदनपुष्पकरि धूपकरिफलकरिनानाप्र
कारकरिइहांमयणफलकाप्रसंगकह्यासोपूजामेंयहतोअयोग्य
है ॥ नाकाउत्तर ॥ यहमयणफलमंगलीकहै ॥ जैसेविवाहसमय
वरकन्याहस्तेलोहलासामरस्युहरिद्रादिवस्तुदवेहै तैसेमयण
फलहैं ॥ ऐसेपरंपरायकरिवृद्धपुरुषानें जोअंगीकारकरिमान्यासो

पीछेभीमान्याजायहै ॥ गाथा ॥ वलिवत्तिएहिंजुवारेहियसिद्ध-
त्थपएरुरकेहिं पुष्पत्तुवयरएोहियरइज्जपुज्जसाविहवेण ॥ १ ॥ टी
का ॥ बलिवर्त्तैर्यततः यावारकस्यहरितांकुरैः सहितंसर्षपतयाप॰
त्रवृक्षाणांपूर्वोक्तउपकरणैः सहितःरचेत् पूजनंसविभवेन ॥ २ ॥
अर्थ ॥ बहुरिवलिवर्त्तकहिये वलिहारीअथवावारनाकरि बहुरि
जुवाराकेहरितअंकुरसहितसरस्यूंतथासरस्यूंकेपत्रकरिसहि-
त तथापूर्वोक्तउपकरणकरिअपणाविभवप्रमाणजिनप्रतिमाकी
पूजनकुंकरनी ॥ गाथा ॥ रत्तिंजगिज्जपुणोतिसट्ठिसलायपुरुस
कहाहिंसंघेणसमंपूज्जंपुणोविकुज्जापहायम्मि ॥ १ ॥ टीका
॥ सत्रौजागरणंकुर्य्यात् पुनः त्रिषष्ठीसलाकापुरुषाणांकथाभिः
चतुर्विधसंधेनसमंपूजनंपुनःकुर्यात् प्रभातकालेविधं ॥ २ ॥ अर्थ

रात्रीकेविषैतिहांजिनमूर्तिकैपास जागरणकरणा बहुरित्रेस-
ठिशिलाकापुरुषांकीभलीकथाकरिरात्रीव्यतीतकरिपीछेसंघ-
करिसहितप्रभातकालपूजनकीविधिकुंकरना ॥ भावार्थ ॥रा-
त्रीविषैगीतनृत्यवादित्रकरिजागरणकरै ॥ बहुरित्रिषष्ठीशिलाका
पुरुषकहिये ॥श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकर २४ बहुरिभरतेश्व
रादिद्वादशचक्री १२ बहुरित्रिपृष्टादिनवनारायण ९ बहुरिअश्व
ग्रीवादिनवप्रतिनारायण बहुरिविजयआदिनवबलिभद्र आदि
पुन्याधिकारीपुरुषनिकाचरित्रकीभलीकथाकरिरात्रीव्यतीतै ब
हुरिप्रभातमैसंघसहितपूजाकरै ॥ गाथा ॥ एवंचत्तारिदिणा-
णि जावकुज्जातिसंझजिणपूज्यं एवंतुम्मिलणपूज्जं चउत्थए
हिवणंतउकुज्जा ॥ ३ ॥ टीका ॥ एवंचत्वारिदिनानिपर्यन्तानिकुर्या

त् दिनरात्रीसंध्यायां जिनपूजानेत्रोन्मीलनप्रीतिहर्षेण जिनपूज
नं चतुर्थे दिनावसाने पुनः न्हवणं कुर्यात् ॥ २॥ अर्थ ॥ ऐसे पूर्वोक्त
प्रकार च्यारि दिना पर्यंत करै बहुरि च्यतुर्दिन की रात्री की संध्या २ विषैं
नेत्र मन करि प्रफुल्लित प्रीति हर्ष करि जिन पूजन कूं करै बहुरि चौथा
दिन कै अंत जिनाभिषेक कुं करै ॥ भावार्थ ॥ च्यारि दिन ताईं पूर्वोक्त
विधि करै बहुरि त्रिकाल जिन पूजा करै बहुरि पीछै चौथा दिन के
अंत फेरि प्रभु को न्हवण करै ॥ गाथा ॥ एवं एहवणं काऊण सत्थ
मग्गेण संघमज्झम्मि तो वरकमाण विहिणा जिणपयपूजाइ काय
व्वा ॥ १॥ टीका ॥ अमुना प्रकारेण न्हवणं कृत्वा शास्त्रमार्गेण सं
घमध्ये नत्त्ववक्षमाणविधिना जिनपदपूजा कर्त्तव्या ॥ २॥ अर्थ ॥
ऐसे पूर्वोक्त प्रकार करि शास्त्रमार्ग करि न्हवण कुं करि संघ कै मध्य

वक्ष्यमाणविधिकहिये आगेविधिकहैंगा तिसरीतिसुंजिनके चरणनिकीपूजादिककरना सोविधिकहैहै॥ गाथा॥ गहिऊणसि सिरकरकिरणणियरधवलरयणभिंगारं मोत्तिपवालमरगयसु वणमणिखचियवरकंठं॥१॥ सुयवत्तकुसुमकुवलयरजपिंजर सुरहिंविमलजलभरियं॥ जिणचलणकमलपुरउखविज्जउत्तिण धाराउ॥२॥ टीका॥ गृहीत्वाचंद्राकरकिरणनिकरत्तद्धतधवलर त्नभृंगारैः पुनःकीदृशाजलस्यप्रवालनामाप्रनालिकामरकतिमणि नाजटितसुवर्णेनखचितवरकंठं॥१॥ सूत्रोक्तकुसुमकुवलयानार जेनपिंजरसुरभिःविमलजलभरितमेनादृशंभृंगारं तेनजिनच रणाकमलपुरतःक्षिप्पतेतिस्त्रधारा॥२॥ अर्थ॥ चंद्रमाकीकिरण समानउज्वलरत्नजटितभृंगारकहियेझारीहैसोगृहणकरि बहुरिके

सीकहैझारी जाकाजलकानालमरकतमणिकरिजटितसुवर्ण
करि तथाऔरसुंदरमणिनिकरिखचितहैसुंदरकंठजाका बहुरि
सूत्रोक्तपुष्पकमलादिकीरजकरिपीनहोयरह्याहैं॥ अतिसुग-
धजो निर्म्मलजलतिसीका ऐसीझारीकै नालिकरि श्रीजिनकेच-
रणकमलकैआगैंतीनधारदीजैनिक्षेपजे ऐसैजलपूजाकरनी॥
॥ ॥आगैगंधपूजाकुंकहेहैं॥ ॥गाथा ॥ कप्पूरकुंकुमायरुन
रुक्कमिसेणचंदणरसेणवरबहलपरिमला मोयवासियासासमू
हेण॥१॥ वासाणुमग्गसंपत्तामयमत्तालिरावमुहलेणसुरमउड
घडिचलणं भत्तिएसमलहिज्जजिणं॥२॥ टीका॥ कर्पूरकुंकुमा-
गरुमलयागिरिमिश्रतेनचंदनरसेनवरघृष्टेसतिप्रचुरपरिमलामो
देनवासितानिदिशासमूहेन॥१॥सुगंधद्रव्यानुमार्गेणसंमदम

त्ताली सुरवरीकृतेनस्फुरन्मुकुटेन घृष्टचरणं भक्त्यास्पर्शतेजिनं॥
२॥ अर्थ॥ कर्पूरकेशरअगुरु मलियागिरचंदनकाद्रवकरिमिश्रि
त ऐसाजोगंधबहुरिघसिवेतें प्रचुरस्फुगंधकरिकरीहैस्फुवासितदि
शाकैसमूहताकरि बहुरितिसगंधद्रव्यकेअनुमार्गकरिमदोन्मत्त
भ्रमरनिकीपंक्तिकरिवाचालिकृत ऐसाजोगंधताकरि स्फुरकहियेदे
वकेशिरकेमुकुटकरिघृष्टितजोजिनवरकेचरण ताकुंभक्तिकरिस्पर्श
येन्॥ भावार्थ॥ पूर्वोक्तगुणनिकरिमंडितसारगंधद्रव्यकुंजलतेंघ
सिकरिश्रीजिनवरकेप्रतिमाकेदोयचरणनिकेविलेपनकरिलगावना
याकाप्रश्नोत्तरपूर्वकह्याहीहै॥ ऐसेगंधपूजाहै॥ ॥आगेअक्षित
पूजाकास्वरूपकहेहै॥ ॥गाथा॥ ससिकंतखंडविमलेहीविमल
जलेसित्तअइसुयंधेहिं॥जिणपडिमपइट्ठए जियविसुद्धपुणंकुरे

हिंच॥१॥ वरकलमसालितंदुलचाणिहसुछंडियदीहसयलेहिं॥
मणुयसुरासुरमहियं पुज्जिजजिणिंदपयजुयलं॥२॥टीका॥
चंद्रकांतिसदृशाखंडितविमलैः जलेनधौताःनिःसुगंधैः तैरक्षतैः
जिनप्रतिमाअर्च्यते कीदृशाविशुद्धपुण्यांकुराइव॥१॥ अतिमि
ष्टशालितंदुलसमूहैः उलूखलमुसलेनघृष्ठितादीर्घासकलामनुष्य
सुरासुरेणमहितंअर्च्यतेजिनेंद्रपदयुगलं॥२॥ अर्थ॥ चंद्रकांति
कहिये चंद्रमाकीचांदनीसमान अतिउज्जलअरखंडितविमलजोनि-
र्मल बहुरिअतिसुगंधकरियुक्त ऐसाअक्षितकुंजलविषैंधोयकरि
जिनप्रतिमाकुं पूजनी कैसेकीयेहैपूर्वोक्ततंदुलमानुपुण्यकेअंकुरही
हैं॥ ऐसाअतिमिष्टजोशालिकेतंदुलकेसमूहकुंउलूखलिकाविषैंमू
सलतैंखंडकरिदीर्घऐसातंदुलकरिमनुष्यसुरअसुरकेस्वामीजोअी

जिनेंद्रके पदयुगलकुं पूजयेत् ॥ ऐसैं अक्षितपूजाकरनी ॥ आगैं
पुष्पपूजाकावर्णनकरैहैं ॥ गाथा ॥ मालियकयंबकणयारियं प
यासोयबउलतिलएहिं मंदारणायचंपयपउमुप्पलसिंदुवारेहिं ॥
१ ॥ कणवीरमल्लियाइकंचणारमकुंदकिंकराएहिं सुरवणजजु
हियापारिजासवणढगरेहिं ॥ २ ॥ सोवणरूपमेंहियमुत्तादामेहि
बहुवियप्पेहिं ॥ जिणपयसंकयजुयलं पुज्जिज्जसुरिंदसयमहि-
लं ॥ ३ ॥ टीका ॥ मालतीकदंबसूर्यमुखीअशोकबकुलश्रीतिल
पुष्पमंदारनागचंपकउत्पलनिर्गुंडीपुष्पैः ॥ १ ॥ कणवीरमल्लिका-
कचनार मचकुंद किंकराकल्पवृक्षाणापुष्पैः ॥ सुरवनजूहीपारि-
जातिक जासवनडगरेभिः ॥ २ ॥ सौवर्णरौप्यमयपुष्पैः मुक्तादामा
दिबहुविकल्पकैः ॥ जिनपदसंस्कृतयुगुलपूजितेसुरेंद्रैरपिपूजितं

॥३॥ अर्थ ॥ मालतीकेपुष्पकरि कदंबकेपुष्पकरि सूर्यगुलके पुष्पकरि आशापालाकेपुष्पकरि वोल सिरीकेपुष्पकरि तिल- कजानिके वृक्षकेपुष्पकरि मंदारनामापुष्पकरि नागचंपाकेपुष्प करि नीलस्वेतारक्तकमलकेपुष्पकरि निर्गुंडीकेपुष्पकरि तथाकं डीरकेपुष्पकरि मल्लिकानामपुष्पकरि कचनारकेपुष्पकरि मचकुं दकेपुष्पकरि किंकरपुष्पआदिपुष्पनकरि कल्पवृक्षकेपुष्पकरि जूं हीनामापुष्पकरि पारिजातिकपुष्पकरि जासवणडगरादिपुष्पाक रि सोनेरूपैकेपुष्पकरि मोतीनिकीमालाआदिनानापुष्पनिकीमा लाआदिकेविकल्पकरिजिनकेचरणयुगलशोभितकरिपूजे केसा है श्रीजिनवरकेचरणयुगलदेवनिकाइंद्र तथाअपिशब्दात् चक्रवर्ती आदिकरिपूजनीकहै॥ भावार्थ ॥पूर्वोक्तप्रकारपुष्पनिकरिभग-

वानकेचरणयुगलशोभितकरिपूजे इहांकेतैंकिपुष्पतोकत्या वाकी
केम्रादिशब्दतैंसमझिलेना॥ बहुरिसोनारूपाकेपुष्पतथामोनीम्नि
कीमालाकाचढावनाकत्याहैं॥ सोजिनमंदिरमैंबहुद्रव्योपार्जनके
अर्थ बहुरिअतिशोभाकेअर्थ तथाप्रभावनाकीवृद्धिकेअर्थ तथा
उत्कर्षभावकीवृद्धिकेअर्थ तथाबहुधनत्यागकेअर्थ कृपणाईहरिवे-
केअर्थ तथाअतिउपमाकेअर्थहै॥ ऐसेपूर्वोक्तप्रकारपुष्पपूजास्व
रूपहै॥ आगैचरुपूजाकास्वरूपकहैहैं ॥गाथा ॥ दहिदुधसप्पि
मिस्सेहिं कमलमत्तनेहिं बहुपयारेहिं नेवाद्धुवंजिणेहिय बहुविह
पक्कणभेएहिं॥१॥ रौप्ययसुवणकंसाइथालणिहिएहिविविहभर
केहिपुज्जंवित्थारिज्जोभत्तियजिणिंदपयपुरुउ॥२॥ टीका ॥ दधिदु
ग्धघृतेनमिश्रितंमिष्टोदनंतथाबहुप्रकारैः नेवर्षीव्यंजनादिबहुवि

धपक्कान्नभेदैः॥१॥रौप्यस्वर्णकांस्यादिस्थालेनस्मिन् विविधं
भक्ष्यंस्थाप्यपूजनंविस्तार्यते भक्त्याजिनेंद्रपदपुरुतः॥२॥ अ·
र्थ ॥ दहिदुग्धघृतकरिमिश्रितामिष्टतंदुलकाभातकरि बहुरिना·
नाप्रकारकीतेवर्णकहिये कर्करीजोकांकडीआदिकेशागकाव्यंज
नकरि बहुरिनानाभेदकैपक्कान्नकरि सोनारूपाकांसीआदिकेथा
लविषैंविविधभक्ष्यकहिये मोदकादिककुंस्थाप्यकरि श्रीजिनवर
केचरणानिकेआगैंभक्तिकरिपूजनकुंविस्तारनीसानैवेद्यपूजाहैं॥
॥ आगैदीपपूजाकास्वरूपकहैहै ॥ गाथा ॥ दीवेहिणियपहो
हामियक्कनेहिधूमरहिणाहिं॥ मंदचलमंदाणिलवसेणाणिच्चंतअ·
च्चणंकुज्जा॥१॥ घणपडलकम्मणिचहुं वदूरमवसारियंधयारेहिं
जिणचलणकमलपुरुउ कुणिज्जयणरकभत्तीए॥२॥ टीका ॥

दीपकैनिजप्रभाणांसमूहेनातूल्यार्कप्रतापंदधातिकिद्रशेः मंद
मंदानिलवंशेननृत्यंतः सन्नृत्यर्चनंकुर्वन्नुद्रवः॥ १॥ घनपटलकर्म
निचयतहृदंधकारमतिशयेनदूरीकृतमेताहृशाःदीपैः जिनचरण
कमलपुरुतः करोनिरचनांसभक्त्या॥२॥ अर्थ॥ बहुरिभगवान
कैचरणकमलकैआगेदीपककीरचनाभलीभक्तिकरि करैसोदी-
पकरिपूजाहैं॥ कैसादीपककारेरचनाकरै सोकहियेहै॥ अपणी
प्रभाकासमूहकरिकैसूर्यतुल्यप्रतापकुंधारै॥ बहुरिमंदमंदपव-
नकैवशिकरिनृत्यकीसमाननृत्यकरतासंताऐसाजोदीपकतेंपूजे
है॥ बहुरिअतिघनाकर्मकेपटलकेसमूहसमानजोअंधकारकुंअ
पणेजोतिकाअतिशयकरिदूरीकरनासंताऐसादीपककीरचनाभ
क्तिकरिप्रभुकैचरणनिकैआगेकरनीसोदीपपूजाहैं॥ इहांगिरी

केहूककूंकुमादिकतैंरंगैहुवेदीपकनजाननै ॥ साक्षातृहीजाननै ॥
आगेधूपपूजाकास्वरूपकहैहै ॥ गाथा ॥ कालायरुणहुचंद-
हपुरुक्कसिल्हारसाइदव्वेहिंणिएधूमवत्तीहिंपारिमलापंत्तियाली
हिं ॥ १ ॥ उग्गासिहादेसिइए ॥ सग्गमारकमग्गोहिवहलधूमहि
धूविज्जजिणिंदपायारविंदजुयलस्करिंदएुयं ॥ १ ॥ टीका ॥ का
लागुरुम्अंवरकर्पूरपुरकसिल्हारसादिद्रव्यादिकैः ॥ निष्पन्नव-
र्तितैः ॥ पारेमलपंक्तिभिः ॥ १ ॥ उग्रशिखायैः दर्शितस्वर्गमोक्ष-
मार्गीयैः प्रवलधूम्रधूपैः धूपितजिनेंद्रपादारविंदयुगुलंकीद्द-
शैस्करेंद्रैर्नुतं ॥ २ ॥ अर्थ ॥ कालागुरुकहियेअगुरु बहुरिअंबरब
हुरिकर्पूरप्रमुख बहुरिसिल्हारसादिकद्रव्यकरिउपजीजोधू
पकीवर्त्तिकरि कैसीकिहै धूपवर्त्तिजाकीसुगंधकीपंक्तिकरिउग्र

शिरवाकरिदिरवाइयेहैं स्वर्गमोक्षका मार्ग ऐसी प्रबलधूपकीधूम्रक
रिश्रीजिनेंद्रकेचरणयुगलरूपीकमलकुंधूपिनेकहिये धूपकुंअग्निविषै
षैं मंत्रपूर्वक निक्षेपकरिसुगंधितकरना कैसाहै श्रीजिनेंद्रकेपदार
विंद देवनिकाइंद्रकरिनमस्कारकरिवेयोग्यहैं ॥ इहांआदिशब्दतैंचंद
नदेवदारुआदिअनेकप्रकारकेशुद्धसुगंधद्रव्यभीजानना ॥ इतिधू
पपूजा ॥ आगैफलपूजाकावर्णनकरैंहैं ॥ गाथा ॥ जंबीरमोयदा
डिमकवित्थपणसवनालिएरेहिं हिंतालनालखज्जूरबिंबणारंगचारे
हिं ॥१॥ पुइफलतिंदुआमलयजंबूविल्लाइसुरहिं॥ मिट्ठेहिजिणपय
पुरुउरयणंफलेहिकुज्जासुपक्केहिं॥२॥ टीका ॥ जंबीरकदलीफ
लदाडिमकपित्थपनसप्पूतफलनारिकेरेभिः॥ हिंतालगालखर्जूर
किंदूरीनारंगचारेभिः ॥१॥ पूगीफलतिंदूआमलीयजंबूबिल्वादि

सुराभिः पुनः मिष्टैर्जिनपदपुरुतरर्चनंफलैः कुर्यात्सुपक्वैः ॥२॥
अर्थ ॥ जंभीरीकरिकेलकैफलकहिये केलाकरिदाडिमफलकरि
कपित्थकहिये कैथकरिपनसफलकरि चूतकरि नारेलकरिहिंताल
तथानालजातिकेवृक्षकैफलांकरि खज्जूरफलकरिकिंदूरीफ
लकरि नारंगीफलकरिचारकरिबहुरिसुपारीकरि निंदूकरि आ
मलाकरि जांबूकरिबिल्वफलआदिनानाप्रकारकेसुगंधित बहु
रिमिष्टभलापक्कफलांकरि श्रीजिनवरकेपदांकेआगेपूजाकर
नी ॥ सोफलपूजाहै ॥ आगेमंगलीकद्रव्यादिकचढावनेका
स्वरूपकहैहैं ॥ गाथा ॥ अट्ठविहमंगलाणिय बहुविहपुज्जो
वयरणदव्वाणि धूवदहणाइतहाजिणपूयत्थंवितीरिज्जई ॥१
॥ टीका ॥ अष्टविधिमंगलद्रव्याणि बहुविधिपूजोपकरणद्र-

व्याणिधूपदहनादिनयाजिनपदपूजनार्थेविस्तार्यते ॥१॥ अर्थ
॥ अष्टविधिमंगलद्रव्यकहियेफारी १ कलश १ चामर १ छत्र १
ध्वजा १ तालबीजना १ स्वस्तिक १ दर्पण १ बहुरिनानाप्रकारके
पूजाकेउपकरणद्रव्यधूपदानआदिकहिये आरार्तिकथालआ-
दिभगवानकीपूजाकेअर्थविस्तारना ॥ भावार्थ ॥ चंदावणा ॥
गाथा ॥ एवंचलपडिमाए ॥ ठवणाभणियाथिराराणयमेवणेरवि
समो आगरशहिंकुज्जाकठाणम्मि ॥१॥ चितपडिलेवपडिमा
एदप्पणदाविऊणपाडिलिंविंतिलपंदाऊणतमुहवछंदिजपडि
माए ॥२॥ आगरसहिंचकरेज्जदप्पणेअहवाअणपडिमाएण
तियमेत्तविसेसोसविहिंजाणेहिपुव्वाय ॥३॥ एवंचरित्तणाणं
पिकदिमाणपडिमाणपडिमाणजंबीरइवहुमाणठवणापुज्जं

हितंजाणे ॥ ४ ॥ टीका ॥ एवंचलप्रतिमायाः स्थापनायामणि
नास्थिरप्रतिमा एकमेव एतदेवविशेषः आगारशुद्धिंकुर्यात्
सःस्थानेस्मिन् ॥ १ ॥ चित्रपटेलेपप्रतिमायाः दर्प्पणेदत्वाप्रति
बिंबतिलकंदत्वाततः मुखवस्त्रेणछाद्यतेप्रतिमायां ॥ २ ॥ आ
गारशुद्धिंकृत्वादर्पणेथवान्यप्रतिमायातावन्मात्रविशेषय
विधिंज्ञायतेपूर्वोक्त ॥ ३ ॥ अमुनाप्रकारेणचारित्रज्ञानस्या-
पिकृत्रिमाकृत्रिमप्रतिमानांयत्क्रियते बहुसन्मानंस्थापनापू
जनंतज्जानीहि ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ एवंकहियेऐसैपूर्वोक्तप्रकारच
लप्रतिमाकीस्थापनाकहि बहुरिथिरप्रतिमाकिस्थापनामेंए-
कपूर्वोक्तप्रकारमैयहविशेषहै भलेस्थानमैंआगारशुद्धिक
रनी ॥ बहुरिचित्रामकीप्रतिमा तथापटकैविषैंआलोषिप्रति

माकुंदर्पणकेविषैंलेयकरिबिंब२प्रतितिलककुंदेषकरिपीछे प्रतिमाकेविषैमुखवस्त्रकरिआच्छादनदेना ॥बहुरिप्रथमआगा रशृंगारकरिपीछैदर्पणकेविषैंधरिये॥अथवाअन्यप्रतिमाकेविषैं एताऔरविशेषहैं॥सोपूर्वोक्तविधितैंजानना॥ऐसैविविधप्रका रकरिचारिप्रज्ञानकेकृत्रिमअकृत्रिमप्रतिमाकातोबहुतसन्मान कुंकरैहै सोनिश्चयकरिस्थापनानामापूजनकुंजानना॥इहांआ गारशृंगारनथातिलक तथामुख वस्त्रआदिविधानकह्यासोसर्व प्रतिष्ठाशास्त्रतेविशेषजानना॥ इतिप्रतिष्ठालक्षणविधिः॥अ थस्थापनपूजा ॥ आगेस्थापनपूजाकापांचमांअधिकारकहैहैं ॥ गाथा ॥जेपुव्वसमुद्दिठावणापूयाएपंचअहियारा वषारि तेषुभणिताअदसाएपंचमोभाणिमो॥१॥टीका॥येमयापूर्व

समुद्दिष्टास्थापनापूजायाःपंचः अधिकारस्तेषांमध्येचत्वारिभणि
ता। अधुनापंचमोभणिस्यामि॥१॥ अर्थ ॥जोइमनेपहिलीस्था
पनानामपूजाकेपंचअधिकारकह्याहुतातामैंच्यारअधिकारतो
कह्याबहुरिअबपंचमाअधिकारकहियें॥ भावार्थ ॥ पूर्वस्थाप-
नापूजाकैपंचभेदकह्येथेतामैंकारापक १ इंद्र २ प्रतिमा ३ प्रति
ष्ठाएक एच्यारतोकह्ये॥ अबपांचमाभेदकहूंहुं॥ ऐसैंआचार्य-
कहिकरिआगेकहैहैं॥ गाथा ॥ दव्वेणपदव्वस्सयजापूजाजा-
णादव्वपूजासा दव्वेणगंधसलिलाइपूव्वभणियेणकायव्वा॥टी
का॥ मनोज्ञद्रव्येणषट्द्रव्याणांमध्येसारपरमात्मातस्ययापू-
जासाद्रव्यपूजाज्ञातव्याद्रव्यगंधसलिलादिपूर्वयाभणितासा-
एवकर्त्तव्या॥१॥ अर्थ ॥मनोहरद्रव्यकरिषट्द्रव्यनिमेंसारजो

परमात्मानाकीपूजासोद्रव्यपूजाजाणना ॥ बहुरिसोद्रव्यगंधज
लआदिअष्टद्रव्यपूर्वकथितहै ॥ तिसतैपूजैसोद्रव्यपूजाजाणना
॥ आगेइसद्रव्यपूजाकेतीनभेदकहैहै ॥ गाथा ॥ तिविहादव्वपू
जासचित्ताचित्तामिस्सभेएण ॥ पच्चरकजिणाइयंसचितपूजाज-
हाजोगं ॥ १ ॥ टीका ॥ त्रिविधाद्रव्यपूजासचित्ताचित्तामिश्रभेदे
नप्रत्यक्षजिनादीनांसचित्तपूजायथायोग्यम् ॥ १ ॥ अर्थ ॥ सोद्र
व्यपूजातीनप्रकारकीहै ॥ एकतोसचित्त १ बहुरिदूजीअचित्त २
बहुरितीजीमिश्र १ ऐसेतीनभेदहै तामैप्रत्यक्षतीर्थंकरकेवली-
जिनादिककीयथायोग्यपूजासोसचित्तपूजाहै ॥ आगेदूसरा-
तथातीसराभेदकहैहैं ॥ गाथा ॥ तेसिंचशरीराणं दव्वसुदस्स
विअचित्तसापूजा ॥ जासुणहोएहकीरइणायव्वगोमिस्सपूजा-

सा॥१॥ टीका॥ तेषांचशरीराणांद्रव्यस्कतस्यापिशास्त्रस्यत्व
चित्तसापूजायतःपुनः द्वयोः शास्त्रगुरुणांक्रीयतेसाज्ञातव्या-
मिश्रपूजा॥१॥ अर्थ॥ बहुरिसाक्षात्श्रीतीर्थंकरकाशरीरकी
बहुरिताकीबानीकैशास्त्रकीपूजाकरनीसोद्रव्यपूजाकादूसरा
अचित्तपूजानामभेदहै॥ बहुरिशास्त्रगुरुकीपूजाकरनीसोमि
श्रनामाद्रव्यपूजाजाननी॥ भावार्थ॥ साक्षात्श्रीतीर्थंकरकीपू
जातौचैतन्यताकरियुक्तहै यातैंचैतन्यपूजाहै॥ बहुरिताकीमु
क्तीभयेपीछैनोकाशरीरकीपूजाकरियेसोचैतन्यकेअभावक-
रिताकुंअचित्तपूजाजाननी॥ बहुरिशास्त्रकारीसंयुक्तगुरुकुं
पूजियेसोमिश्रपूजाहै॥यामेशास्त्रतोअचेतन्यहै॥ अरगुरुस
चैतन्यहै यातैंदोनमिश्रपूजाहै॥ आगैद्रव्यपूजाकाफेरिविसे

सएाकरैहैं ॥ गा[illegible]था ॥ अहवाआगमणोयागमाइभएएणबहुविहं
दव्वं ॥ एगाऊणदव्व[illegible]पूजाकायव्वासुत्तमग्गेण ॥१॥ टीका ॥ अथवा
आगमणोआगमादिभेदेन बहुविधंद्रव्यंज्ञात्वाद्रव्यपूजा कर्त्तव्या
सूत्रमार्गेण ॥१॥ अर्थ ॥ अथवाआगम १ नोआगम १ आदि
भेदकरिबहुविधिद्रव्य पूजाकुंजाणिकरिशास्त्रमार्गकरि द्रव्यपू
जाकरणी ॥ इतिद्रव्यपूजा ॥ आगेक्षेत्रपूजाकास्वरूपकहेहै
॥ गाथा ॥ जिणजमणाणिक्खवणणाणुपत्तीए ॥मोक्खसप
त्तिणिसिहिसुक्खेत्तपूजापूव्वविहाणेणकायव्वा ॥१॥ टीका ॥
जिनजन्मकल्याण तपकल्याण ज्ञानोत्पत्तिमोक्षकल्याण कय
स्मिन्क्षेत्रेभवंतितनास्मिन्क्षेत्रेयजन पूर्वविधानेनकर्त्तव्यासाक्षे
त्रपूजा ॥२॥ अर्थ ॥तीर्थंकरांकीजन्मभूमिकाकि बहुरितीर्थं

करांकीतपक[illegible]मिकाकी ॥ बहुरिजिनकुंकेवलज्ञानकी प्राप्ति
कीभूमिकाकी बहुरिनिर्वाणकल्याणकीभूमिकाकीजो पूर्वो
क्तजलादिकनैंजिहांजायकरिपूजन कुंकरणी सोक्षेत्रपूजाहै
॥ भावार्थ ॥ अयोध्यापुरीआदिचतुर्विंशतितीर्थंकरांकिजन्म
पुरी तथातेसैंहितपोवनकाक्षेत्र बहुरिज्ञानोत्पत्तिकाक्षेत्र त-
था कैलास सम्मेदसिखर गिरनारि चंपापुरी पावापुरी आदि-
सिद्धक्षेत्रनिहांजायताकीपूर्वोक्तविधानकरिपूजाकरनीसोक्षे
त्रपूजाहै ॥ इतिक्षेत्रपूजा ॥ आगेकालपूजाकास्वरूपकहैहै ॥
गाथा ॥ गब्भावयारजम्माहिसैपणीखणणाणणिब्बाणं ॥ज
ह्मिदिणेसंजाइयं जिणएहबणंतहिदिणेकुज्जा ॥ १ ॥ इखुरस
प्पिदहिखीरगंधजलपुण्णविविहकलसेहिंणिसिजागरंचसं

यणाइयाइहिंकायव्वं ॥२॥ णंदीसरअठदिवसेसुतहाअ विहं
उचियपव्वेसुजंकीरइजीणमाहिमावएणेयाकालपूजासा ॥३॥गा
टीका ॥ गर्भावतारादिजन्मादिने अभिषेकादितपदिने ज्ञाननिव
र्णादिने यस्मिन्‌दिनेसंजायतेतस्मिन्नेवदिनेप्रभावनाकुर्यात्‌ ॥१
॥ इक्षुरसघृतदधिदुग्धसुगंधजलपवित्रविविधकलशैः निशि
जागरणंसंगीतनाटकादिकर्तव्यं ॥२॥ नंदीश्वराष्टदिवसेतथा
अन्येषुउचितपर्वसुक्रीयतेजिनमाहिमावर्णितााकालपूजासा ॥
३॥ अर्थ ॥ तीर्थंकरांकेगर्भावतारादिकबहुरिजन्माभिषेकआ
दि बहुरितपकल्याण ॥ बहुरिकेवलज्ञाननिर्वाणकल्याणजिसि
दिनमैंपूर्वभये तिसिदिनकादिनमैपूर्वोक्तविधिकरिप्रभावनाक
रनी ॥ बहुरिइक्षुरस १ घृत १ दुग्ध १ दधि १ बहुरिसुगंधज

लकै भरे पवित्र विविधप्रकारकै कलशनिकरि जिनमूर्त्तिकाभ्य-
भिषेककरना॥ बहुरि रात्रिविषैं जागरणकुं संगीत नाटकादि
कहिये भलेप्रकारकरि रागोच्चारसहित प्रभुकै गुणनिकै ग्रा
मकी कावर्णनगायकरि प्रगटकरना॥ बहुरिनाटककहिं हाव
भावकटाक्षादिकनृत्यकैगुणकरि मंडितप्रभुकेआगैंनृत्यक
रना॥बहुरिआदिशब्दकरितत्तकहिये नांततारकेवादित्र-
जोवीणादिककावजावना बहुरिविततकहिये चर्म्मजनितवा
दित्र जोमृदंगादिककाबजावना बहुरिघनकहिये॥ताल
मंजिरादिककांस्यकेवादित्रकाबजावना॥सुषिरकहियेवांसु
रीआदिफुंककेवादित्रनिकावजावना॥ ऐसेगीतनृत्यवादित्रा
दिकरिजिनमंदिरमैंरात्रीविषैंजागरणकरना॥बहुरिनंदीश्व

रादिकेअष्टदिनाविषैं तथा अन्यभीउचितधर्म्मपर्व्वीकहियेषो
डशकारणदशलाक्षणपुष्पांजलिरुगंधदशमीअनंनव्रतरत्न
त्रयआदिदिनाविषैंजोजिनमंदिरविषैंजिनमंहिमाजोप्रभा-
वनाकुंकरैंहैसोकालपूजाकहियेहैं ॥ इतिकालपूजा ॥ आगे-
भावपूजाकास्वरूपकहेहैंहै ॥ गाथा ॥ काऊणाणंतचउठगुण
कित्तणंसंभत्तीए ॥ जंबदणंतियालंकीरइभावच्चणंतखु ॥ १ ॥
टीका ॥ कीयतेणंतचतुष्टयानांगुणकीर्तनंभक्त्यायहंदनाय
त्रिकालंक्रियतेसाभावार्च्चनायाज्ञानव्या ॥ अर्थ ॥ प्रभुकेअन
तचतुष्टयजोअनंनदर्शन अनंतज्ञानअनंनसुखअनंतवीर्य-
कागुणनिकाकीर्तनकुंकरे ॥ बहुरिभक्तिकरिअर्हंतादिककीत्रि
कालवंदनाकुंकरनीसाभावपूजाजानना ॥ भावार्थ ॥ सामायि

कादित्रिकालकरनासोभावपूजाजानना ॥ आगेफेरिविशेषक
रिकहियेहै ॥ गाथा ॥ संचणमोंकारयएहिंअहवाजावंकु-
णिज्जसत्तीएअहवाजिणंदथोत्तंवियाणभावच्चणंतंपि ॥ १॥
टीका ॥ पंचनमस्कारपदेनाथवाजाप्यंकुर्यात्स्वशक्त्याअथवा॰
जिनेंद्रस्तोत्रंविजाहीभावार्चनंतमपि ॥१॥ भावार्थ ॥ अथवापं
चणमोंकारपदकेजाप्यकुंअपणीशक्तिकरिकरना ॥ अथवाजि
नेंद्रकेगुणनिकागद्यपदवाणिकरिस्तोत्रपढनासोभावपूजा॰
निश्चयकरिजानना॥ आगेफेरिभावपूजाकाविशेषस्वरूपक॰
हेहैं॥ गाथा ॥ पिंडत्थंचपयत्थंरूवत्थंविवज्जियंअहवाजंझा
इज्जइझाणंभावमहंतंविणिदिठं ॥१॥ टीका ॥ पिंडस्थंपद
स्थंरूपस्थंरूपविवर्जितंअथवायन्ध्यायतेतत्ध्यानंभावपू

जाविनिर्दिष्टम् ॥१॥ अर्थ ॥ अयता पिंडस्य १ पदस्य १ रूपस्य १ रूपातीत १ ऐसैयहचारूध्यानकुंजोध्यावैहै सोभावनामापूजाजिनसूत्रमेंदिखाईहैं ॥ आगेइनिच्यारुध्यानकाप्रथक २ स्वरूपकहितेसंतेप्रथमपिंडस्थनामाध्यानकास्वरूपकुंकहैहैं॥ गाथा ॥ सियकिरणविस्फुरंतंअठमहापाडिहेरिपरिपरियं॥झाइज्जइझांजिणयरुबंपिंडस्थंजाणत्तझाणं ॥१॥ टीका ॥सितकिरणविस्फुरंतमष्टमहाप्रातिहार्यमेघपरिकरिकंध्यायतेतन्निजरूपंपिंडस्थंज्ञातव्यंतध्यानं ॥१॥ अर्थ॥ स्वेतकहियेअतिउज्जलकीरणकरिदेदीप्यमानविस्फुरितअष्टमहाप्रातिहार्य्यकरिमंडितअपणास्वरूपकाचिंतवनकरनासोध्यानकुंपिंडस्थज्ञानजानना ॥इहांअष्टप्रातिहार्यकहियो॥ज

बतीर्थंकरदेवकेकेवलज्ञानकीप्राप्तिहोयतबताकेबाह्यचिन्ह-
प्रगटहोयहै॥ अशोकनामवृक्ष १ देवांकरिपुष्पनिकीवृष्टी १
दिव्यध्वनि १ चामरकादुलना १ सिंहासन १ भामंडलकहिये
ताकेशरीरकीप्रभाकामंडल १ दुंदुभीकहिये नगारेकाशब्द १
छत्र १ ऐसैअष्टप्रातिहार्यहैं॥ तदुक्तंकाव्य ॥ अशोकवृक्ष
सुरपुष्पवृष्टीदिव्यध्वनिश्चामरमासनंच॥ भामंडलंदुंदुभिरात
पत्रंसत्प्रातिहार्य्याणिजिनेश्वराणाम्॥ १॥ सोऐसप्रातिहा-
र्य्यसहितअपनीआत्माकाध्यानकरनासोपिंडस्थनामाभाव
पूजाजानना॥ आगेइसपिंडस्थकाऔरभांतिभीस्वरूपकहे
हैं॥ गाथा॥ अहवाएगाहिंचवियप्पेउणमेरुंअहोविहाय्यमि
झाइज्जइअहोलोयंतिरियंम्मिनिरिएएवियं॥ १॥ उद्धम्मिउएग

खोएकप्पविमाणाणिखंधपरियंतगेविज्जमयागीवं ॥ अणुदि
संहणुपयसम्मि ॥२॥ विजयंचवैजयंतंजयंतमवराजियंचसवत्थं
॥ झाइज्जकहयएसोणिलाडदेसम्मिसिद्धसिलाए ॥३॥ तस्सुव-
रिसिद्धणिलयंजयइसीहरजाणउत्तमांगम्मि ॥ एवंजाणियदेहंझा
इज्जइतंपिपिंडस्थं ॥४॥ टीका ॥ अथवानाभिंचविकल्पकृत्वा
मेरुमधः विहायध्यायतेधोलकंपुनः तिरयकलोकंमध्यवर्तिहृदि-
तीयं ॥१॥ ऊर्द्धंनृलोकात्कल्पविमानातिस्कंधपर्यंतग्रीवेंद्रकंग्री
वायाशब्दंसमणुदिशिप्रदेशोस्मिन् ॥२॥ विजयंचवैजयंतंजयं-
तापराजितंचसर्वार्थसिद्धिंध्यायतेमुखप्रदेशेभालप्रदेशेसिद्ध
शिलासदृशं ॥३॥ तस्योपरिसिद्धस्थानकंजगत्सिखरंज्ञातव्य-
मुत्तमांगंमस्तकमेवंयन्निजदेहंध्यायते तदपिपिंडस्थंज्ञातव्यं

॥४॥ अर्थ ॥ अथवा आपणा शरीरमैं नाभि मंडलकूं मेरुकी कल्पनाकुं करि ताके अधोभागकुं छोडि ताकै निचै अधोलोकका स्वरूपकुं ध्यावे ॥ बहुरि नाभिकै बाह्य दोउ तरफ वर्तुलाकार मध्यलोककुं ध्यावे ॥ बहुरि ताके ऊपरि आपना कांधापर्यंत कल्पविमानकरि कहिये सौधर्म्मादि षोडश स्वर्ग करि मंडित स्वर्गलोककुं ध्यावै ॥ बहुरि ताकै ऊर्ध्व आपनी ग्रीवा वर्त्तिनव ग्रैवेयकका स्वरूपकुं ध्यावै ॥ बहुरि तिसी ग्रीवाके प्रदेशानिमैं अनुदिशि विमाननिकुं चिंतवे ॥ बहुरि आपना मुष प्रदेशाविषें ॥ विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित १ सर्वार्थसिद्धि १ इनिका ध्यान करे बहुरि आपना ल्लिलाटक प्रदेशाविषें सिद्धशिलासदृशा विकल्पनाकुं स्थापि करि ताके ऊपरि सिद्धस्थानिक जगतका शिखरकुं जाणैं

ऐसाउत्तमांगजोमस्तककुंजाणै ऐसैंअपनीदेहकुंलोकस्वरू
पवत्चिंतवनकरैसोपिंडस्थानामाध्यानजानना ॥ भावार्थ ॥
यहलोकहैसोअधोमध्यऊर्ध्वभेदकरिसंयुक्तपांवपसारैखडा
मनुष्यआपनीकटिन्यहस्तयुक्तहैसोडोदअदंगाकारहै ॥ यातैं-
अपनाशरीरविषैंक्रमसुलोककास्वरूपजिनागमतैंजाणिकरि
चिंतवनकरिआपनेभालविषैंसिद्धस्थानककुंध्यावै सोपिंडस्थ
ध्यानहैं ॥ याकाविशेषविस्तारज्ञानार्णवादियोगशास्त्रनितैंजा
नना ॥ तथालोककास्वरूपत्रिलोकसारप्रमुखआगमतैंजान
ना ॥ इतिपिंडस्थज्ञानम् ॥ आगेपदस्थनामादूसराध्यान-
कावर्णन और रूपस्थनामातीसराध्यानकावर्णन ज्ञानार्णव
आदिलेर अनेकग्रंथोमैहैसोवहांसेंजानना यहांविशेषकर

केनहीलिखाउसकाकारण इसमै जंत्रमंत्रकुं आदिलेखर्ण नहै इसवास्ते इहां नहींवर्णनकियाहै ॥ इसदोनोकाभावार्थ ॥ पदस्थध्यानमैंअररूपस्थमैइतनाविशेषहै ॥जोपदस्थ-तोमंत्रकेअक्षरका मुखतैंउच्चारकरिहोयहै ॥ बहुरिरूपस्थमै ताकामनहिमैचिंतवनाहोयहै याकाउच्चारनहींहोयहै ॥यातै उच्चारतै चिंतवनकाफलअधिकहै ॥सोकहियेहै ॥ जोपूर्वोक्त मंत्रनिकुं मुखथकिउच्चारकरिजपैहै ताके एकगुणाफलहोय हैं ॥ बहुरिजोमंदस्वरकरिआपकाआपहीकुंजाणपणारहैए सैजापपढैहै॥ भावार्थ ॥ मुखहोटबाहिरशब्दनाहिंकढै ऐसे जपैताकेउच्चारफलतैं एकसोगुणाफलहोयहै॥ बहुरिजोम-नहिमे वर्णोच्चारकुंशब्दजपैहै चिंतवनकरिध्यावैहै मुखहोठ

आदिउच्चारकाशब्दरहितध्यावैहैसोरूपस्थध्यानहैयाकाफल
सहस्त्रगुणाहै ॥ ऐसैंअनुक्रमसैंफलजिनसेनादिआचार्यनि-
नैकह्याहैं ॥ सोश्लोककरिकहियेहैं ॥ तदुक्तं ॥ श्लोक ॥ वाचि
कस्त्वेकएवास्यादुपांशुः शतउच्यते ॥ सहस्त्रंमानसंप्रोक्तं जि
नसेनादिसूरिभिः ॥ १ ॥ आगेरूपातीतनामाध्यानकास्वरूप-
कहेहैं ॥ गाथा ॥ वण्णरसगंधफासेहिं ॥ वज्जिउणाणंदस-
णसरूउजंफाइजइएवंतंफाणंरूवरहियत्तिः ॥ १ ॥ अहवाआ
गमणोआगमाइभेएहिसुत्तमग्गेणणाऊणभावपूजाका
यव्वादेसविरएहिं ॥ २ ॥ टीका ॥ वर्णरसगंधस्पर्शैः वर्जितो
ज्ञानदर्शनस्वरूपोयत्ध्यायति ॥ एवंतत्ध्यानंरूपरहितमि-
ति ॥ १ ॥ अथवाआगमनोआगमादिभेदैः शास्त्रमार्गेणज्ञा

त्वाभावपूजाकर्त्तव्यादेशविरतेः॥ २॥ अर्थ ॥ वर्णकहिये ने
त्रकाविषयपांच जेस्वेत १ श्याम १ पीत १ रक्त १ हरितएक
१ इनुंपांचूंकरि बहुरिरसकहिये॥ जिव्हाकेविषयजे कटु
क १ मिष्ट १ तिक्त १ आम्ल १ कौसायल इनिपांचकरि॥ बहु
रिगंधकहिये नासिकाकेदोयविधिविषयजे सुगंध दुर्गंध-
करि॥ बहुरिस्पर्शकहिये अष्टप्रकारकेशरीरकाविषयजे-
गुरु १ लघु १ सीत १ उष्ण १ कोमल १ कर्कष १ रुक्ष १ स्निग्ध
१ याकरि १ ऐसेशरीरकैसर्वबीसभेदकरिवर्ज्जितअपनाआ
त्मस्वरूपज्ञानमयीदर्शनमयीकूंजोध्यावै सोरूपातीतना·
माध्यानहै॥ भावार्थ ॥ पुद्गलतैं जुदाअपना आत्मिकस्वरू
पजाणिकरि बहुरिज्ञानदर्शनरूपीध्यावैसोरूपरहितध्या

नहै॥ अथवा आगमनो आगम आदि भेदकुं शास्त्रकै मार्ग क-
रि जानकरि देशव्रती आदगनै भावपूजा करनी ऐसै रूपातीत-
का स्वरूप कह्या॥ इतिरूपातीत तथा भावार्थ पूजा ॥ आगे
पूर्वोक्त छह प्रकारकी पूजाका कथनकुं समुच्चय करि कहिते संते
ताकुं पूर्ण करै हैं॥ गाथा ॥ ऐसा छहविह पूजा एिच्चं धमाणु
रायरत्तेहिं ॥ जहजागेकायव्वा सव्वेहिं मिदेसविरएहिं॥ १॥
टीका ॥ एषषड्विधिपूजानित्यं धर्म्मानुरागरक्तैः पुरुषैः यथा
योग्यं कर्त्तव्या सर्वै देशविरतैः॥ १॥ अर्थ ॥ ऐसै यह छहप्र-
कारकी पूजाकुं धर्म्मानुरागमैं आसक्त होय करि नित्य प्रतिदे
शव्रती श्रावगनै यथायोग्य करनी॥ भावार्थ ॥ पूर्वोक्त ना-
मपूजा १ स्थापनापूजा १ द्रव्यपूजा १ क्षेत्रपूजा १ कालपू

जा १ भावपूजा १ इनिकुंधर्मानुरागतैंदेशव्रतीश्रावकनि-
त्ययथायोग्यकरै ॥ यथायोग्यजोजैसिश्रापकीव्रतीहोयतै
सिप्रकारकी तथायथावसरकीपूजाकरै ॥ बहुरिधर्मानुराग
मैंआसक्तहोयकरिकरैसोयाकैविषैंअत्यंतप्रीतितैंभक्ति
करिकरैयामैंपरमोदकेदूषणनलागैऐसाहोयकरि ॥ ॥
इतिषड्विधिपूजा ॥ आगैपूजाकाफलकावर्णनकरैहै ॥ गा
था ॥ एषारसांगधारिजीहसहस्सेणरुरवरिंदोविपूजाफलें
णसकोणिस्सेसबाणिउज्जह्मा ॥ १ ॥ तह्माहणियसत्तीए ॥ थो
यवयणेणकिंपिवोछामिधम्माणुरायरत्तोभवियज्जणोहो
इजंछ्छो ॥ २ ॥ टीका ॥ एकादशांगधाजिव्हासहस्त्रेणरु
रेंद्रोपिपूजाफलंनशक्नोतिनिशेषवर्णितंयस्यान् ॥ १ ॥ त·

स्मादहंनिजशक्त्यास्तोकवचनेनकिंमापिवक्ष्यामिधर्मानुरा-
गरक्तोयेनभाविकजनोभवतिपलसर्वे ॥२॥ अर्थ ॥ एकादशां
गकापाठीकहिये वाच्यारअंगादिपूर्वोक्तग्यारहअंगकेपाठी-
हजारजिव्हाकरि तथाइंद्रभीपूजासर्वकाफलकुंकहिवेअ
शक्तिहै ॥ यातैंआचार्यकहैहै ॥ हमारिनिजशक्तिकरियोरेव-
चनकरिकेकिंचितकहाकहै ॥ यातैंकिंचितकहैहै ॥ यातैंधर्मा
नुरागाशक्तजोभव्यजनसर्वहिहोय ॥ भावार्थ ॥ग्यारहअंग
केपाठक तथाइंद्रभीपूजाकेफलकुंहजारजिव्हाकरिसंपू
र्णकहिनाशकै ॥ तातैहमकिंचितथोरेवचनकरिकहैहै ॥
सोपृथक्पृथक्कहैहै ॥ गाथा ॥ कुंथुभरिदलमेत्तंजिण
भवणेजोठवेइजिणपडिमंसरिसवमेत्तंपिलहइसोगरोत्ति

स्थयपुएगम् ॥ १॥ टीका ॥ कुंथुंभरिवृक्षस्यपत्रमात्रजिनभव
नेयस्थापयंति जिनप्रतिमां सिद्धार्थमात्रमपिलभंति नरोती
र्थंकरपुण्यं॥ १॥ अर्थ ॥ जोभव्यजीवकुंदुंबरनामा वृक्षकापं
त्रसमानजिनमंदिरवणायकरि ताके विषैं सरस्युं कादाणा॰
बराबरि जिनप्रतिमाकुंस्थापन करैहै सो नरतीर्थंकरका पुण्य
कुंपावैहै ॥ भावार्थ ॥ तीर्थंकरहोयहै ॥ इहांकदुंबरकैप॰
त्रसमान जिनमंदिर तथासरस्युंसमानजिनबिंबकह्या सो
हीएगशक्तिवानकीअपेक्षातैंकह्याहै ॥ यातैंबहुतद्रव्यविनाव
डामंदिर प्रतिमावणाएिसकेनाहिं ॥ तोऐसेतुच्छहीकार्यकरैसो
भीतीर्थंकरपदपावैहै ॥ ऐसेजानिसदैवयामैंनिः प्रमादि॰
रहिएग ॥ अरुचिनलावना ॥ आगेशिखरबंधबडामंदिरकं

रावे ताका फल कहे हैं ॥ गाथा ॥ जे पुण जिणिंद भवणं समु
ण्णयं परिहितोरणसम्मग्गं ॥ णिंमावइ तस्स फलं कासक्कइ
वणिऊं सयलम् ॥ १॥ टीका ॥ यः पुनः जिनेंद्र भवनं समुन्न
न्नं परिधीतोरणेन समग्रं निर्म्मापयति तस्य फलं कः शक्नो-
ति वर्णितुं सकलं ॥ १॥ अर्थ ॥ बहुरि जो भव्यजीव जिनेंद्र
देव का मंदिर कुं शिखरबंध बहुरि परिकमा ॥ बहुरि तोरण
संयुक्त करावे है ॥ ताका संपूर्ण फल कुं कहिवे नें कोण सम
र्थ है ॥ भावार्थ ॥ ताके महा पुण्य फल होय है ॥ ताकुं संपू
र्ण कहिवे कुं केवली विना कोन समर्थ नहि है ॥ आगे पूजा
का फल कुं पृथक् पृथक् करि कहे है ॥ गाथा ॥ जलधारा-
णिक्खवणेण पावमलसोहणं हवेणियसेण ॥ चंदणलेव

णएरो जायइसोहग्गसंपएणो ॥१॥ टीका ॥ जलधारानि
क्षेपणेनपापमलंशोधनंभवेन्नियमेणचंदनलेपेननरोजा
यतेसौभाग्यसंपन्नो ॥१॥ अर्थ ॥ जोनरजिनेंद्रदेवकेबिंब
कैआगेजलकीधारापूजावसरविषेंनिक्षेपेहै तिनिकरिनि·
श्चयकरित्ताकेपापमलकाशोधनहोयहै ॥ भावार्थ ॥ ता·
केपूर्व तथा वर्तमान पापरूपी मलका नाश होयहैं ॥ ऐसै
जलकीधाराकरिपूजाकाफलहैं ॥ बहुरिजोजिनबिंबकेच
रणकमलयुगलउपरिचंदनकालेप करैहै सोनरसौभाग्य
करिसंपन्नहोयहैं ॥ ऐसैचंदनकाविलेपनकाकरिवैकाफ·
लहैं ॥ इनिकाप्रश्नोत्तरपूर्वकियाइहैं ॥ बहुरि ॥ गाथा ॥
जायइअक्खपणिहिरयणसाभिऊअरकणहिंअरकोहो ॥

अरकीएलद्धिजुतोअरकयसोक्खं लपावेइ ॥ १॥ टीका ॥ जायतेक्षयनिधिरत्नानांस्वामीकः अक्षतैः अक्षोभः अक्षीणलब्धियुक्तोक्षयसौख्यंच प्राप्नोति ॥ २॥ अर्थ ॥ बहुरि जोभव्यजिनेंद्रकुं अक्षतनका पुंजकरि पूजैहै ॥ सोनवनिधि चतुर्दशरत्ननिकास्वामीहोयहै ॥ भावार्थ ॥ षट्खंडकास्वामीजोचक्रवर्तीहोयहै ॥ बहुरिअक्षोभकहिये निराकुल-अक्षिणलब्धिकरियुक्त अक्षिणसुखजो मोक्षकेसुखकुं पावैहै ॥ गाथा ॥ कुसुमहिंकुसेसयवयणतरुणिजणणयणकुसुमवरमालावलयेणच्चियदेहो ॥जायइकुसुमाउहोच्चेव ॥ २॥ टीका ॥ कुसुमैः कमलवदनीतरुणीजनानांनयनकुसुमवरमालावलयनिश्चयदेहोजायनेकुसु-

मायुधद्रूशांभवंतु ॥ १ ॥ अर्थ ॥ प्रभुकीपुष्पांकरि पूजाकरे
ताकरि कमलवदनीनरूपीजनकेनेत्ररूपीपुष्पानिकीवर
मालाकरि आवृतदेहकाधारीहोयहै ॥ बहुरिकामदेवका
रूपकाधारीहोयहै ॥ भावार्थ ॥ ताकारूपकुंदेखिकमलव
दनीस्त्रीजनताकुंवरैहै ॥ ऐसेपूर्वोक्तफूलतें पूजाकरे ताके
फलहोयहै ॥ गाथा ॥ जायइणिबिजदाणेणसत्तिगोकं
तितेयसपणो ॥ लावणजलहिवेलातरंगसंपावीयसरी
रो ॥ १ ॥ टीका ॥ जायतेनैवेद्यदानेनशक्तिवंतःकांतितेजस्वी
संप्राप्तिलावण्यजलधिवेलातरंगेणपवित्रशरीरो ॥ १ ॥
अर्थ ॥ प्रभुकेआगेनैवेद्यदानकादेवाकरि पुरुषशक्तिवं- ९३
तहोयहै ॥ बहुरिकांतिवान तेजस्वी होयहै ॥ बहुरिलावण्य

नाकासमुद्रकीवेलातरंगसमानशरीरकुंपावैहैं ॥ ऐसापूर्वो
क्तनैवेद्यसूं पूजाकरैनाकेफलहोयहै ॥ गाथा ॥ दिवेहिंदी
वयासेसंजीवदव्वाइतच्चसब्भावोसब्भावजाणियकेवलपद
वतेएणहोइणरो ॥ १ ॥ टीका ॥ दीपकैर्दीपितम्अशेषजी
वद्रव्यादिकानितत्वसद्भावासद्भावजनीतकेवलप्रदीपतेए
नभवतिनरो ॥ १ ॥ अर्थ ॥ प्रभुकुंदीपकरिपूजैहैनाकेसम
स्तदिशाजोदिशाविषेउद्योतरूपदीप्तरिधिकाधारीश
रीरसंदरहोयहै ॥ बहुरिजीवद्रव्यअरसमतत्वनिकाउद्योत
काकारणहोयहै ॥ बहुरिशुद्धस्वभावकरिकेवलज्ञानकुंउ
पायताकरिप्रकाशरूपहोयहै ॥ सोऐसापुरुषदीपपूजाके
फलतैंजाननना ॥ भावार्थ ॥ साक्षात्केवलज्ञानीतीर्थंकर

होयहै ॥जाकरिसर्वतीनलोककेविषैचराचरपदार्थनिकुंप्र
पदेखैहै॥सोदीपककापूजबैतैऐसाफलहैं॥ गाथा ॥ गि
रेणसिसिरपरधवलकितिधवलीयजयतउपुरिसोजाइफलो
हिंसपत्तपरअणिव्वाणसोरवफलो ॥२॥ टीका ॥ धूपेणसि
सिरतरधवलकीर्तिधवलितजगत्त्रयःपुरुषः जायते फलैः सं
प्रातपरमनिर्वाणस्फरवफलं॥२॥ अर्थ ॥ प्रभुकेआगेधूपकुं
प्रज्वल्यकरिपूजैहै॥ताकरिचंद्रमासमानअतिउज्जलकीर्ति
करिधवलितकीयाहै तीनलोकजानेऐसापुरुषहोयहै ॥बहु
रिफलकाचढावेकरिपरमनिर्वाणस्फरवफलकुंपावैहै ॥ भावा
र्थ ॥ मोक्षपरमस्फरवांकुंपावैहै॥ गाथा ॥ घंटाहिंघंटसदाउ
॥लेस्फएव्वरछराणमऊम्मि ॥ संकीडइस्फरसंघायसोविउवर

विमाणेसु ॥ १॥ टीका ॥ घंटादिभिः घंटाशब्दाकुलेषु प्रवर अप्सराणांमध्येसंक्रीडयतिसुरसंघातसविनः वरविमानेषु ॥ १॥ अर्थ ॥ जोप्रभुकेमंदिरमेंघंटादेवेहैं ताकाफलकरि घंटाकेशब्दकेंविषैंव्याप्त बहुरिसुंदरअप्सरांकावृंदकेमध्य मैं॥ बहुरिदेवांकेसमूहकरिसेवितश्रेष्ठविमानकेविषैंक्रीडा करैहैं॥ गाथा ॥ छत्तेहिंएयछत्तंभुंजइपुहाविसवत्तपरिही- णो॥ चामरदाणेणतहांविज्जिज्जइचमरणिवदेहिं॥ १॥ टीका ॥ छत्रदानेनैकछत्राधिपत्यंभुंजयतिपृथ्वीशत्रुपरिर- हितचामरदानेनतथाढोलमानेसुतिनृपदेहिं॥ १॥ अर्थ ॥ बहुरिछत्रदानकादेवेकरिनृपतिहोयहैं॥ १॥ भावार्थ ॥ छत्र करितोनाकेशरीरऊपरिछत्रफिरैहै ॥ अरचमरकरिताकेच-

म॰ म॰ मरदुलेहैसोराजाहोयहै ॥गाथा ॥ अहिसेयफलेणणरो॥ खंड

९५ अहिसिंचिज्जइसुदंसणस्सुवरिंखीरोयजलेणसुरिंदप्पमु
हदेवेहिंभत्तीए ॥१॥ टीका ॥ अभिषेकफलेननरोभिषेकं-
प्राप्नोतिसुदर्शनमेरोपरिक्षीरजलेनसुरेंद्रप्रमुखदेवैर्भक्त्या
॥१॥ अर्थ ॥ बहुरिप्रभुकौजलादि पंचामृतकरिअभिषेक
करैताकाफलकरिपुरुषहै ॥ सोसुदर्शनमेरुऊपरिदेवनि
काइंद्रआदिदेवांकरिभक्तिपूर्वकक्षीरसागरकाजलकरि-
अभिषेककुंपावैहै॥ ऐसाजिनस्नपनकाफलहै॥ भावा
र्थ ॥ तीर्थंकरहोयहै ताकाजन्मसमय इंद्रादिकदेव मेरु
परिअभिषेककरैहै ॥ गाथा ॥ विजयपडाएणाहिणरोसंग्रा ९६
ममुहे सुविजइउहोइ ॥ छखंडविजयणाहोणिप्पडिवखो

जसस्वीय ॥ १ ॥ टीका ॥ विजयपताकाध्वजैः नरोसंग्रामसु
खेषुविजयोभवतिषट्खंडविजयनाथोनिःप्रतिपक्षोयश-
स्वीच ॥ १ ॥ अर्थ ॥ बहुरिप्रभुकेमंदिरविजयपताकाकहि
येध्वजादेवैहैं ताकरिमनुष्यहैसो संग्रामकेमुखविषैताकी
विजयहोयहै ॥ बहुरिछहखंडकोविजयनाथजोचक्रवर्ती
पदकुंपावैहै ॥ बहुरिप्रतिपक्षजोशत्रुरहितयशस्वीहोयहै
॥ बहुरिऔरभीअनेकगुणहोयहैं ॥ गाथा ॥ किंजपिएग-
णबहुणातीस्कविलोएस्ककिंपिजंसोरवं ॥ पूजाफलेणसव्वं
याविज्जइणत्थिसंदेहो ॥ १ ॥ टीका ॥ किंजल्पतेनबहुनात्रि
ष्वपिलोकेषुकिमपियत्स्फरवंतत्सर्वंपूजाफलेणप्राप्नोतिना-
स्तिसंदेहो ॥ १ ॥ अर्थ ॥ इहांआचार्यकहेहैं ॥ बहुकहिवे

करिकहाजोतीनलोकविषैंजोजोसुखहै सोसर्वपूजाकाफ
लकरिपावैहैं यहनिःसंदेहहैं॥ ऐसेपूजाकाफलकास्वरू
पहैं॥ इतिपूजाफलंसमाप्तम्॥ ॥छ॥ ॥छ॥
॥ ॥ इतिमनोमतिखंडनग्रंथसमाप्तः॥ ॥ ॥

जैनदिगंबरआमनायमे केताकग्रहस्ती भोगी पाप अपराध विषयभोग तो छोडते नहीं अर भोगी ग्रहस्तीका दर्जामे दीप धूप चंपा चमेली मोगरादिकसें पूजन करना दिगंबर आचार्य उपदेशग्रंथांमैं जैनपुराणमैं लिखगये ताकुं मूरखमनोमति नमानतेसंते कहतेहै के जिनमूर्तिकेचरणांकुं केशर नहीं लगा वणा दही दूधका अभिषेक नहीं करणा हरयाफल फूल नहींच

ढावना इत्यादिक बहुत कल्पना मूरख लोग करनाहे ताका समा
धान के अर्थ यह पुस्तक मुंबई मे पंडित श्रीधर शिवलालजी के
ज्ञानसागर छापखानामें पंडित मन्नालालजी मानपुरवालेनें-
छपवाय कर प्रसिद्ध कियाहैं॥ ॥संवत् १९४२ शक १८०७
मिति आश्विन शुक्ल १० रविवार ता० १७ अक्टोबर स० १८८५